हिन्दुस्तान एक्सप्रेस समूह

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

मध्यप्रदेश राजस्थान हरियाणा छत्तीसगढ़ महाराष्ट्र से प्रकाशित

डाक पंजीयन क्रं. 173/15-17 | 5 | 19 एशिया कप-13 साल के वैभव ने 6 छक्के लगाए, आईपीएल में | सम्पादकीय | अब और बढ़ेगी महंगाई की मार | पाकस्तिान टीम ने पहली बार ब्लाइंड | 5

वर्ष 16 अंक 307 | E-mail: dholpur@hotmail.com | धौलपुर, गुरूवार 05 दिसम्बर 2024 | ई-पेपर के लिए लॉगऑन करें -www.hindustanexpress.online | मूल्य 2.00 रुपया, पृष्ठ 8

महाराष्ट्रः महायुति ने सरकार बनाने का दावा पेश किया, फडणवीस होंगे अगले मुख्यमंत्री

शिंदे- पवार डिप्टी सीएम, आज होगा शपथ ग्रहण समारोह

आर.एन.एस.

नई दिल्ली। देवेंद्र फडणवीस महाराष्ट्र के अगले मुख्यमंत्री होंगे। फडणवीस ने शिवसेना नेता एकनाथ शिंदे, एनसीपी नेता अजित पवार के साथ राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन के सामने सरकार बनाने का दावा पेश किया। इस दौरान भाजपा के ऑब्जर्वर्स विजय रूपाणी और निर्मला सीतारमण भी मौजूद थे। इसके बाद फडणवीस, शिंदे और पवार ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस की। फडणवीस और शिंदे दोनों ने कहा कि कितने और कौन-कौन मंत्री शपथ लेंगे, इसकी जानकारी दे दी जाएगी। शपथ ग्रहण का कार्यक्रम कल 5.30 बजे आजाद मैदान में होगा। फडणवीस ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी की मौजूदगी में यह कार्यक्रम होगा। मीडिया ने सवाल पूछा कि शिंदे और पवार डिप्टी सीएम की शपथ लेंगे। इस पर अजित पवार ने कहा- कोई ले रहा है, या नहीं, ये अलग बात है। इन लोगों का शाम तक तय होगा पर मैं तो कल शपथ ले रहा हूं यह तय है। इस पर शिंदे ने कहा कि अजित दादा को दिन में और शाम को शपथ लेने का अनुभव है। देवेंद्र फडणवीस ने कहा- हम तीनों नेता एक हैं। और कौन-कौन शपथ लेगा, ये शाम तक बता दिया जाएगा। मैंने एकनाथ जी से सरकार में शामिल होने और डिप्टी सीएम बनने का अनुरोध किया था। एकनाथ शिंदे ने कहा- मुझे क्या मिल रहा है, यह सवाल ही नहीं था। हमारे मन में सिर्फ यह भावना थी कि महाराष्ट्र को क्या मिला। इसी पर हमने काम किया। महायुति में कोई ऊंच-नीच नहीं है। सब ठीक है। इससे पहले भाजपा विधायक दल की बैठक में देवेंद्र फडणवीस को नेता चुना गया। इसके बाद फडणवीस मुख्यमंत्री आवास वर्षा पहुंचे, यहां शिंदे और पवार के साथ बातचीत की। सूत्रों के मुताबिक यहां मंत्रियों के नामों पर चर्चा हुई। शाम तक नाम भी सामने आ जाएंगे। एकनाथ शिंदे ने कहा, हमने वादा किया था कि जो भी फैसला लिया जाएगा, उसका मैं समर्थन करूंगा। मैंने वही किया है। महायुति को इतना बड़ा बहुमत कभी नहीं मिला था, ये ऐतिहासिक है। बहनों-भाइयों का धन्यवाद। मुझे क्या मिला ये सवाल नहीं है, महाराष्ट्र को क्या मिला, यही भावना हमारे मन में थी। महायुति में कोई ऊंच-नीच नहीं है। फडणवीस घर आए, ये उनका बड़प्पन है। कौन और कितने मंत्री शपथ लेंगे, इसकी जानकारी में शाम को दूंगा।

राहुल-प्रियंका संभल नहीं जा सके, गाजीपुर बॉर्डर से लौटे

आर.एन.एस.

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता राहुल गांधी और प्रियंका गांधी बुधवार को उत्तर प्रदेश के संभल नहीं जा सके। यहां उन्हें हिंसा में मारे गए लोगों के परिजन से मिलना था। यूपी पुलिस ने उनके काफिले को गाजीपुर बॉर्डर पर रोक लिया। इससे दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेस-वे पर 4 घंटे तक 5 किमी लंबा जाम लगा रहा। हालांकि, राहुल-प्रियंका यहां 3 घंटे ही रुके थे। जाम की वजह से ट्रैफिक में फंसे लोग नाराज हो गए। उनकी कांग्रेस कार्यकर्ताओं से झड़प हुई। लोगों ने कांग्रेस कार्यकर्ताओं को पीट दिया।

इससे पहले राहुल ने भी अफसरों से बातचीत की। कहा- मैं पुलिस की गाड़ी में अकेले जाने को तैयार हूं। लेकिन अफसर राजी नहीं हुए। राहुल हाथ में संविधान लेकर कार पर चढ़ गए। मीडिया को संबोधित किया। इसके बाद राहुल-प्रियंका दिल्ली लौट गए। उन्होंने कहा- अब 6 दिसंबर को संभल जाएंगे। संभल में कोर्ट के आदेश पर 24 नवंबर को जामा मस्जिद का सर्वे किया जा रहा था। इस दौरान हिंसा भड़क गई थी, जिसमें गोली लगने से चार युवकों की मौत हो गई थी। इससे पहले, शनिवार को सपा और रविवार को कांग्रेस के डेलिगेशन ने भी संभल जाने का ऐलान किया था। हालांकि, पुलिस ने जगह-जगह घेराबंदी करके किसी को संभल नहीं जाने दिया।

पंजाब : पूर्व डिप्टी सीएम सुखबीर बादल पर फायरिंग, बाल-बाल बचे

गोल्डन टेंपल के बाहर सेवा कर रहे थे, हमलावर खालिस्तानी आतंकी गिरफ्तार

आर.एन.एस.

अमृतसर। अमृतसर स्थित गोल्डन टेंपल में बुधवार को पंजाब के पूर्व डिप्टी सीएम सुखबीर सिंह बादल पर खालिस्तानी आतंकी ने फायरिंग की। सुखबीर बादल गोल्डन टेंपल के गेट पर सेवादार बनकर बैठे थे। डेरा सच्चा सौदा के मुखी राम रहीम को माफी देने को लेकर सिखों की सर्वोच्च अदालत अकाल तख्त ने उन्हें यह सजा दी है। वारदात के वक्त हमलावर ने जैसे ही उन पर गोली चलाई, उसी समय सिविल वर्दी में तैनात उनके सुरक्षाकर्मियों ने उसका हाथ पकड़कर ऊपर उठा दिया। जिससे गोली गोल्डन टेंपल की दीवार पर जा लगी। इससे सुखबीर बादल बाल-बाल बच गए। इसके बाद हमलावर ने भागने की कोशिश की, लेकिन पुलिसकर्मियों ने उसे पकड़ लिया। सुखबीर बादल को तुरंत सुरक्षा घेरे में ले लिया गया। गोल्डन टेंपल के बाहर भी सुरक्षा कड़ी कर दी गई है।

सुखबीर पर हमला करने वाला आरोपी गुरदासपुर के डेरा बाबा नानक का रहने वाला नारायण सिंह चौड़ा है। वह सिख संगठन दल खालसा का मेंबर है। वारदात के बाद पुलिस कमिश्नर गुरप्रीत भुल्लर गोल्डन टेंपल पहुंचे। उन्होंने बताया कि आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है और उससे पूछताछ की जा रही है। पुलिस सूत्रों के अनुसार चौड़ा ने बयान दिया कि सुखबीर बादल पर बेअदबी और डेरा मुखी राम रहीम को माफी दिलाने के आरोप थे। इसी से हताहत होने के बाद उसने ये कदम उठाया। अकाली नेता डॉ. दलजीत चीमा ने कहा कि गुरदासपुर से कांग्रेस सांसद सुखजिंदर रंधावा का साथी मार्केट कमेटी का चेयरमैन है। गोली चलाने वाला व्यक्ति चेयरमैन के साथी का भाई है।

दिल्ली में कानून व्यवस्था बदतर, राजधानी पर अपराधियों का कब्जा - केजरीवाल

आर.एन.एस.

नई दिल्ली। दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने विधानसभा में दिल्ली की कानून व्यवस्था का मुद्दा उठाया। उन्होंने कहा कि दिल्ली की कानून व्यवस्था बदतर हो चुकी हैं। दिल्ली पर अपराधियों का कब्जा है। यहां जगह-जगह पर नशा बिक रहा है। सरेआम मर्डर हो रहे हैं। सरेआम शूटआउट हो रहे हैं। महिलाओं से दुष्कर्म हो रहे हैं। भाजपा इसपर चुप है। जब इनसे पूछा जाए तो कहते हैं कि क्राइम मुद्दा ही नहीं है। आप के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने कहा, आज पंजाब में एक घटना घटी, पूर्व उपमुख्यमंत्री सुखबीर बादल पर किसी ने गोली चलाने की कोशिश की लेकिन पंजाब पुलिस की सतर्कता के कारण एक बड़ा हादसा टल गया। सुखबीर बादल सुरक्षित हैं। मैं इस घटना की निंदा करता हूं लेकिन एक बात साफ है कि पंजाब और पंजाबियों को बदनाम करने की एक बड़ी साजिश रची जा रही है और इसके पीछे कई बड़ी ताकतें शामिल हैं। आज जिस तरह से पंजाब पुलिस ने न सिर्फ इस घटना को रोका बल्कि पूरे देश के सामने एक उदाहरण पेश किया कि कैसे सतर्कता के साथ कानून व्यवस्था को बनाए रखा जा सकता है। केजरीवाल ने कहा कि दिल्ली में महिलाएं असुरक्षित हैं। गैंगस्टर व्यापारियों की दुकानों पर गोलियां बरसा रहे हैं। भाजपा को यह नहीं दिखता, कहते हैं अपराध दिल्ली में कोई मुद्दा नहीं हैं। गृह मंत्री अमित शाह को दिल्ली की चिंता नहीं है। आज सुबह दिल्ली में ट्रिपल मर्डर हुआ है। मैं पूछना चाहतू हूं कि क्या एक आम आदमी की सुरक्षा मायने नहीं रखती। मैं भाजपा को कहना चाहता हूं कि आप चाहे मेरे ऊपर कितने भी हमले कर लो। मैं दिल्ली की सुरक्षा व्यवस्था का मुद्दा उठाता रहूंगा।

चूरू : कैंटर और टाटा सफारी में जोरदार टक्कर,पांच लोगों की मौत

आर.एन.एस.

चुरू । चुरू जिले की सरदारशहर तहसील के बुकनसर फंटा के पास कैंटर और टाटा सफारी गाड़ी के बीच जोरदार टक्कर हो गई। इस हादसे में पांच लोगों की मौत हो गई और दो गंभीर रूप से घायल हो गए।

दोनों घायलों को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। यह हादसा रात तीन बजे हनुमानगढ़ रोड मेगा हाईवे पर बुकनसर फंटा के पास हुआ। टाटा सफारी हनुमानगढ़ की तरफ जा रही थी और हनुमानगढ़ की तरफ से कैंटर आ रहा था, दोनों की आमने-सामने से जोरदार भिड़ंत हो गई। टक्कर इतनी जोरदार थी कि टाटा सफारी के परखच्चे उड़ गए। सूचना मिलने पर मौके पर पुलिस ने क्रेन बुलाई व सफारी में फंसे दो लोगों को बड़ी मशक्कत के बाद निकला गया। सरदारशहर थाना के अधिकारी अरविंद भारद्वाज ने अपनी खुद की गाड़ी में बिठाकर घायलों को अस्पताल पहुंचाया, जहां चार लोगों को मृत घोषित कर दिया गया। वहीं तीन गंभीर घायलों को बीकानेर रेफर किया गया, जहां बीच रास्ते में ही एक व्यक्ति ने दम तोड़ दिया। हादसे में कुल पांच लोगों की मौत हुई है। वहीं दो लोग घायल हैं, जिनका इलाज राजकीय अस्पताल में चल रहा है। पुलिस ने शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। मृतकों में राणासर बिकान निवासी कमलेश (26), डूंगरगढ़ के रीड़ी निवासी नंदलाल (23), राकेश (25), राजासर बिकान के पवन (33) और सीकर निवासी धनराज शामिल हैं।

किसानों से किए वादे क्यों नहीं निभाए, हम कुछ नहीं कर रहे - जगदीप धनखड़

उपराष्ट्रपति ने केंद्रीय कृषि मंत्री से किये सवाल

आर.एन.एस.

नई दिल्ली। किसान आंदोलन को लेकर उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने सीधे कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान से कई सवाल किए। उन्होंने शिवराज की ओर इशारा करते हुए कहा, कृषि मंत्री जी, आपका एक-एक पल भारी है। मेरा आपसे आग्रह है और भारत के संविधान के तहत दूसरे पद पर विराजमान व्यक्ति आपसे अनुरोध कर रहा है कि कृपया करके मुझे बताइए कि किसान से क्या वादा किया गया था? और जो वादा किया गया था, वह क्यों नहीं निभाया गया? वादा निभाने के लिए हम क्या कर रहे हैं? बीते साल भी आंदोलन था, इस साल भी आंदोलन है। कालचक्र घूम रहा है। हम कुछ नहीं कर रहे हैं। धनखड़ ने मुंबई में केंद्रीय कपास प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान के शताब्दी समारोह के में ये बातें कहीं। कार्यक्रम में शिवराज भी मौजूद थे। हालांकि, उन्होंने उपराष्ट्रपति के सवालों का जवाब नहीं दिया। शिवराज ने कहा- भारत अपने किसानों के बिना समृद्ध देश नहीं बन सकता।

पहली बार मैंने भारत को बदलते हुए देखा है। पहली बार मैं महसूस कर रहा हूं कि विकसित भारत हमारा सपना नहीं लक्ष्य है। दुनिया में भारत कभी इतनी बुलंदी पर नहीं था। जब ऐसा हो रहा है तो मेरा किसान परेशान और पीड़ित क्यों है? यह समय मेरे लिए कष्टदायक है, क्योंकि मैं राष्ट्रधर्म से ओतप्रोत हूं। दुनिया में हमारी साख पहले कभी इतनी नहीं थी, भारत का प्रधानमंत्री आज विश्व के शीर्ष नेताओं में गिना जाता है। मोदी ने दुनिया को संदेश दिया है कि समाधान केवल बातचीत से ही निकल सकता है। ऐसे में किसानों की समस्या दूर की जाए। विकसित राष्ट्र का दर्जा पाने के लिए प्रत्येक नागरिक की आय में आठ गुना वृद्धि करनी होगी। कौन हैं वो लोग जो किसानों को कहते हैं कि उसके उत्पाद का उचित मूल्य दे देंगे? मुझे समझ नहीं आता कि कोई पहाड़ गिरेगा। किसान अकेला है, जो असहाय है।

महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़ सहित 4 राज्यों में भूकंप, 5.3 रही तीव्रता

आर.एन.एस.

मुम्बई। महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, तेलंगाना और आंध्र प्रदेश के कई हिस्सों में बुधवार सुबह भूकंप के झटके महसूस किए गए हैं। नेशनल सेंटर ऑफ सीस्मोलॉजी के मुताबिक रिक्टर स्केल पर भूकंप की तीव्रता 5.3 मापी गई। झटके सुबह 07.27 बजे महसूस किए गए। भूकंप का केंद्र जमीन से 40 किलोमीटर नीचे रहा। भूकंप के झटके 15 से 20 सेकंड तक लगे। शुरुआती जानकारी के हिसाब से भूकंप में जान-माल का नुकसान नहीं हुआ है। झटके महाराष्ट्र के नागपुर, चंद्रपुर और गढ़चिरौली और छत्तीसगढ़ के बीजापुर, सुकमा और दंतेवाड़ा में महसूस किए गए।

इसके अलावा तेलंगाना और आंध्र प्रदेश के मुलुग, हैदराबाद, रंगारेड्डी,भद्राद्री कोठागुडेम, खम्मम और कृष्णा जिलों में भी लोगों ने भूकंप के झटके महसूस किए। भूकंप के चलते कई घरों की दीवारों में दरारें आ गईं। लोगों ने घरों से बाहर, खुले मैदान में आकर खुद को सुरक्षित किया।

6000 करोड़ का घोटाला कर गुजरात की कंपनी फरार हुई, क्रिकेटरों का भी करोड़ों रुपये था निवेश

छापे से पहले ही पासपोर्ट लेकर फरार हो गया था झाला

आर.एन.एस.

राजकोट। गुजरात और राजस्थान में करीब 6 हजार करोड़ रुपए का घोटाला कर रफूचक्कर हुई गुजरात की बीजेड फाइनेंस कंपनी का सीईओ भूपेंद्र सिंह झाला फरार है। गुजरात और राजस्थान के उसके सभी ऑफिसों में ताला लटका है। अब सीआईडी क्राइम ब्रांच की जांच में कंपनी के धोखे का शिकार होने वाले निवेशकों के नाम भी सामने आने लगे हैं।

इनमें सेवानिवृत्त अधिकारी/कर्मचारी और बिजनेसमैन ही नहीं, बल्कि देश के जाने-माने क्रिकेटर्स के नाम भी शामिल हैं। सीआईडी क्राइम ने जब निवेशकों की सूची की जांच की तो उसमें क्रिकेटर शुभमन गिल, राहुल तेवतिया, मोहित शर्मा समेत पांच क्रिकेटरों के नाम भी मिले हैं।

इन क्रिकेटर्स ने भी पैसे डबल करने के लिए कंपनी में दस लाख से एक करोड़ रुपए तक का निवेश किया था। इस बारे में जब सीआईडी के प्रमुख डॉ. एस राजकुमार पंड्या से पूछा गया तो उन्होंने जवाब देने से इनकार कर दिया। हालांकि, नाम न बताने की शर्त पर सीआईडी क्राइम के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने इन पांच क्रिकेटरों के नाम की पुष्टि करते हुए कहा कि इनके साथ भी धोखा हुआ है। पुलिस का कहना है कि बीजेड ग्रुप के लिए नवंबर महीने का ब्याज चुकाने का समय आ गया है। हालांकि, कंपनी के संचालक फरार हैं और सभी ऑफिसेज भी बंद हैं तो यह तय है कि निवेशों को इस महीने का ब्याज नहीं मिलेगा। इसलिए बड़ी संख्या में लोग सामने आएंगे। अब तक पुलिस को अलग-अलग जगहों से निवेशकों का जो ब्योरा मिला है, उसके मुताबिक देशभर से 14 हजार लोगों ने भूपेन्द्र सिंह झाला की बीजेड फाइनेंस कंपनी में निवेश किया है।

सूत्रों का कहना है कि छापेमारी से पहले ही भूपेन्द्र सिंह अपना पासपोर्ट लेकर फरार हो गया था। सीआईडी प्रमुख ने आरोपी के फरार होने की बात पर अधिकारियों को फटकार भी लगाई गई थी। बीजेड ग्रुप घोटाले की जांच कर रहे एक आईपीएस ने बताया कि भूपेन्द्रसिंह पासपोर्ट लेकर भले ही फरार हो गया हो, लेकिन उसने भारत नहीं छोड़ा है। हमने देश के सभी इंटरनेशनल हवाई अड्डों से डिटेल मांगी है, लेकिन उसके देश छोड़ने की रिपोर्ट नहीं मिली है। जल्द ही उसे गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

राजस्थान में 3 डिग्री तक पारा गिरेगा

हिमाचल में नदियों के साथ नल भी जमे

आर.एन.एस.

जयपुर। मौसम विभाग के अनुसार, अगले तीन-चार दिनों तक राजस्थान के अलावा उत्तर भारत के कई राज्यों में रात के तापमान में गिरावट आएगी। इससे कड़ाके की ठंड पड़ सकती है। पहाड़ों से आ रही हवाओं ने भी उत्तर भारतीय राज्यों में ठिठुरन बढ़ा दी है। राजस्थान के सीकर में मंगलवार को न्यूनतम तापमान 9 डिग्री दर्ज हुआ। राज्य के ही करौली, बारां, चूरू, चित्तौड़गढ़ में न्यूनतम तापमान 10 डिग्री रहा। अगले कुछ दिनों में राज्य के अधिकतर हिस्सों का तापमान 2 से 3एष्ट डिग्री तक गिरने की संभावना है।

हिमाचल प्रदेश में कुल्लू और लाहौल स्पीति की ऊंची चोटियों पर मंगलवार को भी रुक-रुक कर बर्फबारी का दौर जारी रहा। इस कारण राज्य के कल्पा में न्यूनतम तापमान -1एष्ट रिकॉर्ड किया गया। तापमान गिरने से झरनों, नदी-नालों के साथ अब नल भी जमने लगे हैं। बीते दिन शिमला सहित कई अन्य इलाकों में मौसम साफ रहा। इससे अधिकतम तापमान में कुछ बढ़ोतरी भी दर्ज हुई। मौसम विभाग ने बुधवार से 7 दिसंबर तक प्रदेश में सभी जगह मौसम के साफ रहने का पूर्वानुमान जारी किया है। हालांकि, प्रदेश के मैदानी इलाकों में कोहरा रहेगा।

104 साल का बुजुर्ग 36 साल बाद जेल से छूटा,

कोलकाता। पश्चिम बंगाल में 104 साल के बुजुर्ग 36 साल जेल की सजा काटने के बाद रिहा हुए हैं। 29 नवंबर को सुप्रीम कोर्ट से जमानत मिलने के बाद रसिक चंद्र मंडल मंगलवार (3 नवंबर) को मालदा करेक्शनल होम से बाहर आए। उन्हें 1988 में भाई की हत्या के आरोप में न्यायिक हिरासत में भेजा गया था। 1994 में ट्रायल कोर्ट ने उन्हें दोषी करार करते हुए उम्रकैद की सजा सुनाई थी। मंडल ने अपने जीवन के आखिरी दिन परिवार के साथ बिताने के लिए रिहाई की मांग की थी। जेल से बाहर निकलकर उन्होंने कहा कि वह जिंदगी के बचे हुए दिन बागवानी और पौधों का ध्यान रखने में बिताएंगे। मालदा के रहने वाले रसिक चंद्र मंडल ने जमीनी विवाद के चलते भाई की हत्या की थी। 1988 में 68 साल की उम्र में उन्हें ज्यूडिशियल कस्टडी में भेजा गया। 1994 में ट्रायल कोर्ट ने दोषी पाते हुए उन्हें उम्रकैद की सजा सुनाई। मंडल ने ट्रायल कोर्ट के फैसले के खिलाफ हाईकोर्ट में अपील की। 2018 में हाईकोर्ट ने ट्रायल कोर्ट के फैसले को बरकरार रखा।

दक्षिण कोरिया में राष्ट्रपति ने 6 घंटे में ही वापिस लियो मार्शल लॉ

सेना संसद घेरने पहुंची, लेकिन तब तक सांसद वोटिंग कर चुके थे

आर.एन.एस.

सिओल। साउथ कोरिया के राष्ट्रपति यून सुक योल ने देश में मार्शल लॉ लगाने का आदेश वापस ले लिया है। राष्ट्रपति ने 3 दिसंबर की शाम 7 बजे (भारतीय समय के मुताबिक) मार्शल लॉ लगाने की घोषणा की थी, जिसके बाद देशभर में विरोध प्रदर्शन होने लगे थे और अराजकता की स्थिति पैदा हो गई थी।

इसी बीच देश की नेशनल असेंबली में मौजूद 190 सांसदों ने सर्वसम्मति से इस फैसले पलट दिया, जिसके बाद राष्ट्रपति मार्शल लॉ को हटाने का वादा किया था। 6 घंटे बाद (रात 1 बजे) ही दक्षिण कोरिया में मार्शल लॉ हटा दिया गया। मार्शल लॉ के आदेश को हटाने के कुछ घंटों बाद ही दक्षिण कोरिया में विरोध प्रदर्शन शुरू हो गए हैं। प्रदर्शनकारी राष्ट्रपति यून सुक योल के इस्तीफे की मांग कर रहे हैं। साउथ कोरिया के 6 विपक्षी पार्टियों ने मिलकर बुधवार को राष्ट्रपति यून सुक योल के खिलाफ महाभियोग प्रस्ताव पेश किया है। विपक्षी पार्टी ह्यक्रा ने कहा कि शुक्रवार या फिर शनिवार को इस पर वोटिंग होगी।

दक्षिण कोरिया की संसद में राष्ट्रपति के खिलाफ महाभियोग चलाने के लिए दो-तिहाई यानी कि 200 वोटों की जरूरत होती है। फिलहाल विपक्षी पार्टियों के पास कुल 192 सीटें हैं। ऐसे में जब तक सत्ताधारी पार्टी के कुछ सांसद राष्ट्रपति के खिलाफ वोटिंग नहीं करते, महाभियोग चलाना मुश्किल है।

स्कूल आउटरिच प्रोग्राम में केवीजीआईटी की छात्राओं ने किया जागरुक

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर । खण्डेलवाल वैश्य गर्ल्स इंस्टीटयूट ऑफ टैक्नोलॉजी, वैशाली नगर जयपुर की छात्राओं द्वारा स्कूल आउटरिच प्रोग्राम के तहत बुधवार को तीन विद्यालयों में छात्र छात्राओं को एडस के प्रति जागरुक किया। रेड रिबन क्लब के राज्य स्तरीय एडस अवेयरनेस प्रोग्राम के तहत महाविद्यालय की छात्राओं ने मूक अभिनय के जरिए एडस बीमारी से बचाव और लक्षणों को प्रदर्शित किया। ब्राइटसन स्कूल झोटवाडा, श्री श्याम विद्यापीठ करणी विहार, निशी विद्या मंदिर हीरापुरा में यह जागरुकता कार्यक्रम रखा गया। इस कार्यक्रम के जरिए किशोरावस्था के युवाओं को जागरुक करने के लिए रंगोली और पोस्टर प्रतियोगिता भी केवीजीआइटी की ओर से कराई गई और सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र और विजेताओं को मेडल दिए गए। कॉलेज प्राचार्य डॉ अंजु गुप्ता ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि भारत युवाओं का देश है और एडस एक गंभीर बीमारी है जो कि युवाओं में ज्यादा देखी जाती है। ऐसे में जानकारी ही बचाव है। इस दौरान विभिन्न स्कूलों के प्रधानाचार्यों ने आरआरसी और महाविद्यालय की पहल को बच्चों को लाभदायक बताया।

वी ने राजस्थान के 33 से अधिक ज़िलों में उपभोक्ताओं के नेटवर्क अनुभव को बनाया बेहतर

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर । उपभोक्ताओं को उत्कृष्ट इंडोर कवरेज और फास्ट डेटा स्पीड का अनुभव प्रदान करने के लिए 400 से अधिक साईट्स पर 900 MHz, 2100 MHz और 1800 MHz में नेटवर्क अपग्रेड को सफलतापूर्वक पूरा करने की घोषणा की कंपनी राज्य में 6500 से अधिक साईट्स में 4G कवरेज और क्षमता में निवेश करेगी

जाने-माने दूरसंचार सेवा प्रदाता वी ने आज राजस्थान में अपने नेटवर्क के विस्तार की घोषणा की है। कंपनी ने बताया कि इसने विभिन्न स्पैक्ट्रम बैण्ड्स पर सफलतापूर्वक नेटवर्क अपग्रेड कर लिया है, जिसमें 4000 से अधिक साईट्स पर 900 MHz, 2100 MHz और 1800 MHz शामिल है, इसके साथ अब वी के यूज़र और भी फास्ट डेटा स्पीड एवं उत्कृष्ट इंडोर नेटवर्क का अनुभव पा सकते हैं। कपंनी राज्य के 6500 से अधिक साईट्स को अपग्रेड करने के लिए आगे भी निवेश जारी रखेगी।

वी ने अपने 4जी नेटवर्क को बेहतर बनाने की व्यापक योजनाओं के तहत यह विस्तार किया है। कंपनी ने जयपुर, सीकर, नागौर, अजमेर, जोधपुर, चुरू, गंगानगर, भरतपुर, कोटा, दौसा, उदयपुर, अलवर और चित्तौड़गढ़ सहित राजस्थान के 33 से अधिक ज़िलों में 4G क्षमता में 36 फीसदी बढ़ोतरी की है। हाल ही में वी ने राजस्थान में अपना रीटेल फुटप्रिन्ट बढ़ाते हुए 22 वी स्टोर्स, 68 वी शॉप्स और 103 वी मिनी स्टोर्स के माध्यम से अपनी मौजूदगी को सशक्त बनाया है। राज्य में इसके व्यापक वितरण नेटवर्क में अब 675 से अधिक डिस्ट्रीब्यूटर्स और 36000 से अधिक रीचार्ज आउटलेट्स शामिल हैं। देश भर में 4G नेटवर्क को बेहतर बनाने के प्रयास परिणाम देने लगे हैं, ओपनसिगनल की रिपोर्ट में यह तथ्य सामने आया है। 4G नेटवर्क एक्सपीरिएंस रिपोर्ट के मुताबिक वी देश भर में 4G नेटवर्क अनुभव में लीडर के रूप में उभरा है। यह देश भर में छह कैटेगरीज़ में विजेता रहा है: 4G डाउनलोउड स्पीड, 4G अपलोड स्पीड, 4त्न वीडियो अनुभव, 4त्न लाईव वीडियो अनुभव, 4G गेम्स अनुभव और 4G वॉइस ऐप अनुभव। इससे स्पष्ट है कि वी के 4G यूज़र अब न सिर्फ सबसे तेज़ 4G स्पीड का लाभ उठा रहे हैं बल्कि लाईव एवं ऑन-डिमांड वीडियो स्ट्रीमिंग, मल्टीप्लेयर मोबाइल गेम्स एवं मोबाइल वॉइस ऐप्स पर ओवर-द-टॉप (ओटीटी) वॉइस सर्विसेज़ में सर्वश्रेष्ठ गुणवत्ता का अनुभव पा रहे हैं। इसके अलावा वी को 21 टेलीकॉम सर्कल्स में ओपनसिगनल के 4G विश्लेषण में क्षेत्रीय स्तर पर कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। राजस्थान में इसे 4G वॉइस ऐप अनुभव के टॉप प्रदाता के रूप में सम्मान दिया गया है। 4G वॉइस ऐप अनुभव मीट्रिक 4G यूज़र्स द्वारा ओटीटी वॉइस ऐप्लीकेशन्स जैसे व्हॉट्सऐप, स्काइप, फेसबुक मैसेंजर और टेलीकॉम नेटवर्क के 4G नेटवर्क पर इंटरैक्शन की गुणवत्ता का मूल्यांकन करता है। इस विकास पर बात करते हुए अभिजीत किशोर, चीफ़ ऑपरेटिंग ऑफिसर, वी ने कहा, ''हमें टॉप 4त्न प्रदाता के रूप में मान्यता मिलना यूज़र्स को उत्कृष्ट गुणवत्ता की सेवाएं एवं कनेक्टिविटी उपलब्ध कराने की हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। राजस्थान हमारे लिए प्राथमिकता है और आने वाले समय में भी हम यह सुनिश्चित करने के लिए निवेश करते रहेंगे । अधिक लाईव टीवी चैनल्स, वीडियो ऑन डिमांड (वीओडी) कंटेंट, लोकप्रिय गेम्स जैसे फ्री फायर एवं कॉल ऑफ ड्यूटी, यूटिलिटी सेवाओं जैसे बिजली, पानी एवं एलपीजी के भुगतान, फास्टैग रीचार्ज आदि का एक्सेस देता है। वी अपनी पेशकश के साथ उपभोक्ताओं की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए निरंतर इनोवेट करता है जैसे वी हीरो अनलिमिटेड प्लान जो अनलिमिटेड नाईट-टाईम (रात 12 बजे से सुबह 6 बजे तक) डेटा, अनलिमिटेड कॉलिंग, डेटा रोलओवर और फ्री ओटीटी सब्सक्रिप्शन्स के साथ स्ट्रीमिंग के फायदे देता है।

धरना प्रदर्शन कर ज्ञापन दिया

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

चाकसू। चाकसू में बुधवार को सर्व समाज की ओर से धरना प्रदर्शन कर बांग्ला देश में हिन्दुओं पर हो रहे अत्याचारों का विरोध जताया गया। चाकसू स्थित अंबेडकर सर्कल पर सर्व समाज एवं विभिन्न संस्थाओं के लोग सुबह एकत्र हुए। लोगों ने यहां धरना देकर बांगला देश सरकार के खिलाफ नारेबाजी की और वहां हिन्दुओं पर हो रहे अत्याचारों को रोकने की मांग की। इस दौरान मौके पर मौजूद वक्ताओं ने संबोधित किया। अंत में सकल हिन्दू समाज की ओर से उपखंड अधिकारी को प्रधानमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा।

कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ के नेतृत्व में राजस्थान में खेल और विकास की नई पहलः 'रन फॉर विकसित राजस्थान' का आयोजन 12 दिसंबर को

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। राजस्थान में खेल और खिलाड़ियों को बढ़ावा देने के लिए कई प्रयास किए जा रहे हैं। इसी दिशा में, 12 दिसंबर को राजस्थान के खेल मंत्री कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ जी के कुशल नेतृत्व में रन फॉर विकसित राजस्थान का आयोजन किया जा रहा है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य खेल और फिटनेस के प्रति जागरूकता बढ़ाना और राजस्थान के विकास में युवाओं की भागीदारी सुनिश्चित करना है।

खेल मंत्री कर्नल रायवर्धन सिंह राठौड़ जी ने कहा कि आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के प्रेरणादायक नेतृत्व और राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा जी के मार्गदर्शन में देश और प्रदेश में खेलों के विकास को नई ऊंचाइयां मिल रही हैं। 'खेलो इंडिया' जैसी योजनाओं से खिलाड़ियों को प्रोत्साहन मिल रहा है, और राजस्थान में खेल संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए अभूतपूर्व कदम उठाए जा रहे हैं। इस आयोजन के बारे में जानकारी देते हुए खेल मंत्री कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़ ने बताया कि 12 दिसंबर को अमर जवान योति, जयपुर से प्रातः 8 बजे रन फॉर विकसित राजस्थान का उद्घाटन राजस्थान के माननीय मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा जी हरी झंडी दिखा कर करेंगे। साथ ही इस अवसर पर पेरिस ओलंपिक-2024 और एशियन गेम्स-2023 में भाग लेने वाले खिलाड़ियों को सम्मानित किया जाएगा। यह आयोजन विकसित भारत और विकसित राजस्थान के सपने को साकार करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

टेम्पल कनेक्ट मीट जयपुर का हुआ आयोजन, प्रदेश के 30 से अधिक मंदिरों के महंत आए एक मंच पर

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। टेम्पल कनेक्ट की ओर से होटल ग्रेंड उनियारा में बुधवार को टेम्पल कनेक्ट मीट्स जयपुर का आयोजन किया। इसमें जयपुर सहित पूरे राजस्थान के 30 से अधिक मंदिरों के महंतों को एक मंच पर लाया गया। टेम्पल कनेक्ट और आई टी सी एक्स के फाउंडर गिरीश वासुदेव कुलकर्णी और आईटीसीएक्स की राष्ट्रीय आयोजन समिति की सदस्य आचार्या हिमानी शास्त्री ने बताया कि कार्यक्रम के माध्यम से फरवरी 2025 में तिरुपति में होने वाले अंतर्राष्ट्रीय मंदिर सम्मेलन और एक्सपो (आईटीसीएक्स)-2025 के लिए प्रदेश के मंदिर प्रतिनिधियों को आमंत्रित किया गया। उन्होंने बताया कि जयपुर, राजस्थान को सांस्कृतिक गौरव प्राप्त है क्योंकि इसे छोटी काशी माना जाता है। इस कार्यक्रम में मंदिर के संरक्षक और ट्रस्टियों की उत्साही भागीदारी देखी गई। जिन्होंने मंदिर प्रबंधन पर अपने दृष्टिकोण साझा किए और आईटीसीएक्स 2025 के मिशन के साथ जुड़ने में गहरी रुचि व्यक्त की। इस ऐतिहासिक सभा ने भारत के आध्यात्मिक और मंदिर प्रशासन तंत्र में राजस्थान के महत्वपूर्ण योगदान को प्रदर्शित किया। कार्यक्रम में गिरिश वासुदेव कुलकर्णी ने मन्दिरों के उत्थान और नवीनीकरण की तकनीक की आवश्यकता को समझाया। साथ ही आगामी कार्यक्रम का निमंत्रण राजस्थान के सभी मंदिरों को दिया। इस कार्यक्रम का समन्वय आईटीसीएक्स की राष्ट्रीय आयोजन समिति की सदस्य आचार्या हिमानी शास्त्री और आईटीसीएक्स राजस्थान की क्षेत्रीय आयोजन समिति के आचार्य अनुपम जौली ने किया। कार्यक्रम प्रतिष्ठित मंदिरों और उनके प्रबंधकों का एक अद्भुत जमावड़ा बन गया। इस अवसर पर आचार्य गोपाल शरण महाराज, महामंडलेश्वर मुरली मनोहर दास जी महाराज, पंडित संतोष कुमार व्यास, आचार्य संतोष कुमार भट्टा, नटवरलाल पंचा, पंडित गौरव शर्मा, आचार्य देव शर्मा और महंत किशोरी शर्मा सहित अनेक मंदिरों के महामंडलेश्वर, महंत व पुजारी उपस्थित रहे।

जयपुर हिस्ट्री फेस्टिवल में सांस्कृतिक धरोहर और वित्तीय शिक्षा का अद्भुत प्रदर्शन

जयपुर हिस्ट्री फेस्टिवल का दूसरा दिन, 6 दिसंबर तक सिटी पैलेस में आयोजन

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। सिटी पैलेस जयपुर में फाइनेंशियल लिटरेसी एंड फोक आर्ट विषय पर जयपुर हिस्ट्री फेस्टिवल के दूसरे दिन की शुरुआत जयपुरिया विद्यालय के छात्रों द्वारा मधुर भजनों की प्रस्तुति से हुई। छात्रों द्वारा गाए गए भजनों योति कलश छलकी, राम आएंगे और श्री कृष्ण गोविंद हरे मुरारी ने आध्यात्मिक वातावरण का निर्माण किया, जिसने दर्शकों को शांति और श्रद्धा की भावना से अभिभूत कर दिया। इसे शानदार तबला प्रदर्शन और मंत्रमुग्ध कर देने वाली कथक नृत्य प्रस्तुति ने और भी खुशनुमा बना किया, जो भारत की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर का उत्सव था। जिसके बाद इस फेस्टिवल के माहौल की ऊर्जा को एसवी पब्लिक स्कूल ने और बढ़ा दिया, जब उन्होंने हे राम और ओ पालन हारे जैसे सुरमयी भजनों की प्रस्तुति दी। अन्य भजन प्रस्तुतियों में रघुपति राघव राजा राम और अचु तम के शिवम् शामिल थे। डीपीएस सेक्टर 45, गुरुग्राम ने अपनी मारवाड़ी गीत की मनोरम प्रस्तुति से सुबह को और अधिक जीवंत कर दिया गया, जिसके बाद उनकी शास्त्रीय प्रस्तुति भरतमुनि राधिका और मृगनैनी ने भारत के सांस्कृतिक अतीत के सार को खूबसूरती से प्रस्तुत किया। फेस्टिवल में वित्तीय साक्षरता पर केंद्रित विषय प्रमुखता से उभर कर सामने आया, जब सीड्लिंग स्कूल, निर्माण नगर ने अपने उच-ऊर्जा वाले हिप-हॉप प्रदर्शन के माध्यम से बचत के महत्व और ऋण से बचने पर रोशनी डाली। एसआरएन इंटरनेशनल ने मुंशी प्रेमचंद की रचनाओं के नाट्य रूपांतरण के साथ विषय को जीवंत कर दिया, तथा नैतिक शिक्षाओं के माध्यम से दर्शकों को प्रभावित किया। सुबोध स्कूल के विद्यार्थियों ने संगीत के माध्यम से उपभोक्ता जागरूकता को संबोधित किया, जबकि मालवीय कॉन्वेंट स्कूल ने वित्तीय साक्षरता पर दिलचस्प नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया। इस अवसर पर स्कूलों द्वारा विविध प्रकार की प्रदर्शनियां भी प्रस्तुत की गईं, जिसमें रचनात्मकता और नवाचार का बेहतरीन संगम देखने को मिला। पैलेस स्कूल ने इंटरएक्टिव गेम्स और हस्तनिर्मित वस्तुएं जैसे गुल्लक और रचनात्मक बुकमार्क्स प्रदर्शित किए, जबकि टैगोर इंटरनेशनल स्कूल ने वित्तीय और प्रशासनिक विषयों पर लिखी गई किताबों को प्रस्तुत किया। डीपीएस जयपुर ने विजिटर्स को ट्रेजर आइलैंड बोर्ड गेम और अन्य रचनात्मक गतिविधियों के साथ जोड़ा, और महात्मा गांधी इंटरनेशनल स्कूल ने वित्तीय साक्षरता को एक माइंड मैप और थीम आधारित खेलों के माध्यम से उजागर किया। कपिल ज्ञानपीठ ने विजिटर्स को एक कार्यात्मक एटीएम मशीन और हस्तनिर्मित गुल्लकों से आकर्षित किया, स्प्रिंगडेल्स स्कूल ने पेंटिंग्स के माध्यम से अपनी कला का प्रदर्शन किया, और महाराजा सवाई भवानी सिंह स्कूल ने बाइकर सेफ्टी पर एक नवीनतम प्रोजेक्ट प्रस्तुत की, जो नवाचार पर केंद्रित था। इंटरएक्टिव क्राफ्ट कार्यशालाओं का आयोजन भी किया गया, जिसमें टाई-डाई, ब्लॉक प्रिंटिंग और बुकमार्क मेकिंग जैसी गतिविधियां शामिल थीं। ये कार्यशालाएं आर्च कॉलेज और राजस्थान स्टूडियो द्वारा आयोजित की गईं। जिन्होंने उपस्थित लोगों को कला के माध्यम से व्यावहारिक रूप से जोड़ते हुए उनके रचनात्मक विचारों को उजागर किया। जेएचएफ के तीसरे दिन, हिज हाईनेस महाराजा सवाई पद्मनाभ सिंह फेस्टिवल में शिरकत करेंगे और छात्रों से बातचीत करेंगे।

सांभरलेक पंचायत समिति में विमुक्त और अर्ध घुमंतु शिविर का आयोजन

शिविर में 36 पट्टे का किया वितरण, बीडीओ भागीरथ मल मीणा के प्रयास और कार्यकुशलता से जयपुर ग्रामीण जिले में सबसे अधिक पट्टे जारी

हिंदुस्तान एक्सप्रेस/सांभरलेक।

राज्य सरकार की कार्ययोजना में शामिल लाभार्थी शिविरो के आयोजन में अब विशेष शिविर लगाकर जरूरतमंदों को सीधे सीधे सरकार की योजना का लाभ पहुंचाया जा रहा है। जिला कलेक्टर जयपुर के आदेशानुसार सांभरलेक पंचायत समिति में भी बुधवार को सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक विमुक्त घुमंतू एवं अर्ध घुमंतु जातियों के परिवारों को लाभान्वित करने के लिए एक विशेष शिविर आयोजित किया गया। इस अवसर पर उपखंड अधिकारी सुमन चौधरी ने शिविर का निर्देशन किया और विकास अधिकारी भागीरथ मल मीणा, तहसीलदार कृष्ण शर्मा ,प्रधान सहदेव गुर्जर के मुख्य आतिथ्य में शिविर का शाम 5 बजे तक सफल आयोजन किया गया। इस दौरान घुमंतु अर्ध घुमंतु के 36 परिवारों को पट्टा वितरण भी किया गया और शिविर में 14 जनआधार, 11 आधार कार्ड, 9 पेंशन स्वीकृत की गई और 2 राशन कार्ड 5 जाति प्रमाण पत्र, एक जन्म प्रमाण पत्र और 35 निशुल्क दवाई वितरण किट जारी किए गए ।

इस दौरान अतिरिक्त विकास अधिकारी महावीर सिंह, सहायक विकास अधिकारी राकेश बेनीवाल ,सामाजिक अधिकारिता न्याय विभाग के कैलाश चौधरी, भवानी सिंह, पालिका ईओ सांभर छगन लाल यादव, फुलेरा ईओ कृष्ण कुमार, पटवारी बबीता वर्मा, नेमीचंद कुमावत,कोमल सैनी, त्योद सरपंच हरदेव चौधरी, श्रीरामपुरा सरपंच लक्ष्मण लाल वर्मा, हबसपूरा सरपंच पुरुषोत्तम मीणा , सीतारामपुरा सरपंच हरिराम वर्मा, ग्राम विकास अधिकारी मनीष कुमार प्रजापत, दीपक कुमार ,महेंद्र चारण, कनिष्ठ सहायक रूपनारायण कुमावत, नोरत वर्मा,सहित कई कर्मचारी मौजूद थे।

29 दिसंबर को जयपुर में आयोजित होगा 'नारी शक्ति वंदन' सम्मान समारोह 2024

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

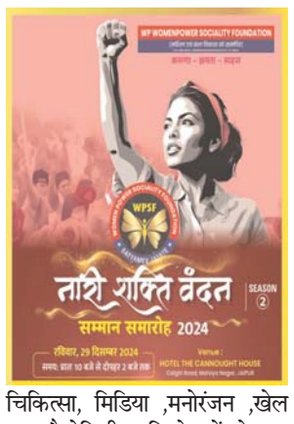

जयपुर। वूमेन पॉवर सोशलिटी फाउण्डेशन जयपुर में 29 दिसंबर को नारी शक्ति वंदन सम्मान समारोह 2024 का आयोजन करेगा। वूमेन पॉवर सोशलिटी फाउण्डेशन राजस्थान की राष्ट्रीय अध्यक्ष राजकन्या के निर्देशानुसार एवं सचिव उमा सोनी, उपाध्यक्ष राजरानी, संयोजक सन्तोष कुमार की अनुशंसा से प्रातः 10 बजे से होटल दी कनॉट हाउस कैलगिरी रोड, मालवीय नगर, जयपुर में नारी शक्ति वंदन सम्मान समारोह कार्यक्रम रखा गया है। वूमेन पॉवर सोशलिटी फाउण्डेशन राजस्थान के द्वारा इस गौरवमयी सम्मान समारोह समाज की महान विभूति विश्वसंरचनाकृति नारी शक्तियों का विभिन्न क्षेत्र में विशेष अनुभव, योगदान, समय-समय पर सहयोग जो ख़ास तौर पर समाज हित में महिलाओ, बच्चों के शिक्षा, संरक्षण , अधिकार, रोजगार, चिकित्सा, गायन नृत्य, समाज सेवी आदी के क्षेत्र में आवाज़/पहचान बनकर हर क्षेत्र में जैसे संस्था, ऑर्गेनाइजेशन, इंस्टीट्यूशन लेखन, गायन ,पर्यावरण रचनात्मक ,कलात्मक, शिक्षा, चिकित्सा, मिडिया ,मनोरंजन ,खेल कूद प्रौद्योगिकी आदि क्षेत्र में योगदान के लिए सम्मानित किया जाएगा। 101 महान नारी शक्तियों को सम्मानित किया जाएगा। जिसकी नामांकन की अंतिम तिथि 15 दिसंबर रखी गई है। सम्मान समारोह में सभी समाज के मानव जीवन की उत्कृष्टता रखने वाली नारी शक्ति, युवक, युवतियां भाग ले सकते है। कार्यक्रम में मुख्य आतिथ्य /सहयोग राजनेता, समाज सेवी, फिल्मी हस्तियां, उद्योग पति, संत, कॉरपोरेट , कानून, क्षेत्र के महानुभावों का गौरव शाली सहयोग एवं उपस्तिथि प्राप्त होगी।

शीतकालीन प्रवास के लिए श्रीफल भेंट किया

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

सवाई माधोपुर । शहर के जैन मोहल्ला स्थित निर्यापक श्रमण मुनि सुधासागर संयम भवन में मंगलवार शाम को सकल दिगंबर जैन समाज की बैठक हुई। जिसमें आचार्य इन्द्रनंदीजी ससंघ को सवाई माधोपुर में शीतकालीन प्रवास कराने का सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया। प्रवक्ता प्रवीण जैन ने बताया कि इस क्रम में दिगम्बर जैन संत भवन,शीतला माता की गली,चौथ का बरवाड़ा में ससंघ विराजित आचार्य इन्द्रनंदीजी को सकल दिगंबर जैन समाज की ओर से बुधवार को श्रीफल भेंट कर सवाई माधोपुर में शीतकालीन प्रवास करने का आशीर्वाद प्रदान करने की विनती की गई। इस दौरान समाज अध्यक्ष अशोक बड़जात्या,मंत्री हरसीलाल जैन श्रीमाल व कोषाध्यक्ष अशोक पांड्या के नेतृत्व में समाज के प्रबुद्ध लोग मौजूद रहे।

खंडार विधायक जितेन्द्र गोठवाल ने खंडार विधानसभा को दी एक और बड़ी सौगात, ग्राम गिरधरपुरा में नया 33 केवी सब स्टेशन स्वीकृत

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

खंडार । खंडार विधायक माननीय जितेंद्र गोठवाल जी के अथक प्रयासों से बिजली के क्षेत्र में एक और बड़ी स्वीकृति जारी हुई है । बिनजारी ग्राम पंचायत में एक नया 33 केवी जीएसएस स्वीकृत हुआ । जिससे बिनजारी ग्राम पंचायत और आदलवाडा ग्राम पंचायत से जुड़े हुए लगभग 8- 10 गांवो को सुचारू विद्युत आपूर्ति मिलेगी । इन गांवों के लोगों द्वारा विगत 45 साल से बिनजारी ग्राम पंचायत में नया 33 केवी जीएसएस बनवाने की मांग लगातार उठ रही थी । खंडार विधायक जितेन्द्र गोठवाल ने क्षेत्रीय कार्यकर्ताओ की मांग को गंभीरता से लेते हुए अपने अथक प्रयासों से ग्राम गिरधरपुरा में नया 33 केवी सब स्टेशन स्वीकृत करवाया गया ढ्ढ जिसकी अनुमानित लागत लगभग 5 करोड़ रुपए है । बिनजारी ग्राम पंचायत के आसपास के क्षेत्र में पिछले तीन-चार साल से विद्युत आपूर्ति की स्थिति यह है कि फिडरो पर लोड इतना ज्यादा आ रहा है कि बार-बार टूटने और केबल जलने आदि की समस्या के कारण जो ग्रामीणों को 6 घंटे विद्युत आपूर्ति मिलनी चाहिए थी उसकी जगह 4 घंटे 5 घंटे से ज्यादा विद्युत आपूर्ति नहीं मिल पा रही थी।

जिला कलक्टर व पुलिस अधीक्षक ने खण्डार सीएचसी, पुलिस थाना व राजकीय डॉ. भीमराव अम्बेडकर छात्रावास का किया निरीक्षण

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

सवाई माधोपुर। खण्डार उपखण्ड क्षेत्र के सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र खण्डार, पुलिस थाना खण्डार, राजकीय डॉ. भीमराव अम्बेडकर छात्रावास (अनुसूचित जनजाति) आदि का बुधवार को जिला कलक्टर शुभम चौधरी एवं पुलिस अधीक्षक ममता गुप्ता ने संयुक्त रूप से निरीक्षण किया। जिला कलक्टर एवं पुलिस अधीक्षक ने सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र खण्डार में मरीज बबलू, सुरेश, कविता आदि से अस्पताल में मिल रही चिकित्सा सेवाओं व दवाओं की उपलब्धता के साथ-साथ अन्य व्यवस्थाओं के संबंध में फीडबैक लिया। इस दौरान उन्होंने मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य योजना के परिसर में अतिरिक्त फ्लैक्स लगाने के निर्देश दिए। उन्होंने औषधीय भण्डार केन्द्र में निरीक्षण के दौरान नियमित रूप से दवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने, अवधिपार दवाओं का नियमित रूप से निस्तारण करने के निर्देश संबंधित चिकित्सा अधिकारी को दिए। वहीं उन्होंने दवा वितरण केन्द्र पर मरीजों को अवधिपार दवा की आपूर्ति न हो इसकी सुनिश्चितता करने के निर्देश भी संबंधित अधिकारी को प्रदान किए।

इस दौरान उन्होंने अस्पताल परिसर में नियमित रूप से साफ-सफाई रखने एवं नकारा अनुपयोगी सामानों का तत्काल प्रभाव से निस्तारित करने के निर्देश दिए है।

इस दौरान उन्होंने पुरूष-महिला वार्डो में जाकर भर्ती मरीजों से संवाद कर चिकित्सा व्यवस्थाओं एवं मिलने वाली दवाओं के बारे में जानकारी ली। इसके पश्चात उन्होंने प्रसव कक्ष, प्रयोगशाला आदि का निरीक्षण कर सभी आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र परिसर में निजी वाहनों की पार्किंग निषेध करने के निर्देश एसएचओं खण्डार को दिए। राजकीय डॉ. भीवराम अम्बेडकर छात्रावास (अनुसूचित जनजाति) का किया निरीक्षण- इस दौरान जिला कलक्टर एवं पुलिस अधीक्षक ने राजकीय डॉ. भीमराव अम्बेडकर छात्रावास का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने छात्रावास में अध्ययनरत बच्चों से संवाद कर उनके शैक्षणिक स्तर की जांच की। उन्होंने छात्रावास के कक्षों में रोशनी कम पाई जाने पर सभी कक्षाओं में आवश्यकतानुसार एलईडी ट्यूबलाईट लगवाकर रोशनी की पर्याप्त व्यवस्था सुनिश्चित करने क निर्देश हॉस्टल वार्डन विष्णु कुमार शर्मा को दिए। इस दौरान उन्होंने छात्रावास में वॉशवेशन के टूटे पाईपों के स्थान पर नये पाईप लगवाने के निर्देश दिए। उन्होंने सामग्री का स्टॉक रजिस्टर नहीं मिलने पर हॉस्टल वार्डन विष्णु कुमार शर्मा को कारण बताओं नोटिस जारी करने के निर्देश सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के उप निदेशक गौरी शंकर मीणा को दिए। इस दौरान जिला कलक्टर ने पंचायत समिति खण्डार में प्रधान नरेन्द्र कुमार चौधरी सहित अन्य पंचायत समिति सदस्यों, सरपंचों आदि लोगों से स्थानीय समस्याओं के बारे में चर्चा की। इस दौरान उपस्थित पंचायत समिति सदस्यों द्वारा ट्रेक्टरों पर तेज आवाज में डीजे पर अश्लीन गाने बजाने की शिकायत जिला कलक्टर व पुलिस अधीक्षक से की इस पर जिला कलक्टर व पुलिस अधीक्षक ने संबंधित ट्रेक्टर चालकों के विरूद्ध आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित करवाने के निर्देश संबंधित अधिकारी को दिए।

इस दौरान मनरेगा योजना में कम काम स्वीकृत करने की शिकायत पर जिला कलक्टर ने संबंधित विभागीय अधिकारियों को मनरेगा योजना के माध्यम से लाभकारी, सकारात्मक संरचनाओं के कार्य स्वीकृत कर मनरेगा में कार्य करने के इच्छुक श्रमिकों को काम दिलवाने के निर्देश दिए है।

एलपीजी आईडी मैपिंग की तिथि 10 दिसम्बर तक बढ़ाई, गिव-अप अभियान' के तहत सक्षम व्यक्ति खाद्य सुरक्षा सूची से

31 जनवरी, 2025 तक स्वेच्छा से हटाए नाम

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस/सवाई माधोपुर। बजट घोषणा 2024-25 के तहत राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा में चयनित परिवारों को 450 रू. में एलपीजी गैस सिलेण्डर उपलब्ध करवाया जाना है। जिला रसद अधिकारी बनवारी लाल शर्मा ने बताया कि खाद्य विभाग के निर्देशानुसार राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा में चयनित राशन कार्ड धारक के समस्त सदस्यों की ईकेवाईसी करने के उपरान्त ही एलपीजी आर्डडी मैपिंग हो रही है। विभाग द्वारा एलपीजी आईडी मैपिंग की तिथि 10 दिसम्बर, 2024 तक बढ़ा दी गई है। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा में कुल 134631 परिवार चयनित है जिसमें से 87417 परिवारों की एलपीजी आईडी की मैपिंग हो चुकी है शेष 47214 परिवारों की एलपीजी आईडी मैपिंग की जानी है। उन्होंने बताया कि एनएफएसए में चयनित राशनकार्ड में दर्ज समस्त सदस्यों की ईकेवाईसी किया जाना अनिवार्य है। यदि राशनकार्ड मे दर्ज सदस्यों मे से किसी सदस्य की ईकेवाईसी नही होती है तो 30 दिसम्बर, 2024 के पश्चात उसका नाम खादय सुरक्षा से पृथक कर दिया जावेगा। एनएफएसएस मे कुल 134631 राशनकार्ड है।

उत्तर पश्चिम रेलवे
खुली ई–निविदा सूचना
व.म.बि.इंजी. (टीआरडी), उ.प.रे., जयपुर द्वारा भारत के राष्ट्रपति के लिए एवं उनकी ओर से निम्नलिखित कार्य के लिये ई–निविदाएं आमंत्रित की जाती हैं। कोई भी मैन्युअल टेण्डर स्वीकार नहीं किया जायेगा और अगर कोई मैन्युअल टेण्डर प्राप्त होता है तो उस पर विचार नहीं किया जायेगा। एनआईटी संख्याः ईएल–टीआरडी–जेपी–2024–25–09 आर, कार्य का नामः लेफ्ट ओवर इलेक्ट्रिफिकेशन वर्क ऑफ लाइन–1 टू 4, 11 टू 17 एण्ड फीडर वायर वर्क इन फुलेरा यार्ड, फुल वायरिंग ऑफ लाइन–1 ऑफ गुड्स शेड इन कनकपुरा यार्ड एण्ड टॉप एण्ड वायरिंग ऑफ लाइन–3 इन शिवदासपुरा –पदमपुरा यार्ड ऑफ जयपुर डिवीजन, अनुमानित लागत (रु): 4,15,22,518.77, बिड सिक्युरिटि राशि (रु): 3,57,600.00, निविदा खोलने की तिथिः 27.12.2024, नोटः ई–निविदा की अंतिम तिथि एवं समयः निविदा खोलने की तिथि को 15:00 बजे तक, ई–निविदा खोलने की तिथि एवं समयः निविदा खोलने की तिथि को 15:00 बजे बाद, सम्पूर्ण जानकारी के लिये वेबसाइट का पताः http://www.ireps.gov.in
1394-PS/24
हमें NWRailways NWRailways_ पर फॉलो करें

राजकीय महाविद्यालय, में मनाया विकसित भारत यंग लीडर्स डायलॉग

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

धौलपुर। राजकीय महाविद्यालय, धौलपुर में राष्ट्रीय सेवा योजना के तत्वावधान में विकसित भारत यंग लीडर्स डायलॉग जो कि 11-12 जनवरी, 2025 को भारत मंडपम्, नई दिल्ली में प्रधानमंत्री भारत सरकार की उपस्थिति में आयोजित होना प्रस्तावित है। उक्त कार्यक्रम के बारे में राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम अधिकारियों पवन कुमार मीना, राजेश गुर्जर एवं मनु नायर द्वारा महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं को क्विज प्रतियोगिता में भाग लेने हेतु माई भारत पोर्टल पर पंजीकरण प्रक्रिया के बारे में बताया साथ ही उक्त संभागियों से श्रमदान भी कराया गया।

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने पुस्तक 'उपनिषदीय दर्शन बोध' का विमोचन किया

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

धौलपुर। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने बुधवार को मुख्यमंत्री कैम्प कार्यालय स्थित मुख्य सेवक सदन में प्रकाश सुमन ध्यानी द्वारा लिखित पुस्तक 'उपनिषदीय दर्शन बोध' का विमोचन किया। पुस्तक विमोचन के अवसर पर विधानसभा अध्यक्ष ऋतु खण्डूरी भूषण एवं महाराष्ट्र के पूर्व राज्यपाल और उत्तराखण्ड के पूर्व मुख्यमंत्री भगत सिंह कोश्यारी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री ने 'उपनिषदीय दर्शन बोध' पुस्तक के लेखक प्रकाश सुमन ध्यानी को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि वे भारतीय वैदिक दर्शन और सनातन संस्कृति के संवाहक के रूप में एक नई पहचान स्थापित कर रहे हैं। इस पुस्तक के माध्यम से उन्होंने उपनिषद के जटिल और गूढ़ रहस्यों को साधारण तरीके से लिखा है। भारतीय ज्ञान परंपरा के विभिन्न आयामों को सबके समक्ष रखा है। उपनिषद भारतीय संस्कृति और दर्शन की अमूल्य निधि है, जिसने संपूर्ण विश्व को ज्ञान और चेतना का मार्ग दिखाया है। हमारी ज्ञान परंपरा संपूर्ण विश्व को वसुधैव कुटुम्बकम के रूप में मानती है। उपनिषद आध्यात्मिक चिंतन के स्रोत के साथ ही मानवता को व्यावहारिक जीवन दृष्टि भी प्रदान करते हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि जिस प्रकार से ज्ञान-विज्ञान आगे बढ़ रहा है, तब उपनिषदों और वेदों का ज्ञान हमारे लिए और भी प्रासांगिक हो जाता है। जीवन में बढ़ती प्रतिस्पर्धा, भौतिकवाद की चकाचौंध के बीच में आत्मा और ब्रह्मा की खोज निश्चित रूप से हमें प्रेरणा देने का कार्य करेगी। यह पुस्तक सभी को आत्म विकास, आत्म चिंतन और स्वयं की खोज के लिए भी प्रेरित करेगी। उन्होंने कहा कि हमारा प्रदेश देवभूमि होने के साथ ही आध्यात्मिक चिंतन का एक महत्वपूर्ण केन्द्र है। आदि शंकराचार्य, स्वामी विवेकानन्द और ऋषि-मुनियों ने इस पुण्य धरा को अपनी शरण स्थली बनाया। उन्होंने कहा कि यह पुस्तक हमारी गौरवशाली परंपरा को आगे बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण साबित होगी।

महाराष्ट्र के पूर्व राज्यपाल और उत्तराखण्ड के पूर्व मुख्यमंत्री भगत सिंह कोश्यारी ने कहा कि प्रकाश सुमन ध्यानी ने जीव विज्ञान की पढ़ाई कर आत्मज्ञान तक पहुंचकर 'उपनिषदीय दर्शन बोध' पुस्तक लिखी इसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। उन्होंने कहा कि उपनिषद जैसे विषय पर व्याख्यान करना बड़ी बात है। आज भारत की आस्था, निधि और गौरव 'अध्यात्म' की ओर आज पूरी दुनिया आ रही है। उन्होंने कहा कि भारत के मूल में आध्यात्मिक इंटेलिजेंस है। आध्यात्मिक इंटेलिजेंस हमारे देश की ख्याति है। भारत दुनिया को अध्यात्म और योग का ज्ञान देने वाला है।

विधानसभा अध्यक्ष ऋतु खण्डूरी भूषण ने कहा कि 'उपनिषदीय दर्शन बोध' पुस्तक के माध्यम से लेखक ने आम जनमानस को उपनिषद और वेदों से जोड़ने का सराहनीय प्रयास किया है। हमारे वेद उपनिषद और प्राचीन ग्रंथ 21वीं सदी की आवश्यकता बन रहे हैं। जीवन जीने की शैली हमारे ये ग्रंथ सिखाते हैं। भावी पीढ़ी को अपने नैतिक मूल्यों से जोड़ना जरूरी है। आसान भाषा में हमारे ग्रंथो को बच्चों और जनमानस के साथ जोड़ना जरूरी है। आत्मा का चिंतन और परमात्मा से जुड़ाव होना आवश्यक है। इस पुस्तक के माध्यम से इस दिशा में सराहनीय प्रयास किया गया है।

इस अवसर पर विधायक सविता कपूर, भाजपा के जिलाध्यक्ष सिद्धार्थ अग्रवाल, 'उपनिषदीय दर्शन बोध' पुस्तक के लेखक प्रकाश सुमन ध्यानी, गणेश खुगशाल एवं साहित्य से जुड़े लोग उपस्थित थे।

सविदा कर्मचारी द्वारा आत्महत्या के मामले में उचित कार्रवाई के सम्बध में सौंपा ज्ञापन

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

धौलपुर। अखिल राजस्थान संविदा कंप्यूटर ऑपरेटर महासंघ ने मुख्यमंत्री निः शुल्क निरोगी राजस्थान दवा योजना के कार्यरत सविदा कर्मचारी द्वारा आत्महत्या के मामले मे उचित कार्यवाही के सम्बध में जिला कलेक्टर को दिया ज्ञापन। ज्ञापन में बताया कि मुख्यमंत्री निः शुल्क निरोगी राजस्थान दवा योजना के कार्यरत सविदा कर्मचारी राजेन्द्र बैरवा बाली उपजिला होस्पीटल के द्वारा विगत 4 महीने से वेतन नही दिया जा रहा हे व उक्त कार्मिक द्वारा लिखित पत्राचार द्वारा उच्चाधिकारियो को अवगत कराया गया उसके उपरांत संविदा कर्मचारी को 8500 रुपये मासिक वेतन भुगतान नहीं किया गया जिससे मानसिक अवसाद में आकर उक्त कार्मिक द्वारा फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली गई, जिसको लेकर सम्पुर्ण राजस्थान मे आको व्याप्त है, उचित कार्यवाही की मांग करते हे व दोषी उच्चाधिकारीयो के विरुद्ध कानुनी कार्यवाही की मांग करते है, मुख्यमंत्री निः शुल्क निरोगी राजस्थान दवा योजना महासघ द्वारा मृतक राजेन्द्र बैरवा के परिवार के सदस्य को सरकारी नौकरी व आर्थिक सहायता व दोषी उच्चाधिकारीयो के विरुद्ध कानुनी कार्यवाही की मांग करते, व प्रदे मे सविदा सेवा रुल्स से वचिंत कार्मिको को अविलम्ब नियुक्ति दि जाये ताकि भविष्य में ऐसा कदम कोई और साथी न उठाएं इस हेतु संविदा रूल 2022 की लिस्ट आज ही जारी कर कम्प्यूटर ऑपरेटरो को रूल 2022 में शामिल किया जाए। मुख्यमंत्री निः शुल्क निरोगी राजस्थान दवा योजना के कार्यरत सविदा कर्मचारी की जायज मांगो पर सहानुभुतिपुर्वक विचार कर न्याय दिलाने की कृपा करावे व दोशी उच्चाधिकारीयो के विरुद्ध कानुनी कार्यवाही की जाये। ज्ञापन देने वालों में सत्यपाल, विलाल, हरिगोविंद आदि मौजूद रहे।

ई-विधान से विधान सभा की कार्य पद्धति हो जायेगी डिजिटल — वासुदेव देवनानी

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। विधानसभा अध्यक्ष देवनानी ने राजस्थान विधानसभा के डिजिटल कार्य का बुधवार को अवलोकन किया। देवनानी ने सदन में ई-विधान से विधानसभा सदन व विधानसभा सचिवालय को डिजिटल किये जाने वाले कार्य को 31 दिसम्बर तक आवश्यक रूप से पूरा करने के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए। उन्होंने कार्य की प्रगति का मौके पर जाकर निरीक्षण किया।

देवनानी ने कहा कि राजस्थान विधानसभा का आने वाला सत्र पेपर लैस होगा। उन्होंने कहा कि नये सत्र में राजस्थान विधानसभा का सदन नये रूप में दिखाई देगा। उन्होंने कहा कि विधानसभा के सदन में सदस्यों की सीटों पर कम्प्यूटर उपकरण स्थापित करने और विधानसभा सदन को पेपर लैस किये जाने हेतु नेवा प्रोजेक्ट का कार्य अन्तिम चरण में है।

विधानसभा अध्यक्ष ने कहा कि विधान सभा सदन में विधायकों की मेजों पर कम्प्यूटर उपकरण स्थापित करने और विधानसभा को पेपरलैस बनाने का कार्य चरणबद्ध तरीके से इस माह के अन्त तक सम्भवतः पूरा हो जाएगा। ई-विधान से राजस्थान विधान सभा की कार्य पद्धति डिजिटल हो जायेगी।

सदन में विधायकगण की प्रत्येक सीट पर लगेंगे आई-पैड

देवनानी ने बताया कि सदन में विधायकगण की प्रत्येक सीट पर एक आई-पैड लगाया जा रहा है। एक लैपटोप मय प्रिन्टर विधायकगण को उनके आवास के लिए भी उपलब्ध कराया जायेगा। इस परियोजना में 12.61 करोड़ रूपये की राशि व्यय होगी। इस राशि में 60 प्रतिशत केन्द्र सरकार एवं 40 प्रतिशत भागीदारी राज्य सरकार की होगी।

विधायकों को प्रशिक्षण, सदन में भी तकनीकी मदद मिलेगी

देवनानी ने बताया कि विधानसभा में नेवा सेवा केन्द्र (ई लर्निंग कम ई-फैसिलेशन सेन्टर) की स्थापना का स्थान निर्धारित कर दिया गया है। इसके तहत विधायकगण, अधिकारियों व कर्मचारियों को नेवा मॉडयूल्स का प्रशिक्षण दिया जायेगा। प्रशिक्षण सामग्री अंग्रेजी, हिन्दी और क्षेत्रीय भाषाओं में उपलब्ध कराई जायेगी। विधायकगण को ऑनलाईन कार्य करने के लिए सदन में भी मौके पर तकनीकी सहायता उपलब्ध करायी जायेगी।

देवनानी कर रहे हैं कार्य की लगातार समीक्षा

अध्यक्ष देवनानी ने बताया कि राजस्थान विधान सभा को डिजिटल करने की इस महत्वपूर्ण परियोजना की वे लगातार समीक्षा कर रहे हैं। गत माह चार देशों की यात्रा के दौरान भी उन्होंने प्रतिदिन इस कार्य की दूरभाष से रिपोर्ट ली। उन्होंने विदेश यात्रा दौरान प्रतिदिन इस कार्य का ऑनलाइन निरीक्षण भी किया।

विधान सभा सदन व सचिवालय हो जायेंगे पेपर लैस

नेशनल ई-विधान एप्लीकेशन (नेवा) से राजस्थान विधानसभा का सदन और सचिवालय डिजिटल हो रहा है। इससे विधान सभा सदन व सचिवालय की कार्यवाही पेपरलैस हो जायेगी। इस ई-विधान एप्लीकेशन से राज्य विधानसभा के सदस्यों और अधिकारियों को कार्य करने में आसानी होगी। इस एप्लीकेशन के तहत विधानसभा के सदन से संबंधित विधेयक, रिपोर्टस आदि की जानकारी मीडिया, अनुसंधानकर्ता और आम नागरिक भी आसानी से देख सकेंगे। त्रिपार्टी मेमोरेंडम ऑफ अण्डर स्टेण्डिंग के अनुसार केन्द्र सरकार की राज्य की विधानसभाओं को डिजिटल बनाये जाने के लिए ÷वन नेशन-वन एप्लीकेशन÷ के तहत नेशनल ई-विधान एप्लीकेशन के उपयोग के साथ राजस्थान विधान सभा को डिजिटल बनाये जाने की प्रकिया का कार्य तीव्र गति से चल रहा है।

एप के माध्यम से मोबाईल पर भी देख सकेंगे ई-विधान

ई-विधान एप एन्ड्रोएड और आई.ओ.एस. दोनों तरह के मोबाइल पर चल सकेगा। यह ऐप ई-बुक और वेबसाइट पर भी उपलब्ध होगा। नेवा के तहत सदन की कार्यवाही विवरण, सदन में रखे जाने वाले पेपर्स, विधेयक से संबंधित जानकारी, समितियों की रिपोर्ट, प्रश्न और उनके जवाब, बुलेटिन, कार्यवाही विवरण, डिजिटल लाईब्रेरी, सूचनाएं और सदस्यों से संबंधित जानकारी एक ही एप्लीकेशन में उपलब्ध होगी।

विधान सभा अध्यक्ष श्री वासुदेव देवनानी के साथ विधान सभा के सरकारी मुख्य सचेतक श्री जोगेश्वर गर्ग, प्रतिपक्ष के मुख्य सचेतक श्री रफीक खान, विधायक श्री हरिमोहन शर्मा, विधान सभा के विशिष्ट सचिव श्री भारत भूषण शर्मा, विशिष्ट सहायक श्री के.के. शर्मा सहित अनेक अधिकारीगण मौजूद थे।

राजस्थान विधान सभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी से बुधवार को यहां विधानसभा में पंजाब विधानसभा की सरकारी आश्वासनों संबंधी समिति के सभापति सरदार देविन्दरजीत सिंह सहित समिति के सदस्यगण ने शिष्टाचार मुलाकात की। अध्यक्ष श्री देवनानी ने समिति के सदस्यों का अभिवादन किया। श्री देवनानी ने कहा कि राजस्थान विधानसभा की समितियों को सक्रिय किया जा रहा है। राजस्थान में विधानसभा समितियों की बैठकें प्रत्येक माह में 15 दिन आयोजित करवाई जा रही है साथ ही समितियों के कार्यों और रिपोर्टस की समीक्षा भी उनके स्तर पर की जा रही है। राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष देवनानी को पंजाब विधानसभा के विधायकों ने बताया कि राजस्थान विधानसभा का राजनैतिक आख्यान संग्रहालय बहुत सुन्दर है। विधायकों ने संग्रहालय की सराहना की। उन्होंने श्री देवनानी को बताया कि पंजाब विधानसभा में समितियों की बैठक साप्ताहिक होती है। पंजाब विधानसभा के सदस्य सरदार देविन्दर जीत सिंह, डॉ. अमनदीप कौर अरोड़ा, सरदार फौजासिंह, सरदार लखवीर सिंह राय और सरदार रनवीर सिंह ने देवनानी को बताया कि यह समिति राजस्थान में जयपुर, उदयपुर और अजमेर का अध्ययन भ्रमण 07 दिसम्बर तक करेगी।

इस अवसर पर राजस्थान विधानसभा की सरकारी आश्वासन संबंधी समिति के सदस्य श्री नानालाल नीनामा, उपसचिव श्री आनन्द कुमार और सहायक सचिव श्री रामस्वरूप गुर्जर भी मौजूद थे।

राजस्थान किसान आयोग के अध्यक्ष का किया स्वागत

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

धौलपुर। राजस्थान किसान आयोग के अध्यक्ष सी आर चौधरी छोटू राम चौधरी एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री का गुर्जर समाज ने किया स्वागत चौधरी के धौलपुर आगमन पर कलेक्ट्रेट परिसर में राजस्थान गुर्जर महासभा के कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष यदुवीर सिंह गुर्जर एवं उनकी टीम ने उनका जोरदार स्वागत किया एवं इस अवसर पर सी आर चौधरी ने कहा कि हम किसानों की हर समस्या का हल करने का प्रयास करेंगे तथा हमारी सरकार किसानों के हित के लिए जोरदार प्रयास कर रही है किसानों की समस्याओं का निराकरण करने का प्रयास कर रही है उपस्थित गणमान्य नागरिक एवं हरि सिंह गुर्जर जिला अध्यक्ष पंचायती राज शिक्षक संघ धौलपुर,, भारत सिंह जिला अध्यक्ष गुर्जर कर्मचारी अधिकारी कल्याण परिषद धौलपुर, विकास गुर्जर, अमित जादौन आदि उपस्थित रहे।

शासन सचिव महेन्द्र सोनी ने साथिन कार्यकर्ताओं को पंचायतों को बच्चों एवं महिला की हितेसी बनाने के निर्देश दिए

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। महिला एवं बाल विकास विभाग के शासन सचिव महेन्द्र सोनी ने साथिन कार्यकर्ताओं को पंचायतों को बच्चों एवं महिला की हितेसी बनाने के निर्देश दिए हैं।

महेन्द्र सोनी ने बुधवार को यूनिसेफ राजस्थान के सहयोग से पंचायती राज विभाग, महिला अधिकारिता निदेशालय तथा मंजरी संस्थान के संयुक्त तत्वाधान में 33 जिलों की 66 साथिन कार्यकर्ताओं के दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम पंचायत संग साथिन के दौरान यह निर्देश दिया।

सोनी ने पंचायत साथिनों को कहा कि वे बाल एवं महिला हितैषी पंचायत बनाने के पुनीत कार्य में पूर्ण योगदान दें। राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान के अंतर्गत एक अनूठी पहल के रूप में पंचायत संग साथिन प्रशिक्षण कार्यक्रम एक सार्थक आयोजन है। इसके माध्यम से पंचायत स्तर पर सकारात्मक भाव से महिला एवं बच्चों के विकास में साथिनें अपनी भूमिका का निर्वहन करें। उन्होंने साथिनों को प्रेरित करते हुए कहा कि साथिन कार्यकर्ताएं ही बाल एवं महिला हितैषी पंचायतें बनाएंगी।

महेन्द्र सोनी ने बताया कि राज्य में 14 वर्ष तक के बच्चों की आबादी 14 प्रतिशत है तथा आधी आबादी महिलाओं की है। इस प्रकार महिलाएं और बच्चे मिलकर 64 प्रतिशत आबादी हैं। ग्राम पंचायत विकास योजना का लाभ इनको मिलना चाहिये।

कार्यक्रम के दौरान पंचायत स्तरीय प्रशिक्षण के रुप में साथिनों को विकसित करने के लिये यूनिसेफ एवं विभाग द्वारा तैयार प्रशिक्षण मॉड्यूल तथा पोस्टर का विमोचन महिला एवं बाल विकास विभाग के शासन सचिव महेन्द्र सोनी द्वारा किया गया। कार्यक्रम में महिला अधिकारिता आयुक्त एवं अतिरिक्त निदेशक महिला अधिकारिता नीतू राजेश्वर, पंचायती राज संयुक्त शासन सचिव गुरुदर्शन सिंह रमाना, साथिन परियोजना यूनिसेफ के सामाजिक नीति विशेषज्ञ शफकत हुसैन उपस्थित रहे।

पंचायती राज संयुक्त शासन सचिव गुरुदर्शन सिंह रमाना ने कहा कि महिला और बाल हितैषी पंचायत बनाने के लिए जिलों में इस प्रकार के पंचायत संग साथिन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित होंगे। प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान उपस्थित साथिनों को सतत् विकास स्थानीयकरण, बाल हितैषी पंचायत, महिला हितैषी पंचायत तथा ग्राम पंचायत विकास योजना निर्माण पर विस्तार से प्रशिक्षण दिया गया। ।

संदीप तोमर पुनः ओमश्री के जिलाध्यक्ष बने

धौलपुर। राष्ट्रवादी दवा प्रतिनिधि संगठन ओमश्री का चुनाव सभी सदस्यों की एवं पदाधिकारियों की मौजूदगी में संपन्न हुआ। जिसमें संदीप सिंह तोमर को सर्वसम्मति से पुनः ओमश्री का जिलाध्यक्ष घोषित किया गया। इनके अलावा उपाध्यक्ष पद हेतु पंकज परमार अनुराग राणा, उषा, संजय परमार एवं सचिव पद हेतु राजेश शर्मा को सर्वसम्मति से चुना गया। इस मौके पर ओम श्री से राजस्थान कोऑर्डिनेटर अनुपम पांडे, उदय राम, अभिषेक शर्मा, सुमित गोस्वामी, अजय परमार, संतोष परमार, रवि त्यागी, गौतम सिंह, शाहिद सहित संपूर्ण ओम श्री परिवार उपस्थित रहा।

कार्यालय ग्राम पंचायत सखबारा, पंचायत समिति सैपऊ (धौलपुर)

क्रमांक/ ग्रा.पं./ई.नि.नि सा./2024/14-15 दिनांक :- 03.12.2024

ई-निविदा सूचना 03/2024-2025

ग्राम पंचायत परिक्षेत्र में स्वीकृत 02 कार्य नवीन आंगनबाड़ी भवन निर्माण कार्य चुन्नापुरा तथा नवीन आंगनबाड़ी भवन निर्माण कार्य रमगढ़ा अनुमानित लागत 20.00 लाख के लिये संकर्म सम्पादन हेतु सक्षम श्रेणी में पंजीकत फर्मों से ऑनलाइन ई-निविदा दिनांक 13.12.2024 को समय 10:00 एएम तक आमंत्रित की जाती है जिसका UBN No. ZDH2425WSRC00546 है। विस्तृत विवरण https://sppp.rajasthan.gov.in व https://eproc.rajasthan.gov.in पर देखा व डाउनलोड किया जा सकता है।

सरपंच, ग्राम पंचायत सखबारा — ग्राम विकास अधिकारी, ग्राम पंचायत सखबारा

कार्यालय ग्राम पंचायत अतरसूमा पंसं बसेड़ी धौलपुर (राज.)

क्रमांकःग्रा.प. /लेखा/निविदा/2024/32 दिनांक :- 02.12.2024

निविदा सूचना

इस कार्यालय द्वारा पन्द्रवांह वित्त आयोग योजनान्तर्गत स्वीकृत 04 निर्माण कार्य हेतु निविदा आमंत्रित है। जिसे राज एसपीपीपी पोर्टल/ई प्रोक्क पोर्टल अथवा कार्यालय में आकर देखा जा सकता है।

NIB No. ZDH2425A0383

UBN No. ZDH2425WSOB00550-552

सरपंच, ग्राम पंचायत अतरसूमा पंचायत समिति बसेड़ी — ग्राम विकास अधिकारी, ग्राम पंचायत अतरसूमा पंचायत समिति बसेड़ी

बाड़ी : घर के बाहर खड़ी बोलेरो को चुरा ले गए चोर

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

बाड़ी। शहर के कायस्थ पाड़ा मोहल्ले के पास न्यू कॉलोनी में घर के बाहर रखी एक बोलेरो गाड़ी को चोरों द्वारा चोरी करने का मामला सामने आया है। घटना की जानकारी पीड़ित को बुधवार सुबह हुई जब वह नींद से जागा और बाहर घूमने गया तो गाड़ी गायब मिली। इस पर पीड़ित और मोहल्ले वासियों ने गाड़ी को इधर-उधर काफी तलाश किया लेकिन उसका कोई सुराग नहीं लगा। ऐसे में पीड़ित ने पुलिस के 100 नंबर पर घटना की सूचना दी है जिसके बाद कोतवाली पुलिस गाड़ी की तलाश में जुटी है। कायस्थ पाड़ा न्यू कॉलोनी निवासी पीड़ित गाड़ी मालिक सोनी सिंह पुत्र शिबू कोली ने बताया कि वह बोलेरो गाड़ी आरजे 11 यूए 1487 चलाता है। जिसका वह मालिक है।और बोलेरो को भाड़े पर चलाकर अपने बच्चों का पेट पालन करता है। मंगलवार की शाम करीब 6:30 बजे वह भाड़े से वापस लौटा तो उसने रोज की तरह अपनी बोलेरो गाड़ी को घर के बाहर खड़ा कर दिया। रात को खाना खाने के बाद सभी लोग सो गए। बुधवार सुबह 5 बजे वह नींद से जागा और बाहर गया तो गाड़ी गायब मिली। इस पर उसने पड़ोसियों को जगाया और पूरी घटना की जानकारी दी। पड़ोसियों ने भी गाड़ी की काफी तलाश की जिसका कोई सुराग नहीं लगा। इसके बाद पास के निजी स्कूल में लगे सीसीटीवी कैमरे में जाकर देखा तो रात करीब 03 बजे गाड़ी रोड से निकलती हुई देखी है। ऐसे में पुलिस के 100 नंबर पर घटना की जानकारी दी है। कोतवाली पुलिस द्वारा मामले की जांच की जा रही है। गाड़ी मालिक सोनी सिंह की पत्नी सरोज ने बताया कि उनका गाड़ी के भाड़े से ही पेट पालन होता है। रात में गाड़ी घर के बाहर खड़ी थी। उसे देर रात कोई चुरा कर ले गया है। ऐसे में गाड़ी नहीं मिली तो वह पूरी तरह बर्बाद हो जाएंगे। बच्चों का पालन भी नहीं हो पाएगा। ऐसे में पुलिस प्रशासन से पीड़ित परिवार ने गाड़ी बरामद करने की गुहार लगाई है।

न्यायालयः- सिविल न्यायाधीश एवं न्यायिक मजिस्ट्रेट, बाड़ी जिला धौलपुर

क्रमांकः-39 दिनांकः- 03.12.2024.

उपर्युक्त विषय में लेख है कि इस न्यायालय में विचाराधीन दीवानी सीओएस प्रकरण संख्या 38/24 व उनवान अरविन्द बनाम मुन्नी वगैरह में वादी अरविन्द ने दावा जनहित में पेश किया अतः कोई व्यक्ति उक्त दावा में पक्षकार बनना चाहता है तो दिनांक 20.01.25 को सिविल न्यायाधीश एवं न्यायिक मजिस्ट्रेट बाड़ी में उपस्थित आवे।

सिविल न्यायाधीश
न्यायिक मजिस्ट्रेटट बाड़ी

कार्यालय ग्राम पंचायत रतनपुर पंसं बसेड़ी धौलपुर (राज.)

क्रमांकःग्रा.प. /लेखा/निविदा/2024/62 दिनांक :- 02.12.2024

निविदा सूचना

इस कार्यालय द्वारा स्थानीय विधायक निधि कोष एवं एसडीआरएफ योजनान्तर्गत स्वीकृत 2 निर्माण कार्यों हेतु जी सिड्यूल की दरों के आधार पर ई-निविदा आमंत्रित की है। जिसे राज एसपीपीपी एवं ई प्रोक्क पोर्टल पर अथवा कार्यालय में आकर देखा जा सकता है।

NIB No. ZDH2425A0382 UBN No. ZDH2425WSOB00548-549

सरपंच, ग्राम पंचायत रतनपुर पंचायत समिति बसेड़ी — ग्राम विकास अधिकारी, ग्राम पंचायत रतनपुर पंचायत समिति बसेड़ी

संपादकीय

अब और बढ़ेगी महंगाई की मार तेल-दवा-पढ़ाई और यात्रा पर सीधा असर, रुपये में आई भारी गिरावट

रुपये की कीमत गिरने का असर सीधे-सीधे आम उपभोक्ता की जेब पर पड़ता है। पहले ही लोग महंगाई की मार झेल रहे हैं, अब यह और बढ़ जाएगी। डॉलर के मुकाबले रुपए की कीमत में गिरावट से अर्थव्यवस्था को एक और झटका लगा है। चालू वित्तवर्ष की दूसरी तिमाही में सकल घरेलू उत्पाद घट कर 5.4 फीसद पर आ गया। उसमें सबसे बुरी गत विनिर्माण और आठ प्रमुख औद्योगिक क्षेत्रों की रही। थोक और खुदरा महंगाई अपने उच्च स्तर पर बनी हुई हैं। विदेशी मुद्रा भंडार लगातार कम हो रहा है। ऐसे में डालर के मुकाबले रुपए की कीमत अब तक के सर्वाधिक निचले स्तर 84.76 पर पहुंच जाने से स्वाभाविक ही चिंता बढ़ गई है। रुपए की कीमत गिरने का असर सीधे-सीधे आम उपभोक्ता की जेब पर पड़ता है। पहले ही लोग महंगाई की मार झेल रहे हैं, अब यह और बढ़ जाएगी। इसलिए कि कच्चे तेल से लेकर खाने के तेल, दवाओं के लिए कच्चा माल आदि बहुत कुछ बाहर से मंगाना पड़ता है, जिसका भुगतान डालर में करना पड़ता है। फिर विदेश यात्रा और विदेशों में पढ़ाई कर रहे छात्रों पर भी खर्च का बोझ बढ़ जाएगा।

रुपए की कीमत गिरने की बड़ी वजह फिलहाल डालर के मजबूत होने और नवनिर्वाचित अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की ब्रिक्स देशों को डालर का उपयोग न करने पर सौ फीसद शुल्क लगाने की चेतावनी बताई जा रही है। पर लंबे समय से रुपए की कीमत में नरमी का रुख बना हुआ है। कहा जा रहा था कि सरकार विदेशी मुद्रा भंडार के जरिए इस नरमी को कम करने का प्रयास करती रही, मगर नाकाम साबित हुई है। इसकी एक वजह बढ़ती महंगाई है, जो रिजर्व बैंक के ऊंची रेपो दर लागू करने के बावजूद काबू में नहीं आ रही। फिर, जब से अमेरिकी डालर मजबूत होना शुरू हुआ है और ट्रंप राष्ट्रपति चुने गए हैं, विदेशी निवेशकों ने भारत से अमेरिका की तरफ रुख कर लिया है। निर्यात में बढ़ोतरी लाना सरकार के सामने बड़ी चुनौती है। मगर फिर भी हकीकत से आंखें चुराने की कोशिश ही देखी जाती है। जब केंद्र में यूपीए सरकार थी, तब भाजपा कहते न थकती थी कि रुपए की गिरती कीमत उसका इकबाल गिरने की निशानी है। मगर विचित्र है कि वह खुद इसे संभाल नहीं पा रही।

तनावपूर्ण जिंदगी जीने के आदी होते जा रहे लोग, चिंता की गुत्थियां को समझना टेढ़ी खीर

सुविधापरस्ती की अंधाधुंध होड़ के बीच चिंता और उससे उपजे तनाव की बात भी जोर-शोर से चल रही है। ढेरों प्रश्न उठाए जा रहे हैं कि चिंता क्या है, चिंता होती क्यों है, इसके क्या कारण हैं, इससे कैसे दूर रहा जाए? इन्हें समझना इतना कठिन क्यों है? चिंतक भी चिंता में हैं। वे समझाते हैं कि चिंतन ही चिंता से बचने का उपाय है। चिंतन की गहराई में उतरे बिना चिंता को नहीं समझा जा सकता है। परेशान लोग नए प्रश्नों और शंकाओं की झड़ी लगा देते हैं। चिंतन में कैसे उतरा जाए? क्या चिंता से चिंतन में उतरा जा सकता है? दरअसल, चिंता जैसी गूढ़ गुत्थी सुलझाना और जान पाना सदैव अधूरा ही है। यों चिंताओं को जानना बहुत आसान मालूम पड़ता है। चिंताएं हर व्यक्ति को होती हैं। हमारे इर्द-गिर्द चिंता की कमी नहीं है।

चिंता से बचने के उपाय व्यक्ति को खुद ही खोजने होंगे। सामान्य तौर पर जो हमारी पहुंच या नजरों से परे है, वही चिंता के कारण होते हैं। अधिकतर चिंताओं का संबंध भूत और भविष्य से हुआ करता है। भूतकाल बीत चुका है, भविष्य अनदेखा है। आज पूरी दुनिया द्रुत गति से विकसित हो रही है। आर्थिक संपन्नता के साथ-साथ लोग सुविधा संपन्न भी हो गए हैं। सुविधापरस्ती की अंधाधुंध होड़ के बीच चिंता और उससे उपजे तनाव की बात भी जोर-शोर से चल रही है। ढेरों प्रश्न उठाए जा रहे हैं कि चिंता क्या है, चिंता होती क्यों है, इसके क्या कारण हैं, इससे कैसे दूर रहा जाए? इन्हें समझना इतना कठिन क्यों है? चिंतक भी चिंता में हैं। वे समझाते हैं कि चिंतन ही चिंता से बचने का उपाय है। चिंतन की गहराई में उतरे बिना चिंता को नहीं समझा जा सकता है। परेशान लोग नए प्रश्नों और शंकाओं की झड़ी लगा देते हैं। चिंतन में कैसे उतरा जाए? क्या चिंता से चिंतन में उतरा जा सकता है? दरअसल, चिंता जैसी गूढ़ गुत्थी सुलझाना और जान पाना सदैव अधूरा ही है। यों चिंताओं को जानना बहुत आसान मालूम पड़ता है। चिंताएं हर व्यक्ति को होती हैं। हमारे इर्द-गिर्द चिंता की कमी नहीं है। वे बहुतायत में व्याप्त हैं। इसलिए ऐसा मान लिया जाता है कि हम चिंताओं को बखूबी जानते हैं। मगर ऐसा नहीं है। दुनिया में कई लोग, न केवल चिंताओं से घिरे हुए हैं, बल्कि उसकी कैद में दिखाई पड़ते हैं। वे परेशान हैं, छटपटा रहे हैं, चिंता से मुक्ति का मार्ग खोज रहे हैं। बाबाओं के चक्कर काट रहे हैं, नींद की गोलियां फांक रहे हैं, नशे का सहारा ले रहे हैं। उनकी हंसी कहीं खो गई है। हल्की-सी मुस्कान भी होंठों पर नहीं तैरती दिखती। चेहरे पर खुशी नहीं झलकती। मानो उनकी हंसी, खुशी और मुस्कुराहटों पर चिंताओं की पहरेदारी बैठा दी गई हो! आधुनिकता की भागदौड़ से भरी जीवनचर्या में चिंता का होना स्वाभाविक लगता है। लोग चिंता में घिरे तनावपूर्ण जिंदगी जीने के आदी होते जा रहे हैं और असमय काल के गाल में समा जाते हैं। आज पत्र-पत्रिकाएं, टीवी, इंटरनेट और सोशल मीडिया भी चिंता को लेकर चिंता में दिखते हैं। ये सिखाने में जुटे हैं कि चिंता से कैसे बचें! इनमें हर बार वही बातें, विन्यास, चिंतकों के वही उद्धरण, बचाव के वही तरीके और उपाय दोहराए जाते हैं, लेकिन लोगों के जीवन से चिंता कम होने का नाम नहीं ले रही हैं। वे और भी घनीभूत हो रही हैं। वाट्सऐप, इंस्टाग्राम और यूट्यूब जैसे सोशल मीडिया के मंच ऐसे कथित ज्ञान से अटे पड़े हैं। ये मंच ऐसे ज्ञान को बांटने के मामले में अग्रणी हैं। इनमें सहारा खोजते लोग समय बे-समय चिंताओं से निपटने के ज्ञान को एक-दूसरे को बांट भी रहे हैं। इसके बावजूद न चिंता कम होती दीख रही है और न ही किसी के समझ में आती है! चिंता को समझना टेढ़ी खीर है। इसे ठीक-ठीक समझना भी मानो चिंता का ही विषय है। चिंता निराकार होती है। इसका कोई रूप या आकार-प्रकार नहीं होता। इसकी कोई भौतिक अवस्था नहीं है। इसे छूकर देखना संभव नहीं है। फिर भी इसके बारे में बड़े मजेदार तथ्य हैं। चिंताएं छोटी-बड़ी होती है। जरूरी नहीं है कि जो विषय किसी एक व्यक्ति के लिए चिंता का कारण है, वह दूसरे के लिए भी दुखदायी हो। दूसरे व्यक्ति के लिए वह प्रसन्नता का विषय भी हो सकता है! एकांत में रहने वाले लोग भीड़ की चिंता करते हैं, जबकि भीड़भाड़ में रहने वाला व्यक्ति एकांत से डरता है। हमारे आसपास ऐसे अनेक परिवार हैं, जिनके बच्चे अमेरिका में रहते हैं। एक परिवार के मुखिया अपने बच्चों के पास विदेश में इसलिए नहीं रह पाते कि उन्हें अकेलेपन से डर लगता है। वहां की जीवनशैली ऐसी है। वे वहां दो महीने रुकने की योजना के साथ निकलते हैं और हफ्ते दस दिन में उकताने लगते हैं। वहीं दूसरे परिवार के दंपति पूरे छह महीने रुककर आनंद का अनुभव करते हैं। उन्हें वहां की सुकून और शांति रास आती है। छह महीने में अपने देश लौटते हुए बहुत उदास हो जाते हैं। बहरहाल, चिंता से बचने के उपाय व्यक्ति को खुद ही खोजने होंगे। सामान्य तौर पर जो हमारी पहुंच या नजरों से परे है, वही चिंता के कारण होते हैं। अधिकतर चिंताओं का संबंध भूत और भविष्य से हुआ करता है। भूतकाल बीत चुका है, भविष्य अनदेखा है। इन्हें कुछ किया नहीं जा सकता है, सिवा सोचने के। बस चिंता की जा सकती है। इसलिए चिंता से बचने के लिए वर्तमान में जीने की बात कही जाती रही है। मान लिया जाए कि हम किसी हाइवे या उच्च मार्ग पर चल रहे हैं। मार्ग से गुजरते हुए पीछे किसी दुर्घटना पर नजर पड़ जाए. तो आगे रास्तों में स्वाभाविक तौर पर अफरातफरी होगी। पुलिस व्यवस्था की गहमागहमी हो सकती है। ऐसी स्थिति में आगे और पीछे की बातें ध्यान में रखी जा सकती हैं, उसकी चिंता में घुलने की जरूरत नहीं। रास्ते में जहां तक नजर जाती है, उसे सोचना चाहिए। जो दिख रहा, उसके प्रति सचेत रहा जाए। यही चिंता से मुक्ति का मार्ग है। वर्तमान के प्रति चेतना, यही साक्षी भाव है। चिंता को मिटाना जरूरी काम को निपटाने से होगा। अगर प्रयास के बाद भी काम न निपटे तो यह परिस्थितिजन्य हुआ। इसे स्वीकार करना चाहिए। सही समय की प्रतीक्षा करना चाहिए। यही अपने हाथ में है। बहुत-सी गैर जरूरी चिंताओं से मुक्त होने की बात कही गई है। दरअसल, व्यक्ति की कुल चिंताओं में से गैरजरूरी चिंताओं का अनुपात ही ज्यादा होता है। असल चिंताएं कम होती हैं। बेमतलब की चिंता को त्यागने की जरूरत है। बस वर्तमान का ध्यान रखा जाए। अच्छे पठन-पाठन से भी चिंताओं से बचा जा सकता है। सुलझी सोच के लोग चिंता में नहीं घुलते, चिंताओं से नहीं घिरते, क्योंकि यह चिंता की बात है।

याद रहे अंबेडकर की चेतावनी

करीब 80 से अधिक संविधानों का अवलोकन करने के बाद मैं यही कहूंगा कि लोकतत्र के आधारभूत अवयव और धार्मिक एवं भाषाई अल्पसंख्यकों के लिए जैसे मूल अधिकार भारतीय संविधान प्रदान करता है वैसे कहीं अन्यत्र नहीं मिलते। अल्पसंख्यक अधिकारों की बात करें तो अनुच्छेद 14 15 16 19 के अतिरिक्त अनुच्छेद 252629 और 30 ये अधिकार प्रदान करते हैं। संविधान की 75वीं वर्षगांठ पर संसद में उस पर व्यापक चर्चा को लेकर पक्ष-विपक्ष में सहमति कायम हो गई है। देखना है कि इस चर्चा का क्या स्तर रहता है। यह वर्ष संविधान को लेकर बहुत चर्चित रहा। लोकसभा चुनावों में विपक्ष द्वारा संविधान को बदलने का जो शिगूफा छेड़ा गया था, वह कुछ हद तक जनता को बरगलाने में सफल रहा। संविधान को लेकर किसी भी दुष्प्रचार पर भरोसा नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि विश्व के सबसे विविधतापूर्ण एवं जीवंत लोकतंत्र में अपनी अभी तक की यात्रा के दौरान हमारे संविधान ने हर परीक्षा उत्तीर्ण की है। निस्संदेह 75 वर्षों की यह संवैधानिक यात्रा कई उतार-चढ़ावों से गुजरी है, लेकिन इसी राह पर चलते हुए देश ने प्रत्येक क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की और आज विश्व की पांच सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में शामिल हो गया है। विभिन्न अध्ययनों ने दर्शाया है कि भारतीय संविधान सबसे टिकाऊ है। इसके पीछे संविधान के लचीलेपन एवं अनुकूलता जैसे गुण हैं। यह अन्य संविधानों की तरह जड़ता से ग्रस्त नहीं। कुछ पश्चिमी विद्वान संविधान में व्यापक संशोधनों को लेकर जरूर मखौल उड़ाते हैं, लेकिन वे इससे अनभिज्ञ हैं कि उसके लचीलेपन ने ही संविधान के अस्तित्व को अक्षुण्ण बनाए रखने के साथ ही भारत की एकता सुनिश्चित करने में अहम भूमिका निभाई। असल में पश्चिम के लोग नहीं, बल्कि भारतीय ही यह कला एवं कौशल जानते हैं कि अपनी समस्याओं को कैसे सुलझाया जाए। भारतीय संविधान के स्थायित्वपूर्ण तत्व को शोधार्थियों ने बखूबी स्थापित किया है। शिकागो विश्वविद्यालय में ला स्कूल द्वारा 'लिखित संविधानों का जीवनकाल' शीर्षक से प्रकाशित एक पत्र के अनुसार संविधान बहुत समय तक नहीं चलते। अधिकांश संविधानों का जीवनकाल 15 से 19 वर्षों का होता है। औसत जीवनकाल 17 साल बताया गया है। अध्ययन के अनुसार, 'करीब आधे संविधान 18 साल तक खत्म हो जाते हैं और 50 वर्ष के पड़ाव तक केवल 19 प्रतिशत ही कायम रह पाते हैं। उनके जल्द दम तोड़ देने की दर काफी अधिक है। करीब सात प्रतिशत संविधान अपना दूसरा साल नहीं देख पाते।' इस लिहाज से देखा जाए तो हमारे संविधान द्वारा 75 साल का पड़ाव पार करना बहुत कुछ कहता है। करीब 80 से अधिक संविधानों का अवलोकन करने के बाद मैं यही कहूंगा कि लोकतत्र के आधारभूत अवयव और धार्मिक एवं भाषाई अल्पसंख्यकों के लिए जैसे मूल अधिकार भारतीय संविधान प्रदान करता है, वैसे कहीं अन्यत्र नहीं मिलते। अल्पसंख्यक अधिकारों की बात करें तो अनुच्छेद 14, 15, 16, 19 के अतिरिक्त अनुच्छेद 25,26,29 और 30 ये अधिकार प्रदान करते हैं। यह एक तथ्य है कि प्राचीन लोकतंत्रों में किसी मत को मानने का अधिकार तो है, किंतु मत का प्रचार-प्रसार मूल अधिकारों में शामिल नहीं। भारत की संविधान सभा में कुछ ईसाई सदस्यों ने इसके पक्ष में दलील दी कि मत प्रचार ईसाइयत के केंद्र में है और उसे मूल अधिकार के रूप में मान्यता दी ही जानी चाहिए। नेहरू, सरदार पटेल और अन्य लोगों ने इस तर्क को स्वीकार कर लिया। इसमें भी अनुच्छेद 28 उल्लेखनीय है जो राज्य निधि से पूर्णतः पोषित किसी शिक्षा संस्थान में धार्मिक शिक्षा के प्रसार को प्रतिबंधित करता है। इसके पीछे सरकारी स्कूलों में हिंदू बहुसंख्यकों के धर्म प्रचार को अवरुद्ध करने की मंशा थी। एक राष्ट्र के रूप में भारत के चरित्र पर दृष्टि डालें तो वह सभ्यतागत रूप से पंथनिरपेक्ष एवं लोकतांत्रिक प्रकृति वाला रहा है। इसके पर्याप्त साक्ष्य ऋग्वेद से लेकर तमाम अन्य धार्मिक ग्रंथों में मिलते हैं। हालांकि, ब्रिटिश राज और हमारी राजनीति के नेहरू युग में भारतीयों के दिमाग में यही भरा गया कि हमने ये विचार ब्रिटेन और अमेरिका से लिए हैं। भारत में हजारों वर्ष पुरानी लोकतांत्रिक परंपराओं से जुड़े साक्ष्यों के आलोक में ऐसी धारणा को चुनौती दी जानी चाहिए। संविधान की प्रारूप समिति के प्रमुख डा. भीमराव आंबेडकर ने भी ऐसा किया था। उन्होंने यह भी कहा था कि केवल राजनीतिक लोकतंत्र ही कारगर नहीं रह सकता। उसका दायरा सामाजिक एवं आर्थिक लोकतंत्र तक विस्तारित होना चाहिए। इस लक्ष्य की पूर्ति हेतु उन्होंने एवं उनकी प्रारूप समिति ने राज्य को निर्देश हेतु राज्य के नीति निर्देशक तत्वों को आकार दिया। केंद्र और राज्यों की सरकारों ने भी विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से इसे नए आयाम दिए। मिसाल के तौर पर मोदी सरकार ने 10 करोड़ से अधिक घरों को जल से नल, एलपीजी गैस और शौचालय जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराई हैं। राज्य सरकारें भी अपनी योजनाएं चला रही हैं। यह दर्शाता है कि हमारी सरकारों ने सामाजिक एवं आर्थिक लोकतंत्र से लेकर सभी नागरिकों को समान अवसर प्रदान करने में डा. आंबेडकर की सलाह को कितनी गंभीरता से आत्मसात किया है। पूर्णतः लोकतंत्र की कसौटी पर खरा उतरने के लिए किसी राष्ट्र में आठ अपरिहार्य तत्व होने चाहिए। ये आठ पहलू हैं-अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, अंतरात्मा की स्वतंत्रता और मूल स्वतंत्रता एवं मौलिक अधिकारों के प्रति अटूट प्रतिबद्धता, पंथनिरपेक्षता के प्रति कटिबद्धता, राज्य और पंथ-मजहब का पृथक्करण, सरकार का गणतांत्रिक स्वरूप, विधि के समक्ष समता एवं विधि का समान संरक्षण, प्राण एवं दैहिक स्वतंत्रता का अधिकार, लैंगिक समानता और सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार। इस पर गर्व की अनुभूति होनी चाहिए कि भारतीय संविधान इन सभी कसौटियों पर खरा उतरता है। यही गुण उसे अन्य संविधानों पर बढ़त दिलाते हैं। अपनी सफल संवैधानिक यात्रा के बीच हमें संविधान शिल्पी डा. आंबेडकर की चेतावनी भी सदैव याद रखनी चाहिए। डा. आंबेडकर ने चेताया था कि हमें असंवैधानिक तौर-तरीकों, सविनय अवज्ञा और तथाकथित क्रांति से बचना चाहिए। वह इसे लेकर आश्वस्त थे कि संविधान कारगर होने के साथ ही इतना मजबूत एवं लचीला है कि वह देश को एकजुट रखने में सफल होगा। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा था कि अगर चीजें बिगड़ती हैं तो उसका कारण यह नहीं होगा कि हमने खराब संविधान दिया, बल्कि यह कहना होगा कि उसका पालन करने वाले अच्छे नहीं। एक ऐसे दौर में जब हमारे नेता हमें जाति जैसे विभिन्न विभाजक बिंदुओं पर विभाजित करने के प्रयासों में जुटकर विभिन्न मोर्चों पर हमारी सफलता को खारिज करने में लगे हैं तो हमें डा. आंबेडकर के इन शब्दों को सवैद याद रखना होगा।

(लेखक लोकतांत्रिक मामलों के विशेषज्ञ एवं वरिष्ठ स्तंभकार हैं।)

हिंद-प्रशांत क्षेत्र में ड्रैगन की सक्रियता से दुनिया भर में बढ़ी चिंता

मगर लंबे समय से पाकिस्तान और चीन के रवैये की वजह से सीमा पर अक्सर तनाव और टकराव के हालात पैदा होते रहे हैं और उसके लिए कौन जिम्मेदार रहा है, वह अब दुनिया जानती है। बिना किसी उकसावे के चीन वास्तविक नियंत्रण रेखा के पास जिस तरह की गतिविधियां चलाता है, उसे किसी भी कसौटी पर उचित नहीं कहा जा सकता। भारत कूटनीतिक स्तर पर इस मसले को अक्सर उठाता रहा है। समय-समय पर होने वाली बातचीत के बाद कुछ समय तक सीमा पर शांति की स्थिति दिखती है, मगर फिर चीन की ओर से कोई न कोई ऐसी गतिविधि शुरू हो जाती है, जिससे उसकी मंशा पर संदेह होता है।

भारत को लेकर चीन का रवैया अब तक भरोसेमंद नहीं रहा है। अक्सर भारत और चीन के बीच बातचीत में वास्तविक नियंत्रण रेखा पर शांति कायम रखने और एक-दूसरे के क्षेत्र में किसी भी तरह की गतिविधियां या दखलअंदाजी न करने पर सहमति बनती है, मगर कुछ समय बाद चीन के पांव फिर बहकने लगते हैं। अपने पड़ोसी देशों के साथ संबंधों को सहज और शांतिपूर्ण रखने के लिए भारत ने न केवल अपनी ओर से हर स्तर पर पहल की है, बल्कि कई बार विपरीत स्थितियों में भी सकारात्मक रुख दिखाया है। मगर लंबे समय से पाकिस्तान और चीन के रवैये की वजह से सीमा पर अक्सर तनाव और टकराव के हालात पैदा होते रहे हैं और उसके लिए कौन जिम्मेदार रहा है, वह अब दुनिया जानती है। बिना किसी उकसावे के चीन वास्तविक नियंत्रण रेखा के पास जिस तरह की गतिविधियां चलाता है, उसे किसी भी कसौटी पर उचित नहीं कहा जा सकता। भारत कूटनीतिक स्तर पर इस मसले को अक्सर उठाता रहा है। समय-समय पर होने वाली बातचीत के बाद कुछ समय तक सीमा पर शांति की स्थिति दिखती है, मगर फिर चीन की ओर से कोई न कोई ऐसी गतिविधि शुरू हो जाती है, जिससे उसकी मंशा पर संदेह होता है। ज्यादा दिन नहीं बीते हैं, जब भारत और चीन के बीच बातचीत के बाद कई सकारात्मक पहलकदमियां हुईं और शांति बहाली की उम्मीद जगी। इसके तहत वास्तविक नियंत्रण रेखा पर अपने सैनिकों को पीछे लौटाने के कदम उठाए गए। मगर पिछले कुछ वर्षों में भारत को लेकर चीन का जैसा रुख सामने आया है, उसके मद्देजनर यह आशंका लगातार बनी हुई है कि दोनों देशों के बीच तनाव के हालात में सुधार की स्थितियां कब तक बनी रहेंगी। अब हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन की बढ़ती सैन्य आक्रामकता ने बहुस्तरीय तनाव में बढ़ोतरी की है। वास्तविक नियंत्रण रेखा पर फिलहाल शांति को भारत राहत के रूप में देख सकता है, लेकिन अगर हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन की गतिविधियों की वजह से दुनिया भर में चिंता बढ़ रही है, तो यह भारत के लिए भी सचेत रहने का वक्त है। शायद यही वजह है कि वैश्विक स्तर पर बढ़ती चिंता की पृष्ठभूमि में नौसेना प्रमुख एडमिरल दिनेश त्रिपाठी ने सोमवार को कहा कि पूर्वी लद्दाख में भारतीय और चीन की सेना के बीच गतिरोध भले खत्म हुआ है, मगर हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन की मंशा नहीं बदली है। उस क्षेत्र और दक्षिण चीन सागर में चीन की सैन्य ताकत का प्रदर्शन भारत के लिए चिंता का विषय है। यह हकीकत है कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चीन खुद को इस रूप में पेश कर रहा है, जिसमें उसे दुनिया की सबसे बड़ी शक्ति के तौर पर देखा-माना जाए। यह उसकी अपनी स्थितियों के अनुकूल हो सकता है, लेकिन इस क्रम में वह अपने पड़ोसी देशों की संप्रभुता का हनन या उनके सामने जोखिम पैदा करके करना चाहता है, तो यह हर लिहाज से गलत है। सवाल है कि अरुणाचल प्रदेश में उसकी गतिविधियों को किस रूप में देखा जाएगा और उसके क्या कारण हैं? भारत अगर सीमा से संबंधित विवाद के सभी प्रश्नों का हल करना चाहता है, तो चीन को इस पर सकारात्मक प्रतिक्रिया देनी चाहिए और अपनी ईमानदार इच्छाशक्ति के साथ शांति के लिए बनी सहमति पर अमल करना चाहिए।

राजमार्गों पर अतिक्रमण, संसद में पेश हुई चौंकाने वाली रिपोर्ट

यह जानना निराशाजनक है कि राष्ट्रीय राजमार्गों पर अवैध कब्जे और अतिक्रमण को लेकर उदासीनता का परिचय दिया जा रहा है। हाल में संसद में दी गई एक जानकारी के अनुसार पिछले तीन वर्षों में राजमार्गों पर अतिक्रमण के मामलों में न तो किसी पर कोई मामला दर्ज किया गया और न ही कोई जुर्माना वसूला जा सका। इससे संतुष्ट नहीं हुआ जा सकता कि राजमार्गों पर होने वाले कब्जे एवं अतिक्रमण को हटाने का काम होता रहता है, क्योंकि ऐसा करने वालों के खिलाफ कोई दंडात्मक कार्रवाई न होने से वे फिर से राजमार्गों को बाधित करने आ जाते हैं।

देश में राजमार्गों पर अतिक्रमण के मामले में सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय केवल राज्य सरकारों को दोष नहीं दे सकता क्योंकि प्रश्न यह है कि उसकी अपनी एजेंसियां क्या कर रही हैं? किसी राजमार्ग पर अवैध कब्जे या अतिक्रमण को हटाकर कर्तव्य की इतिश्री इसलिए नहीं की जानी चाहिए क्योंकि इसकी गारंटी नहीं कि वहां फिर से अतिक्रमण नहीं होगा। यह जानना निराशाजनक है कि राष्ट्रीय राजमार्गों पर अवैध कब्जे और अतिक्रमण को लेकर उदासीनता का परिचय दिया जा रहा है। हाल में संसद में दी गई एक जानकारी के अनुसार पिछले तीन वर्षों में राजमार्गों पर अतिक्रमण के मामलों में न तो किसी पर कोई मामला दर्ज किया गया और न ही कोई जुर्माना वसूला जा सका। इससे संतुष्ट नहीं हुआ जा सकता कि राजमार्गों पर होने वाले कब्जे एवं अतिक्रमण को हटाने का काम होता रहता है, क्योंकि ऐसा करने वालों के खिलाफ कोई दंडात्मक कार्रवाई न होने से वे फिर से राजमार्गों को बाधित करने आ जाते हैं। इसका पता चलता इससे चलता है कि इस वर्ष मध्य प्रदेश में राजमार्गों से 1866 अवैध कब्जे हटाए गए, महाराष्ट्र में 1062 और गुजरात में 1153। इसी तरह एनसीआर से 92 अवैध कब्जे हटाने पड़े। क्या कोई यह दावा करने की स्थिति में है कि ये अवैध कब्जे फिर से नहीं हुए होंगे? भरी-पूरी आशंका यही है कि इनमें से कुछ कब्जे फिर से हो गए होंगे। समझना कठिन है कि राजमार्गों को बाधित करने वालों के खिलाफ इतनी उदारता क्यों बरती जा रही है? यह समझा जाना चाहिए कि राजमार्गों पर अतिक्रमण और अवैध कब्जा करने वालों के खिलाफ दंडात्मक कार्रवाई किए बिना आवागमन को सुगम बनाए रखना संभव नहीं। जब राजमार्ग अतिक्रमण और अवैध कब्जे का शिकार होते हैं तो केवल यातायात ही बाधित नहीं होता, बल्कि दुर्घटनाओं का जोखिम भी बढ़ता है। यह एक तथ्य है कि राजमार्गों पर होने वाली दुर्घटनाएं और उनमें मरने एवं घायल होने वालों की लगातार संख्या बढ़ रही है। राजमार्गों पर अतिक्रमण के मामले में सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय केवल राज्य सरकारों को दोष नहीं दे सकता, क्योंकि प्रश्न यह है कि उसकी अपनी एजेंसियां क्या कर रही हैं? किसी राजमार्ग पर अवैध कब्जे या अतिक्रमण को हटाकर कर्तव्य की इतिश्री इसलिए नहीं की जानी चाहिए, क्योंकि इसकी गारंटी नहीं कि वहां फिर से अतिक्रमण नहीं होगा। अपने देश में तो स्थिति यह है कि यदि कहीं आज अतिक्रमण हटाया जाता है तो कल वह फिर से कायम हो जाता है। यह भी किसी से छिपा नहीं कि कई बार राजमार्गों पर अस्थायी अतिक्रमण होता है। व्यस्त समय में शहरी इलाकों में कई राजमार्गों के किनारे पर दुकानें लग जाती हैं या फिर आटो-टैंपों और बसें सवारियां उतारने-चढ़ाने का काम करने लगती हैं। इस पर तब तक कोई ध्यान नहीं देता, जब तक लंबा जाम न लग जाए या फिर कोई हादसा न हो जाए। यह ठीक है कि सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय ने अपने क्षेत्रीय कार्यालयों के साथ हाईवे प्रशासन को अवैध कब्जे और अतिक्रमण की जांच के लिए राजमार्गों के निरीक्षण का निर्देश दिया है, लेकिन ऐसे किसी निर्देश की तो जरूरत ही नहीं पड़नी चाहिए थी, क्योंकि यह देखना तो उनका प्राथमिक दायित्व है कि राजमार्गों में किसी तरह की कोई बाधा न खड़ी होने पाए।

आईसीसी रैंकिंग में शतक के बावजूद जायसवाल को हुआ नुकसान, विराट कोहली को भी लगा झटका

नई दिल्ली। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ शतकीय पारी के बावजूद यशस्वी जायसवाल को ताजा टेस्ट रैंकिंग में नुकसान हुआ है। उनके अलावा विराट कोहली को भी झटका लगा है। अब वह एक स्थान के नुकसान के साथ 14वें पायदान पर पहंच गए हैं। टेस्ट गेंदबाजों की रैंकिंग में तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह की बादशाहत बरकरार है। वह शीर्ष स्थान पर काबिज हैं।

जायसवाल और विराट को लगा झटका

भारतीय टीम फिलहाल ऑस्ट्रेलिया दौरे पर है। पांच मैचों की टेस्ट सीरीज का पहला मुकाबला खेला जा चुका है। पर्थ में खेले गए इस मैच में टीम इंडिया ने 295 रनों से जीत दर्ज की। इस मुकाबले में शतकीय पारियां खेलने वाले यशस्वी जायसवाल और विराट कोहली को आईसीसी की ताजा रैंकिंग में नुकसान झेलना पड़ा है। 22 वर्षीय बल्लेबाज ने दूसरी पारी में 15 चौके और तीन छक्के की मदद से 161 रन की पारी खेली थी। वहीं, विराट कोहली ने 100* रन बनाए थे। टेस्ट बल्लेबाजों की रैंकिंग में जायसवाल 825 रेटिंग प्वॉइंट्स के साथ चौथे स्थान पर पहुंच गए। उन्हें दो स्थान का नुकसान हुआ है। अब उनकी जगह इंग्लैंड के हैरी ब्रूक दूसरे पायदान पर पहुंच गए हैं। वहीं, किंग कोहली 689 रेटिंग प्वॉइंट्स के साथ 14वें नंबर पर पहुंच गए।

शीर्ष 10 में सिर्फ दो भारतीय बल्लेबाज

पर्थ टेस्ट में ऋषभ पंत का बल्ला कुछ खास नहीं चला। पहली पारी में उन्होंने 37 और दूसरी पारी में सिर्फ एक रन बनाया। हालांकि, इससे उनकी रैंकिंग पोजीशन में कोई खास प्रभाव नहीं पड़ा। वह 736 रेटिंग प्वॉइंट्स के साथ छठे पायदान पर काबिज हैं। शीर्ष पंत और जायसवाल ही दो भारतीय बल्लेबाज हैं।

बुमराह का जलवा बरकरार

टेस्ट गेंदबाजों की रैंकिंग में भारत के तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह की बादशाहत बरकरार है। वह 883 रेटिंग प्वॉइंट्स के साथ शीर्ष पर बने हुए हैं। उनके अलावा शीर्ष 10 में रविचंद्रन अश्विन और रवींद्र जडेजा हैं। बुमराह ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ खेले गए पहले मैच में कुल आठ विकेट चटकाए थे। वहीं, अश्विन को इस मैच में आराम मिला था। वह चौथे पायदान पर बने हुए हैं। दिग्गज स्पिनर रवींद्र जडेजा को एक स्थान का लाभ हुआ है और वह छठे पायदान पर पहुंच गए हैं। उनके खाते में 794 अंक हैं।

19 एशिया कप-13 साल के वैभव ने 6 छक्के लगाए, आईपीएल में 1.1 करोड़ में बिके थे

नई दिल्ली। भारत ने अंडर-19 एशिया कप में यूएई को 10 विकेट से हरा दिया। इसी के साथ भारतीय टीम सेमीफाइनल में पहुंच गई है। शारजाह के मैदान पर यूएई ने टॉस जीतकर बैटिंग करने का फैसला लिया। टीम 44 ओवर में 137 रन ही बना सकी। भारत की ओर से युद्धजीत गुहा ने 3 विकेट लिए।

जवाब में भारत ने बिना विकेट खोए 16.1 ओवर में 143 रन बनाकर लक्ष्य हासिल कर लिया। ओपनर वैभव सूर्यवंशी और आयुष म्हात्रे ने अर्धशतक लगाए। वैभव ने 46 बॉल पर 76 और आयुष ने 51 बॉल पर 67 रन बनाए। वैभव ने अपनी पारी में 6 छक्के और 3 चौके लगाए। वैभव को पिछले आईपीएल ऑक्शन में राजस्थान रॉयल्स ने 1.1 करोड़ रुपए में खरीदा था।

वैभव ने छक्का लगाकर भारत को मैच जिताया

13 साल के वैभव सूर्यवंशी पहले दो मैच में फ्लॉप रहे थे। इस मैच में उन्होंने अपनी पहली ही बॉल पर सिक्स लगाया। वैभव ने 32 गेंदों पर अर्धशतक पूरा किया। उन्होंने 46 बॉल पर नाबाद 76 रन बनाए। पारी में 6 छक्के और 3 चौके भी लगाए। उन्होंने ओपनर आयुष म्हात्रे के साथ मिलकर 97 बॉल में 143 रन जोड़े। वैभव ने छक्का लगाकर भारत को मैच जिताया।

आयुष ने 38 गेंदों पर फिफ्टी पूरी की

आयुष म्हात्रे ने अपनी 67 रन की पारी में 4 चौके और 4 छक्के लगाए। उन्होंने 38 गेंदों पर अपनी फिफ्टी पूरी की। आयुष ने 51 बॉल का सामना किया और 131.37 के स्ट्राइक रेट से रन बनाए। यूएई की पूरी टीम 137 रन पर सिमट गई। मेजबान टीम 44 ओवर ही खेल पाई। यूएई की ओर से मुहम्मद रेयान ने सबसे ज्यादा 35 रन की पारी खेली जबकि ओपनर अक्षत राय 26 रन बनाकर आउट हुए। भारतीय टीम की ओर से युद्धजीत गुहा ने 3 विकेट झटके, जबकि चेतन शर्मा और हार्दिक राज ने 2-2 विकेट लिए। केपी कार्तिकेय और आयुष म्हात्रे को एक-एक विकेट मिला।

मैं कहीं भी खेल सकता हूं, बस प्लेइंग-11 में रहना चाहता हूं - केएल राहुल

नई दिल्ली। भारतीय बल्लेबाज केएल राहुल ने एडिलेड टेस्ट से 2 दिन पहले कहा है कि वे किसी भी पोजिशन पर बल्लेबाजी कर सकता हूं। बुधवार को राहुल से उनकी फेवरेट बैटिंग पोजिशन पर सवाल किया गया था। वे ओवल मैदान पर प्रैक्टिस के बाद मीडिया से बातचीत की।

32 साल के केएल राहुल से जब पूछा गया कि आप किस बैटिंग पोजिशन में सहज हैं तो उन्होंने कहा- कहीं भी...मैं पहले भी कह चुका हूं कि मैं बस प्लेइंग-11 में रहना चाहता हूं। टीम में आप मुझे कहीं भी फिट कर दीजिए। मैं बस टीम के लिए खेलना चाहता हूं।क्या आपको आपकी बैटिंग पोजिशन के बारे में बताया गया है... इस सवाल के जवाब में राहुल ने

मुस्कुराते हुए कहा- हां, लेकिन यह भी कहा गया है कि मैं आप लोगों से शेयर न करूं। मैंने बैटिंग ऑर्डर में बदलाव के मेंटल चैलेंज से पार पा लिया है। मैंने कई स्थान पर बल्लेबाजी की है। इससे पहले यह थोड़ा चुनौतीपूर्ण था, न सिर्फ तकनीकी रूप से, बल्कि मानसिक रूप से भी। बल्लेबाजी क्रम बदलने से मैं सोचता था कि शुरुआती 20-25 गेंदों को कैसे खेलना है। मैं कितनी जल्दी आक्रामक हो सकता हूं मुझे कितना सावधान रहने की आवश्यकता है? ये चीजें थीं जो शुरू में मुश्किल थीं।

राहुल की बैटिंग पोजिशन पर सवाल क्यों

राहुल ने पर्थ टेस्ट में रोहित की गैरमौजूदगी में ओपनिंग की थी। उन्होंने पहली पारी में 74 बॉल 26 और दूसरी पारी में 176 बॉल पर 77 रन बनाए थे। उन्होंने दूसरी पारी में यशस्वी जायसवाल के साथ 201 रन की रिकॉर्ड ओपनिंग साझेदारी की थी।

अब कप्तान रोहित शर्मा टीम से जुड़ चुके हैं। उनके आने से सवाल उठ रहे हैं यशस्वी के साथ ओपन कौन करेगा? केएल राहुल या फिर रेग्युलर ओपनर रोहित शर्मा। यह सवाल इसलिए भी उठ रहा है कि रोहित शर्मा पिछली 5 पारियों से फिफ्टी नहीं लगा सके हैं। वे 39 रन की बना सके हैं।

एक्सपर्ट्स ने कहा- राहुल ओपनिंग करें

पर्थ टेस्ट के बाद कई क्रिकेट एक्सपर्ट्स भारत के बैटिंग ऑर्डर पर अपनी-अपनी राय दे रहे हैं। इस बीच अनुभवी बैटर चेतेश्वर पुजारा ने कहा था कि यशस्वी जायसवाल के साथ रोहित को ओपन करना चाहिए। साथ ही केएल राहुल को नंबर-3 पर भेजना चाहिए।

किंग्स्टन टेस्ट- बांग्लादेश ने वेस्टइंडीज को 101 रन से हराया, 2 मैचों की सीरीज 1-1 से ड्रॉ

किंगस्टन। बांग्लादेश ने किंग्स्टन टेस्ट में वेस्टइंडीज को 101 रन से हरा दिया है। इस जीत से बांग्लादेशी टीम 2 मैचों की सीरीज 1-1 से ड्रॉ कराने में कामयाब हो गई है। टीम को पहले मुकाबले में 201 रन की पराजय झेलनी पड़ी थी। अब दोनों टीमों के बीच 8 दिसंबर से 3 वनडे और 3 टी-20 मैचों की सीरीज खेलेगी जाएगी। मुकाबले के चौथे दिन मंगलवार को बांग्लादेश ने 193/5 के स्कोर से खेलना शुरू किया। टीम ने दूसरी पारी में 268 रन बनाते हुए विंडीज को 287 रन का टारगेट दिया। जवाब में वेस्टइंडीज की टीम 185 रन पर ऑलआउट हो गई। पहली पारी में एक विकेट लेने वाले तैजुल इस्लाम ने दूसरी पारी में 5 विकेट झटके। उन्हें प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया। वहीं, जॉयडन सिल्स प्लेयर ऑफ द सीरीज रहे।

29 से अपनी पारी को आगे बढ़ाने वाले जाकेर अली 91 रन बनाए। उन्होंने मिडिल-लोअर ऑर्डर में तैजुल इस्लाम, हसन महमूद और नाहिद राणा के साथ अहम साझेदारियां करके टीम का स्कोर 268 रन पहुंचा दिया। जाकेर ने तैजुल इस्लाम के साथ 34, हसन महमूद के साथ 32 और नाहिद राणा के साथ 22 रनों की पार्टनरशिप की।

सचिन ने बेटी सारा को बनाया अपने फांडेडेशन की डायरेक्टर, गरीब बच्चों की भलाई के लिए काम करता है तेंदुलकर फाउंडेशन

नई दिल्ली। पूर्व क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर की बेटी सारा तेंदुलकर फाउंडेशन की नई डायरेक्टर बनाई गई हैं। यह फाउंडेशन गरीब बच्चों की भलाई से जुड़े काम करता है। इसकी जानकारी खुद सचिन ने सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए दी। इससे पहले सचिन की पत्नी अंजलि इस फाउंडेशन की डायरेक्टर थीं।

सचिन ने सोशल मीडिया पर लिखा, मुझे यह बताते हुए बेहद खुशी हो रही है कि मेरी बेटी सारा एसटीएफ में डायरेक्टर के रूप में शामिल हो गई हैं। उन्होंने यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन से क्लिनिकल एंड पब्लिक हेल्थ न्यूट्रिशन में मास्टर डिग्री हासिल की है।

2019 में की हुई थी फाउंडेशन की शुरुआत

सचिन तेंदुलकर फाउंडेशन की शुरुआत साल 2019 में सचिन और उनकी पत्नी अंजलि तेंदुलकर ने की थी।

सारा के इंस्टाग्राम पर 7.3 मिलियन से ज्यादा फॉलोअर

मुंबई में अपनी स्कूली शिक्षा पूरी करने वाली सारा तेंदुलकर सोशल मीडिया पर काफी सक्रिय हैं। उनके इंस्टाग्राम पर 7.3 मिलियन से ज्यादा फॉलोअर हैं। सारा पहले से ही एसटीएफ के कामों में सहयोग करती रही हैं।

व्यापार

जियो-हॉटस्टार वेबसाइट का डोमेन अब वायकॉम 18 के पास दुबई के बच्चों ने दिया, दिल्ली के एप डेवलपर ने खरीदा था

नई दिल्ली। जियो हॉटस्टार वेबसाइट डोमेन को रिलायंस के स्वामित्व वाली वायाकॉम 18 मीडिया प्राइवेट लिमिटेड को ट्रांसफर कर दिया गया है। अपडेटेड डबलूएचओआईएस रिकॉर्ड इसकी पुष्टि करता है कि वायाकॉम 18 मीडिया प्राइवेट लिमिटेड डोमेन का नया मालिक है।

यह डोमेन भारत की दो सबसे बड़ी एंटरटेनमेंट और टेलीकॉम कंपनी रिलायंस जियो और डिज्नी+ हॉटस्टार की मर्जर ब्रांडिंग से जुड़ा हुआ है। दरअसल, दिल्ली के एक एप डेवलपर ने जियो हॉटस्टार डोमेन को खरीद लिया था और उसने डोमेन देने के बदले रिलायंस से 93,345 (लगभग 94 लाख रुपए) की मांग रखी थी।

रिलायंस की ओर से मांग नहीं मानने पर उस डेवलपर ने डोमेन को दुबई में रहने वाले दो बच्चों को बेच दिया था। उसके बाद दोनों बच्चों ने कहा था कि वह इस डोमेन को रिलायंस जियो को फ्री में ट्रांसफर कर देंगे, उनको इसके लिए कोई पैसा नहीं

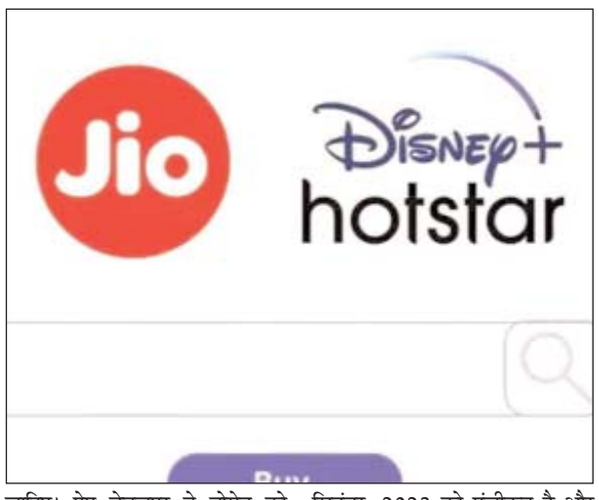

चाहिए। ऐप डेवलपर ने डोमेन को 2023 में खरीदा था जब जियोसेनेमा-हॉटस्टार के मर्जर की बातचीत ही शुरू हुई थी।

डबलूएचओआईएस डेटा से भी पता चला है कि डोमेन का स्वामित्व मुकेश अंबानी के स्वामित्व वाली वायकॉम 18 के पास है, जो 20 सितंबर, 2023 को पंजीकृत है और 20 सितंबर, 2026 तक वैध है, जिसका अंतिम अपडेट 2 दिसंबर, 2024 को दर्ज किया गया है। जीओ हॉटस्टार.कॉम के लिए रजिस्ट्रार, प्रशासनिक और तकनीकी संपर्क मनीष पेनुली के रूप में सूचीबद्ध है, जो वायकॉम 18 मीडिया प्राइवेट लिमिटेड का प्रतिनिधित्व करते हैं।

20 दिन पहले 14 नवंबर को डिज्नी स्टार इंडिया और रिलायंस के वॉयकॉम-18 का मर्जर हुआ है। इसमें डिज्नी हॉटस्टार और जियो सिनेमा भी शामिल हैं। इस मर्जर के बाद ये देश का सबसे बड़ा एंटरटेनमेंट नेटवर्क बन गया है। डिज्नी-रिलायंस एंटरटेनमेंट के पास अब 2 ओवर द टॉप यानी, ओटीटी और 120 चैनल के साथ 75 करोड़ दर्शक हो गए हैं। रिलायंस ने इस जॉइंट वेंचर के लिए 11,500 करोड़ रुपए का निवेश किया है। मर्जर की प्रोसेस बीते करीब एक साल से चल रही थी।

दोनों कंपनियों ने बयान जारी करते हुए कहा था- ये डील 70,352 करोड़ रुपए में हुई है। मर्जर के बाद बनी कंपनी में रिलायंस की 63.16 प्रतिशत और डिज्नी की 36.84 प्रतिशत हिस्सेदारी होगी। इस नई कंपनी की चेयरपर्सन नीता अंबानी होंगी। वाइस चेयरपर्सन उदय शंकर होंगे। ये कंपनी को स्ट्रैटेजिक गाइडेंस देंगे।

स्विगी इंस्टामार्ट से सामान मंगाना महंगा हो सकता है, कंपनी डिलिवरी चार्ज बढ़ाने पर कर रही विचार

नई दिल्ली। ऑनलाइन ग्रॉसरी डिलीवर करने वाला प्लेटफॉर्म स्विगी इंस्टामार्ट से ऑर्डर करना अब महंगा हो सकता है। क्योंकि कंपनी हर ऑर्डर पर डिलीवरी चार्ज बढ़ाने की तैयारी कर रही है। स्विगी यह फैसला कंपनी को मुनाफे में लाने के प्लान के तहत कर रही है।इस बात की जानकारी मनीकंट्रोल ने कंपनी के चीफ फाइनेंशियल ऑफिसर राहुल बोथरा के हवाले से दी है। कंपनी ने मंगलवार को वित्त वर्ष 2024-25 की दूसरी तिमाही के नतीजों के ऐलान के दौरान सीएफओ ने बताया कि समय के साथ डिलीवरी चार्ज बढ़ोतरी की उम्मीद है। हालांकि, उन्होंने बदलाव आने के लिए कोई डेडलाइन नहीं दी। रिपोर्ट्स के मुताबिक, डिलीवरी केवल स्विगी वन के लॉयल्टी प्रोग्राम वाले यूजर्स के लिए फ्री है। अन्य यूजर्स को एक डायनेमिक

फीस का भुगतान करना होगा। इस सेक्टर में मार्केट लीडर जोमैटो की स्वामित्व वाला ब्लिंकिट हर ऑर्डर पर डिलीवरी फीस चार्ज करता है, इसका कोई लॉयल्टी प्रोग्राम नहीं है। वहीं, जेप्टो भी जेप्टो पास (लॉयल्टी प्रोग्राम) यूजर्स के लिए डिलीवरी चार्ज माफ करता है, लेकिन दूसरों से शुल्क वसूलता है, जैसा कि स्विगी इंस्टामार्ट करता है।

दूसरी तिमाही में स्विगी को 626 करोड़ का घाटा

ऑनलाइन फूड डिलीवरी प्लेटफॉर्म स्विगी को वित्त वर्ष 2024-25 की दूसरी तिमाही में 626 करोड़ रुपए का नुकसान (कॉन्सोलिडेटेड नेट लॉस) हुआ है।

पिछले साल की समान तिमाही में कंपनी को 657 करोड़ रुपए का लॉस हुआ था। सालाना आधार पर कंपनी का घाटा 4.72 प्रतिशत कम हुआ है। कंपनी ने मंगलवार (3 दिसंबर) को क्यू2एफवाई25 के नतीजे जारी किए। जुलाई-सितंबर तिमाही में रेवेन्यू 30.33 प्रतिशत बढ़कर 3601 करोड़ रुपए रहा। जुलाई-सितंबर 2023-24 में कंपनी ने 2763 करोड़ रुपए का रेवेन्यू जनरेट किया था। वस्तुओं और सेवाओं को बेचने से होने वाली कमाई को रेवेन्यू या राजस्व कहा जाता है। स्विगी 13 नवंबर को शेयर बाजार में लिस्ट हुई थी, तब से अब तक इसके शेयर में 14.18 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है।

उतार-चढ़ाव के बाद शेयर बाजार हरे निशान पर बंद सेंसेक्स 110 अंक ऊपर, निफ्टी सपाट

नई दिल्ली। घरेलू शेयर बाजार में हफ्ते के तीसरे कारोबारी दिन सेंसेक्स 110.58 अंक चढ़कर 80,956.33 पर और निफ्टी 10.30 अंक बढ़कर 24,467.45 पर बंद हुआ। अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपया 6 पैसे गिरकर 84.74 (अनंतिम) के सर्वकालिक निचलने स्तर पर बंद हुआ।

कैसी रही बाजार की चाल

एचडीएफसी बैंक, आईसीआईसीआई बैंक के शेयरों में खरीदारी और ताजा विदेशी फंड प्रवाह के कारण बेंचमार्क सेंसेक्स बुधवार को 110 अंक ऊपर चढ़ा। 30 शेयरों वाला सेंसेक्स 110.58 अंक या 0.14 प्रतिशत बढ़कर 80,956.33

अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान यह 399.64 अंक या 0.49 प्रतिशत बढ़कर 81,245.39 अंक तक पहुंचा। दूसरी ओर, एनएसई निफ्टी 10.30 अंक या 0.04 प्रतिशत की मामूली बढ़त के साथ 24,467.45 अंक पर पहुंच गया।

एचडीएफसी बैंक, बजाज फिनसर्व के शेयरों में दिखी मजबूती

सेंसेक्स के 30 शेयरों में एचडीएफसी बैंक, बजाज फिनसर्व, एनटीपीसी, टाइटन, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज, टेक महिंद्रा, बजाज फाइनेंस और आईसीआईसीआई बैंक सबसे ज्यादा लाभ में रहे। भारती एयरटेल, टाटा मोटर्स, अदाणी पोर्ट्स, पावर ग्रिड, मारुति, आईटीसी, रिलायंस इंडस्ट्रीज और अल्ट्राटेक सीमेंट पिछड़ने वाले शेयरों में शामिल रहे। एक्सचेंज के आंकड़ों के अनुसार, विदेशी संस्थागत निवेशक मंगलवार को खरीदार बन गए और उन्होंने 3,664.67 करोड़ रुपये मूल्य की इक्विटी खरीदी।

एशियाई और यूरोपीय बाजारों में दिखा मिला-जुला रुख

एशियाई बाजारों में टोक्यो में तेजी रही जबकि सियोल, शंघाई और हांगकांग में गिरावट दिखी। यूरोपीय बाजारों में ज्यादातर में तेजी रही। मंगलवार को अमेरिकी बाजार भी बहुत हद तक सकारात्मक दायरे में ही बंद हुआ। बुधवार को जारी एक मासिक सर्वेक्षण से पता चला है कि भारत की सेवा पीएमआई नवंबर में गिरकर 58.4 पर आ गई, जबकि इस क्षेत्र में रोजगार में मजबूत वृद्धि दर्ज की गई। वैश्विक तेल मानक ब्रेंट क्रूड का भाव 0.34 प्रतिशत बढ़कर 73.91 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गया।

आईपीएल की ब्रांड वैल्यू 1 लाख करोड़ हुई, टीमों में चेन्नई सुपर किंग्स की वैल्यू सबसे ज्यादा

नई दिल्ली। दुनिया की सबसे पॉपुलर टी-20 क्रिकेट लीग आईपीएल की टोटल ब्रांड वैल्यू 13 प्रतिशत बढ़कर 12 बिलियन डॉलर यानी 1.01 लाख करोड़ रुपए पहुंच गई है। ब्रांड वैल्यूएशन करने वाली कंपनी ब्रांड फाइनेंस की नई रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई है। 2023 में पहली बार आईपीएल की टोटल ब्रांड वैल्यू 10 बिलियन डॉलर के पार गई थी। पिछले साल यह 10.7 बिलियन डॉलर रही थी। वहीं 2009 में वैल्यूएशन 2 बिलियन डॉलर यानी 16,943 करोड़ रुपए रही थी। ब्रांड फाइनेंस रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि आईपीएल की चार टीमों-चेन्नई सुपर किंग्स, मुंबई इंडियंस, रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु और कोलकाता नाइट राइडर्स की ब्रांड वैल्यू भी पहली बार

100 मिलियन डॉलर से ज्यादा हो गई है। आईपीएल की 10 टीमों में सीएसके की ब्रांड वैल्यू सबसे ज्यादा है। चेन्नई की वैल्यू 52 प्रतिशत बढ़कर 1,033 करोड़ रुपए हो गई है। वहीं ब्रांड वैल्यू के मामले में मुंबई दूसरे नंबर पर है, इसकी वैल्यूएशन 36 प्रतिशत बढ़कर 1,008 करोड़ रुपए पहुंच गई है।

आरसीबी 991 करोड़ रुपए (+67त्न) की ब्रांड वैल्यू के साथ तीसरे नंबर पर है। वहीं केकेआर 923 करोड़ रुपए की ब्रांड वैल्यू के साथ चौथे नंबर पर है। इस लिस्ट में एसआरएच पांचवें नंबर पर है।

सनराइजर्स हैदराबाद की ब्रांड वैल्यू में सबसे ज्यादा ग्रोथ

सभी टीमों में सनराइजर्स हैदराबाद की ब्रांड वैल्यू में सबसे ज्यादा ग्रोथ है। टीम की वैल्यूएशन 76 प्रतिशत बढ़कर 719 करोड़ रुपए हो गई है। यह लीग के बढ़ते इंटरनेशनल इंफ्लूएंस और फाइनेंशियल अचीवमेंट को दर्शाता है।

वहीं राजस्थान रॉयल्स की ब्रांड वैल्यू 30 प्रतिशत, दिल्ली कैपिटल्स की 24 प्रतिशत, पंजाब किंग्स की 49 प्रतिशत और लखनऊ सुपर जायंट्स की 29 प्रतिशत बढ़ी है। गुजरात टाइटंस की ब्रांड वैल्यू सबसे कम 5 प्रतिशत ही बढ़ी है।

शिक्षक अनुभव का भंडार, प्रेरक बनकर आगामी पीढ़ी को प्रेरित करें - मदन दिलावर

शिक्षा संकुल में पुरस्कृत शिक्षक फोरम, राजस्थान और शिक्षा विभाग के तत्वावधान में भामाशाह सम्मान समारोह आयोजित

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। शिक्षा संकुल स्थित स्कूल शिक्षा परिषद सभागार में बुधवार को पुरस्कृत शिक्षक फोरम, राजस्थान और शिक्षा विभाग के तत्वावधान में भामाशाह सम्मान समारोह आयोजित किया गया, जिसकी अध्यक्षता शिक्षा ?एवं पंचायतीराज मंत्री मदन दिलावर ने की। %राजकीय विद्यालयों के विकास में भामाशाह और प्रेरक शिक्षक% विषय पर आयोजित राज्य स्तरीय सेमिनार में जिला एवं राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कृत राजकीय विद्यालयों के प्रेरक शिक्षकों को सम्मानित किया गया। इस दौरान राज्य की शिक्षा में गुणवत्ता पर भी चर्चा हुई। शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने इस मौके पर शिक्षकों को ÷अनुभव का भंडार÷ बताते हुए उनके प्रेरक योगदान की सराहना की। उन्होंने शिक्षकों से आगामी पीढ़ी को प्रेरित करने और कमजोर व अभावग्रस्त क्षेत्रों में शिक्षा के स्तर को सुधारने की अपील की। शिक्षा मंत्री ने शिक्षक समाज की भूमिका और उनके योगदान पर प्रकाश डाला। इस मौके पर राइजिंग राजस्थान समिट 2024 के तहत तीन एमओयू भी साइन किए गए। इससे पहले पुरस्कृत शिक्षक फोरम, राजस्थान के महासचिव रामेश्वर प्रसाद शर्मा ने शिक्षा मंत्री को साफा और स्मृति चिन्ह भेंट किया। शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने कार्यक्रम की शुरुआत द्वीप प्रज्वलन करके की। उन्होंने विद्यार्थियों के समग्र विकास में शिक्षक की भूमिका को अहम बताया। मंत्री दिलावर ने कहा कि राजकीय विद्यालयों में शिक्षक न केवल ज्ञान का प्रसार कर रहे हैं, बल्कि प्रेरक बनकर जनसहयोग द्वारा शिक्षा के आधारभूत स्तंभ भी बन रहे हैं। उन्होंने कहा कि श्रेष्ठ राजस्थान बनाने के लिए श्रेष्ठ शिक्षा, श्रेष्ठ विद्यार्थी और श्रेष्ठ इंसान बनाना जरूरी है। इसके लिए अपने आपको गलाना पड़ता है, जलाना पड़ता है, प्रकाशवान होना पड़ता है, तभी एक सच्चे और श्रेष्ठ का शिक्षक का उदय होता है। शिक्षा मंत्री ने कहा कि एक शिक्षक अनुभव का भंडार है और उनसे बहुत कुछ सीखा जा सकता है। शिक्षा मंत्री ने कहा कि श्रेष्ठ शिक्षकों को अपनी आने वाली पीढ़ी को प्रेरित करने की आवश्यकता है। इसके लिए 40 की उम्र के बाद शिक्षकों को स्वयं आकर प्रदेश की शिक्षा देश की श्रेष्ठ शिक्षा बनाने पर प्रयास करना चाहिए। अपनी श्रेष्ठता का लाभ कमजोर बच्चों एवं अभावग्रस्त विद्यालयों में देकर ऐसा किया जा सकता है। उन्होंने ये भी कहा कि शिक्षा का मतलब है दिशा देने वाला, संस्कार देने वाला, जागृति लाने वाला और ये सभी गुण एक शिक्षक में मौजूद हैं। शिक्षा मंत्री ने शिक्षकों को केवल पाठ्यक्रम तक सीमित न रहकर विद्यार्थियों के जीवन में दिशा, संस्कार और जागरूकता का संचार करने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि यह आयोजन न केवल शिक्षकों का सम्मान है, बल्कि शिक्षा की श्रेष्ठता, भावी पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत और समग्र विकास की दिशा में एक कदम साबित होगा।

राजकीय विद्यालयों में विकास के लिए 15 लाख रुपए से अधिक राशि भामाशाहों के जरिए लाने वाले प्रेरक शिक्षकों का सेमिनार में सम्मान किया गया। शिक्षा मंत्री दिलावर ने शॉल ओढ़ाकर और समृति चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया एवं शिक्षकों का हौसला बढ़ाया। सेमिनार में 16 से अधिक शिक्षकों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के अंत में शिक्षा मंत्री ने पुरस्कृत शिक्षक फोरम, राजस्थान द्वारा इस तरह के आयोजन पर खुशी जताते हुए सम्मानित लोगों में स्वयं को सम्मानित करने पर आभार जताया।

शिक्षा के साथ कौशल विकास जरूरी - हरिभाऊ

16वां प्रकृति अंतर्राष्ट्रीय वृत्तचित्र फिल्म महोत्सव आयोजित

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर/जोधपुर। राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने कहा कि शिक्षा के साथ कौशल विकास प्रशिक्षण जरूरी है। उन्होंने कहा कि नई शिक्षा नीति विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास से जुड़ी है। इसमें शिक्षा के डिजिटाइजेशन पर विशेष ध्यान दिया गया है। उन्होंने वृत्तचित्रों को शिक्षा का प्रभावी माध्यम बताते हुए दृश्य–श्रव्य माध्यम के जरिए शिक्षा के प्रभावी प्रसार का आह्वान किया। राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने बुधवार को जोधपुर में 16वें प्रकृति अंतरराष्ट्रीय वृत्तचित्र फिल्म महोत्सव के शुभारंभ पश्चात संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों में एक दूसरे से संवाद जरूरी है इससे अर्जित ज्ञान और विचारों का आदान प्रदान होगा। उन्होंने कहा कि शिक्षा में प्रभावी प्रस्तुतिकरण ही महत्वपूर्ण है। सीईसी के माध्यम से शिक्षा के डिजिटाइजेशन की नई राहें खुली है। इससे आने वाले समय में भारत शिक्षा क्षेत्र में और तेजी से शिक्षा में अग्रसर हो सकेगा। उन्होंने वृत्त चित्रों को शिक्षित करने का महत्वपूर्ण माध्यम बताते हुए उच्च शिक्षा में इसके प्रभावी उपयोग पर जोर दिया। उन्होंने वृत्तचित्रों के इतिहास की चर्चा करते हुए कहा कि वृत्तचित्र निर्माण में भारत आरंभ से ही अग्रणी रहा है। वृत्तचित्रों से प्रभावी संदेश जाता है और इसका जितना अधिक शिक्षा में उपयोग होगा, देश आगे बढेगा। राज्यपाल ने कहा कि देश को विश्व गुरु बनाने के लिए हम सबको मिलकर काम करना है। उन्होंने कहा कि हमारी अर्थव्यवस्था जल्द ही दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनकर उभरेगी। युवाओं पर मुझे विश्वास है, हम सब यह मिल कर सकते है। यह कार्यक्रम नए विचारों के लिए महत्वपूर्ण मंच सिद्ध होगा। सीईसी के डायरेक्टर प्रोफेसर जे बी नड्डा ने कहा कि सीईसी विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के अंतर-विश्वविद्यालय केंद्रों में से एक है। यह उच्च शिक्षा स्तर पर डिजिटल शिक्षा के प्रचार और प्रसार के लिए समर्पित है। उन्होंने कहा कि हम डिजिटल सामग्री प्रारूपों की एक विस्तृत श्रृंखला के साथ एशिया के सबसे बड़े डिजिटल शिक्षा प्रसार प्लेटफार्म के रूप में अपनी भूमिका निभा रहे हैं। उन्होंने बताया कि 1997 से, सीईसी देश में आईसीटी आधारित शिक्षण वातावरण बनाने के लिए हर साल इस प्रकृति फिल्म महोत्सव का आयोजन करता आ रहा है। यह महोत्सव जिज्ञासा और रचनात्मक दिमागों के साथ जुड़ने के लिए नए विचार सामने लाता है। जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. के एल श्रीवास्तव ने कहा कि पर्यावरण, विकास,मानवाधिकार और स्वच्छ भारत है। यह केवल थीम नहीं है बल्कि पूरे विश्व के मानव समाज की प्रकृति का दिग्दर्शन है। आरंभ में 16वें प्रकृति इंटरनेशनल डॉक्यूमेंट्री फ़िल्म फेस्टिवल पर आधारित 5 मिनट की शॉर्ट फिल्म की भी प्रस्तुति हुई। प्रकृति इंटरनेशनल डॉक्यूमेंट्री फ़िल्म फेस्टिवल जोधपुर ईएमएमआरसी के निदेशक प्रोफेसर बीआर गाढ़ी ने स्वागत उद्बोधन दिया। सी ई सी के संयुक्त निदेशक डॉ सुनील मेहरू ने सी ई सी की उपलब्धियों और फिल्म फेस्टिवल के बारे मे जानकारी दी।

शेखावटी अग्रवाल समाज को दिया मोक्षधाम लीज पर महापौर डॉ. सौम्या गुर्जर ने सौंपा अनापत्ति प्रमाण पत्र

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। नगर निगम ग्रेटर जयपुर क्षेत्राधिकार में विद्याधर नगर बस डिपो के पास, मुरलीपुरा सीकर रोड़ स्थित मोक्षधाम के विकास, रखरखाव, जीर्णोद्धार तथा सभी समाजों के उपयोग हेतु एक आदर्श आधुनिक सर्व सुविधायुक्त, सुविकसित शवदाह स्थल बनाने एवं नियमित संचालन, सहयोग करने हेतु शेखावटी अग्रवाल समाज संस्था को 20 वर्ष की अवधि तक लीज पर दिया गया है। जिसके तहत महापौर डॉ. सौम्या गुर्जर ने शेखावटी अग्रवाल समाज संस्था को अनापत्ति प्रमाण सौंपा।

इस अवसर पर चैयरमेन नरेन्द्र शेखावत एवं संस्था के अध्यक्ष, सदस्य मौजूद रहे। महापौर डॉ. सौम्या गुर्जर ने बताया कि मानव जीवन के अंतिम यात्रा की पवित्र भूमि को सभी समाजो के उपयोग हेतु अपने खर्चे पर विकसित करने, अत्याधुनिक बनाने, संचालन करने, रख-रखाव विकास हेतु शेखावटी अग्रवाल समाज संस्था को 20 वर्ष की अवधि के लिये मोक्षधाम को अत्याधुनिक बनाने के लिये लीज पर दिया गया है। इससे मोक्षधाम की व्यवस्थाओं में निश्चित रूप से सुधार होगा तथा शेखावटी अग्रवाल समाज संस्था के मोक्षधाम के विकास, सुधार कार्यो को देखकर अन्य समाज, दानदाता भी प्रेरित होगे।

ज्योति रथ कलश यात्रा में स्वागत के लिए उमड़ा जन सैलाब

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। शांतिकुंज हरिद्वार के तत्वावधान में 2400 तीर्थों का जल एवं रज संग्रहित कर विश्व शांति, पर्यावरण संरक्षण, मानव कल्याण एवं गायत्री परिवार के संस्थापक पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी के विचारों को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से संचालित ज्योति रथ कलश यात्रा आज 28वें दिन न्यू सांगानेर रोड स्थित एसबीबीजे कॉलोनी, उदय नगर गणेश नगर ,राजेंद्र प्रसाद नगर एवं कृष्णापुरी मैं पहुंची। यहां गायत्री परिवार के वरिष्ठ कार्यकर्ता नवल गुप्ता सहित बड़ी संख्या में लोगों ने ज्योति कलश की पूजा की। ज्योति कलश के दर्शन करने के लिए जन सैलाब उमड़ पड़ा। लोगों ने गायत्री मंत्र का उच्चारण करते हुए पुष्प वर्षा के साथ ज्योति कलश का स्वागत किया एवं ज्योति कलश की आरती कीद्य गायत्री परिवार के लोगों ने हम सुधरेंगे युग सुधरेगा हम बदलेंगे युग बदलेगा जैसे नारों से आसपास का वातावरण गुंजित कर दिया। गायत्री परिवार के जोन प्रभारी एवं मुख्य ट्रस्टी ओम प्रकाश अग्रवाल के अनुसार यह रथ यात्रा शांतिकुंज हरिद्वार में 1926 से प्रज्वलित अखंड दीपक के 2026 में 100 वर्ष होने के उपलक्ष्य एवं गायत्री परिवार के संस्थापक पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी की सहधर्मिणी एवं महान साधिका भगवती देवी शर्मा के शताब्दी वर्ष पूर्ण होने पर पूरे देश में आयोजित की जा रही है। गायत्री परिवार जयपुर शहर जिला संयोजक केदार शर्मा ने बताया कि जयपुर शहर में यात्रा का शुभारंभ 6 नवंबर को हुआ था तथा यह यात्रा 8 दिसंबर तक जयपुर शहर में आयोजित होगी तत्पश्चात ग्रामीण क्षेत्रों में ज्योति रथ कलश यात्रा का संचालन होगाद्य यात्रा का समापन बसंत पंचमी 2026 में होगा।

सीएम भजनलाल शर्मा ने यूपी सीएम से महाकुंभ में राजस्थान पैवेलियन के लिए भूखंड आवंटन का किया अनुरोध

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार प्रदेश की जनता की धार्मिक आस्था और आध्यात्मिक परंपरा के संरक्षण के लिए कृत संकल्पित है। देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से प्रेरणा लेकर राज्य सरकार आस्था धामों के विकास और वरिष्ठ जनों को तीर्थ यात्रा करवाने जैसे कार्य कर रही है। इसी कड़ी में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने संवेदनशीलता दिखाते हुए अगले साल 13 जनवरी से 26 फरवरी 2025 तक उत्तरप्रदेश के प्रयागराज के संगम तट पर आयोजित होने वाले महाकुंभ में राजस्थान के श्रद्धालुओं की सुविधा को ध्यान में रखते हुए सार्थक पहल की है। शर्मा ने उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को पत्र लिखकर कुंभ मेला स्थल के निकट राजस्थान का एक पैवेलियन स्थापित करने के लिए भूखंड आवंटित करने का आग्रह किया है। ये पैवेलियन स्थापित होने से राजस्थान के लाखों श्रद्धालुओं के विश्राम, जलपान तथा चिकित्सा सहित अन्य व्यवस्था सुनिश्चित हो सकेगी। मुख्यमंत्री ने अपने पत्र में आशा व्यक्त की है कि उत्तरप्रदेश सरकार का सहयोग राजस्थान के श्रद्धालुओं के महाकुंभ के अनुभव को बेहतर बनाने के साथ ही देश की सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक परंपरा को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा।

दिनदहाड़े मकान का ताला तोड़कर चोरी

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

भरतपुर। मथुरा गेट थाना क्षेत्र के कृष्णा नगर कॉलोनी में एक बड़ी चोरी की घटना सामने आई है, जहां चोरों ने दिनदहाड़े एक मकान का ताला तोड़कर लाखों रुपए के गहने और 10 हजार रुपए नगद पर हाथ साफ कर दिया। घटना के वक्त मकान मालिक जयप्रकाश बजाज, जो भरतपुर व्यापार महासंघ के कोषाध्यक्ष हैं, अपने परिवार के साथ एक पारिवारिक समारोह में शामिल होने गए हुए थे। जयप्रकाश बजाज ने बताया कि उनका परिवार दोपहर करीब 1 बजे सूर्या सिटी कॉलोनी में आयोजित एक कार्यक्रम में गया हुआ था। पीछे से चोरों ने मकान के मुख्य गेट का ताला तोड़कर अंदर प्रवेश किया और अलमारियों के ताले तोड़ दिए। चोरी में एक सोने की अंगूठी, अन्य छोटी मोटी सोने की वस्तुएं और 10 हजार रुपए नगद चुराए गए। घर की महिलाएं समारोह से लौटकर आएंगी, तब चोरी हुए अन्य सामान की जानकारी मिल सकेगी। चोरी का पता तब चला जब पड़ोसियों ने मकान मालिक को फोन कर घटना की जानकारी दी। जयप्रकाश बजाज तुरंत अपने घर लौटे और देखा कि घर की सभी अलमारियां खुली पड़ी थीं और ताले टूटे हुए थे। मथुरा गेट थाना प्रभारी करण सिंह राठौड़ ने बताया कि सूचना मिलते ही पुलिस और एफएसएल टीम मौके पर पहुंची। जांच में चोरी के सबूत जुटाए जा रहे हैं, और जल्द ही चोरों को पकड़ने का दावा किया गया है। इस घटना से क्षेत्र के लोगों में डर का माहौल है। स्थानीय निवासियों का कहना है कि चोरों के बढ़ते हौसले कानून-व्यवस्था पर सवाल खड़े कर रहे हैं। पुलिस ने गश्त बढ़ाने और सुरक्षा के इंतजाम मजबूत करने का आश्वासन दिया है।

टेम्पल कनेक्ट मीट जयपुर का आयोजन

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। टेम्पल कनेक्ट की ओर से होटल ग्रेंड उनियारा में बुधवार को टेम्पल कनेक्ट मीट्स जयपुर का आयोजन किया। इसमें जयपुर सहित पूरे राजस्थान के 30 से अधिक मंदिरों के महंतों को एक मंच पर लाया गया। टेम्पल कनेक्ट और आई टी सी एक्स के फाउंडर गिरीश वासुदेव कुलकर्णी और आईटीसीएक्स की राष्ट्रीय आयोजन समिति की सदस्य आचार्या हिमानी शास्त्री ने बताया कि कार्यक्रम के माध्यम से फरवरी 2025 में तिरुपति में होने वाले अंतर्राष्ट्रीय मंदिर सम्मेलन और एक्सपो (आईटीसीएक्स)-2025 के लिए प्रदेश के मंदिर प्रतिनिधियों को आमंत्रित किया गया। उन्होंने बताया कि जयपुर, राजस्थान को सांस्कृतिक गौरव प्राप्त है क्योंकि इसे छोटी काशी माना जाता है। इस कार्यक्रम में मंदिर के संरक्षक और ट्रस्टियों की उत्साही भागीदारी देखी गई। जिन्होंने मंदिर प्रबंधन पर अपने दृष्टिकोण साझा किए और आईटीसीएक्स 2025 के मिशन के साथ जुड़ने में गहरी रुचि व्यक्त की। इस ऐतिहासिक सभा ने भारत के आध्यात्मिक और मंदिर प्रशासन तंत्र में राजस्थान के महत्वपूर्ण योगदान को प्रदर्शित किया। कार्यक्रम में गिरिश वासुदेव कुलकर्णी ने मन्दिरों के उत्थान और नवीनीकरण की तकनीक की आवश्यकता को समझाया। साथ ही आगामी कार्यक्रम का निमंत्रण राजस्थान के सभी मंदिरों को दिया।

इस कार्यक्रम का समन्वय आईटीसीएक्स की राष्ट्रीय आयोजन समिति की सदस्य आचार्या हिमानी शास्त्री और आईटीसीएक्स राजस्थान की क्षेत्रीय आयोजन समिति के आचार्य अनुपम जौली ने किया। कार्यक्रम प्रतिष्ठित मंदिरों और उनके प्रबंधकों का एक अद्भुत जमावड़ा बन गया। इस अवसर पर आचार्य गोपाल शरण महाराज, महामंडलेश्वर मुरली मनोहर दास जी महाराज, पंडित संतोष कुमार व्यास, आचार्य संतोष कुमार भट्ट, नटवरलाल पंचा, पंडित गौरव शर्मा, आचार्य देव शर्मा और महंत किशोरी शर्मा सहित अनेक मंदिरों के महामंडलेश्वर, महंत व पुजारी उपस्थित रहे।

पीसीपीएनडीटी एक्ट के तहत सोनोग्राफी मशीन जब्त

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। राज्य पीसीपीएनडीटी प्रकोष्ठ को मुखबिर से मिली सूचना के आधार पर मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी जयपुर द्वितीय की टीम ने जयपुर के गोविन्दगढ़ में भोमियों की ढाणी, ग्राम अनन्तपुरा के एक खेत में पड़ी हुई अवैध पोर्टेबल सोनोग्राफी मशीन जब्त की है। अध्यक्ष राज्य समुचित प्राधिकारी पीसीपीएनडीटी एवं मिशन निदेशक एनएचएम डॉ. भारती दीक्षित ने बताया कि मुखबिर के माध्यम से ग्राम अनन्तपुरा, गोविन्दगढ़ के भोमियों की ढाणी डॉ. बी.एल. मील हॉस्पिटल परिसर स्थित खेत में एक कट्टे में अवैध पोर्टेबल मशीन पड़ी होने की सूचना मिली। सूचना पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, पीसीपीएनडीटी ब्यूरो डॉ. हेमन्त जाखड़ ने मय टीम मौका मुआयना किया। मौके पर ही संबंधित उप मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी जयपुर द्वितीय को बुलाया। इसके बाद टीम ने मौके से अपंजीकृत अवैध पोर्टेबल मशीन जब्त कर ली है। उन्होंने बताया कि इस अवैध मशीन के बारे में अग्रिम अनुसंधान किया जा रहा है।

मशरूम उत्पादन को लेकर सात दिवसीय तकनीकी प्रशिक्षण का आयोजन कल से

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

बीकानेर। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय किसानों को मशरूम उत्पादन तकनीक की जानकारी देने के लिए 06 से 12 दिसंबर तक सात दिवसीय व्यावहारिक एवं प्रायोगिक प्रशिक्षण का आयोजन करने जा रहा है। कृषि महाविद्यालय, बीकानेर के पादप रोग विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ दाताराम कुम्हार ने बताया कि कुलपति डॉ अरुण कुमार के निर्देशानुसार किसानों को मशरूम उत्पादन, संरक्षण, व्यावसायिक खेती समेत विस्तृत जानकारी देने के लिए कृषि महाविद्यालय के पादप रोग विज्ञान विभाग की मशरूम उत्पादन इकाई द्वारा मशरूम उत्पादन तकनीकी विषय पर सात दिवसीय व्यवहारिक एवं प्रायोगिक प्रशिक्षण का आयोजन किया जा रहा है। डॉ दाताराम ने बताया कि इस प्रशिक्षण के लिए अधिकतम कुल 50 सीट्स रखी गयी है। सीट का निर्धारण पहले आओ, पहले पाओ के आधार पर किया जाएगा। किसानों के लिए पंजीयन निशुल्क रखा गया है। अन्य व्यक्तियों के लिए पंजीयन शुल्क 1500 रुपए रखा गया है। प्रशिक्षण के दौरान भोजन एवं रहने की व्यवस्था प्रशिक्षणार्थियों को स्वयं करनी होगी। उन्होने बताया कि इस प्रशिक्षण के दौरान मशरूम की खेती से संबंधित विभिन्न पहलुओं की व्यवहारिक एवं प्रायोगिक जानकारी देश के प्रख्यात मशरूम वैज्ञानिकों द्वारा दी जाएगी।

कुछ ताकतें हैं जो जनता का ध्यान सही मुद्दों से भटका रहीं - पायलट

अजमेर दरगाह और संभल विवाद पर दी प्रतिक्रिया

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

टोंक। कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव और टोंक से विधायक सचिन पायलट बुधवार को विधानसभा क्षेत्र में ग्रामीण क्षेत्र के दौरे पर पहुंचे। यहां पर सचिन पायलट ने मीडिया से बात करते हुए अजमेर दरगाह और संभल विवाद पर बड़ा बयान दिया है। कांग्रेस नेता ने पत्रकारों से बातचीत के दौरान कहा कि संभल विवाद और अजमेर दरगाह के सर्वे मामले पर हमला बोलते हुए कहा कि 1991 में धार्मिक स्थलों की यथास्थिति को बनाये रखने को लेकर कानून बना हुआ है, लेकिन सरकार लोगों का ध्यान भटकाने को धार्मिक स्थलों की खुदाई जैसे काम होने दे रही है। कहीं ना कहीं जो निचली अदालतें हैं, वहां पर इस प्रकार के घटनाक्रम सामने आ रहे हैं जहां पर लोगों में बेवजह तनाव पैदा हुआ है। चाहे वो संभल का मसाला हो या अजमेर का मसाला हो। इस देश में कोई ताकतें हैं जो जानबूझकर चाहती हैं की जनता का ध्यान किसान, महंगाई और बेरोजगारी से हटाकर इन मुद्दों पर आकर्षित किया जाए। इससे तनाव पैदा होता है। संभल में निर्दोष लोगों की मौत हुई है। इसके लिए कोई न कोई जिम्मेदार है। जो ताकतें लोगों को बांटना चाहती हैं उनसे हमें दूर रहना होगा। राहुल गांधी और प्रियंका गांधी के संभल जाने पर उन्होंने कहा कि वो संभल जाकर पीड़ित परिवार से मिलना चाहते थे। उन्हें संभल जाने से रोक दिया गया है। वहां पर एक तनाव का माहौल पैदा करने की कोशिश की जा रही है। भाजपा की राजनीति ध्रुवीकरण पर टिकी हुई है। ये धीमी आंच पर हमेशा कुछ ना कुछ सुलगाने की कोशिश करते रहते हैं। उन्होंने आगे कहा कि यदि आप देश में यह मुहिम छेड़ दें कि हमें हर घर, मकान, पूजा स्थल को खोदकर देखना है, तो इसका कोई अंत नहीं होगा। देश की संसद ने 1991 में एक कानून पारित किया था कि आजादी के बाद जो यथास्थिति है, वह बनी रहेगी। रोजगार, महंगाई कम करने पर बात नहीं हो रही है। किसान धरना दे रहे हैं, देश की राजधानी में हज़ारों लाखों किसान पहुंच रहे हैं। वे एसएसपी कानून बनाने की मांग कर रहे हैं। सरकार को उन पर ध्यान देना चाहिए और संसद में भी चर्चा होनी चाहिए। वहीं किरोड़ी लाल मीणा की तरफ से पिछली रात एसआई भर्ती रद्द मामले में आंदोलन करने वाले नेताओं पर पुलिस कार्रवाई का विरोध करने पर सचिन पायलट ने कहा कि सरकार में शामिल किरोड़ी लाल आवाज उठा रहे हैं। सरकार को जनता की आवाज को सुनना चाहिए। इस दौरान पायलट ने समरावता कांड की न्यायिक जांच किये जाने की मांग उठाई है।

कुछ पल निकालें हंसने को भी

एसकेमंगल

सनातन धर्म में हंसी का महत्व बहुत अधिक है। हंसी को जीवन का एक अंग माना जाता है जो हमें जीवन की चुनौतियों का सामना करने में मदद करती है। हिंदू धर्म में हंसी को कई तरह से महत्व दिया गया है। हिंदू धर्म में हंसी को देवताओं का वरदान माना जाता है। यह माना जाता है कि हंसी से हमारे जीवन में सुख और समृद्धि आती है। हिंदू धर्म में हंसी को जीवन का अंग माना जाता है। यह माना जाता है कि हंसी से हमारे जीवन में सुख और समृद्धि आती है। हिंदू धर्म में हंसी को आत्म-शांति का साधन माना जाता है। यह माना जाता है कि हंसी से हमारे मन में शांति और सुख आता है। हिंदू धर्म में हंसी को सामाजिक संबंधों को मजबूत बनाने का साधन माना जाता है। यह माना जाता है कि हंसी से हमारे सामाजिक संबंध मजबूत होते हैं। हिंदू धर्म में हंसी के महत्व को कई तरह से दर्शाया है। भगवान कृष्ण की हंसी को बहुत महत्व दिया जाता है। यह माना जाता है कि भगवान कृष्ण की हंसी से उनके भक्तों को सुख और समृद्धि मिलती है। भगवान गणेश की हंसी को भी महत्व दिया जाता है। यह माना जाता है कि भगवान गणेश की हंसी से उनके भक्तों को सुख और समृद्धि मिलती है। धर्म में हास्य की देवी को बहुत महत्व दिया जाता है। यह माना जाता है कि हास्य की देवी से हमें हंसी और सुख मिलता है। यह स्पष्ट है कि हिंदू धर्म में हंसी को बहुत महत्व दिया जाता है। हंसी को जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग माना जाता है जो हमें जीवन की चुनौतियों का सामना करने में मदद करती है।आजकल की जीवनशैली में लोग इतने व्यस्त हो गए हैं कि उन्हें हंसने का समय ही नहीं मिलता। इसके अलावा, सोशल मीडिया और अन्य तकनीकी उपकरणों के बढ़ते प्रयोग के कारण लोगों की हंसी और मजाक की आदतें कम होती जा रही हैं। हंसी के महत्व को समझना बहुत जरूरी है। हंसी हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए बहुत फायदेमंद है। यह हमारे तनाव को कम करती है, हमारी प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाती है, और हमारे मूड को बेहतर बनाती है। हंसी को बढ़ाने के लिए जीवनशैली में बदलाव करने होंगे।

मुख्यमंत्री निशुल्क दवा योजना के ऑपरेटर ने मुख्यमंत्री के नाम जिला कलेक्टर को सौंपा ज्ञापन

हिंदुस्तान एक्सप्रेस

बूंदी। अखिल राजस्थान संविदा कंप्यूटर ऑपरेटर महासंघ एकीकृत के बैनर तले मुख्यमंत्री निशुल्क दवा योजना के बूंदी के ऑपरेटर ने मुख्यमंत्री के नाम जिला कलेक्टर को ज्ञापन सोपा ज्ञापन में मैं बताया कि पाली जिले के बाली जिला उपजिला चिकित्सालय के द्वठुस्त4 कंप्यूटर ऑपरेटर राजेंद्र बेरवा ने आत्महत्या कर ली आत्महत्या का कारण 5 महीने से संविदा कार्मिक राजेंद्र बैरवा को मासिक भुगतान नहीं दिया जा रहा था आर्थिक तंगी से परेशान होकर उसने यह कदम उठाया ज्ञापन में दो मुख्य मांग रखी गई जिसमें पहली मांग यह है कि परिवार में से किसी को संविदा पर नियुक्ति और 50 लाख का मुआवजा और दूसरी मांग यह थी कि दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए ज्ञापन देने वालों में धर्मराज सुमन चंद्र प्रकाश माली देवेंद्र शर्मा दीपक सेन रमेश सिंह जितेंद्र नाम आदि कंप्यूटर ऑपरेटर शामिल हुए ।

श्री मांधाता बालाजी मेला महोत्सव एवं आयोजन समिति द्वारा हनुमान धर्मशाला में बैठक

हिंदुस्तान एक्सप्रेस

बूंदी। मांधाता बालाजी मेला समिति के कोषाध्यक्ष महेश शर्मा ने बताया कि 5 दिसंबर को लंका गेट रोड स्थित हनुमान धर्मशाला में श्री मान्धाता बालाजी मेला महोत्सव एवं आयोजन समिति के द्वारा सकल हिन्दू समाज की बैठक का आयोजन सायं 5 बजे किया जायेगा । जिसमें 1 जनवरी से 4 जनवरी तक के आयोजन को लेकर ओर कार्यक्रम के सफल आयोजन को लेकर चर्चा की जाएगी,?मेले को अधिक से अधिक

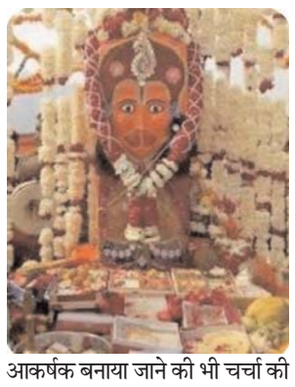

आकर्षक बनाया जाने की भी चर्चा की जाएगी।

राजस्थान पंचायत शिक्षक विद्यालय सहायक संघ का आंदोलन 6 दिसंबर से जयपुर में होगा

हिंदुस्तान एक्सप्रेस

बारां। राजस्थान पंचायत शिक्षक विद्यालय सहायक संघ के प्रदेश स्तरीय आह्वान पर राजस्थान के 24000 पंचायत शिक्षक विद्यालय सहायक 6 दिसंबर को शहीद स्मारक जयपुर में महा आंदोलन करेंगे। संघ जिलाध्यक्ष संजय मेघवाल ने बताया कि राज्य सरकार ने अपने चुंनावी घोषणा पत्र में सभी संविदा कर्मियों को नियमित करने का वादा किया था, लेकिन भाजपा सरकार ने कार्यकाल का एक वर्ष बीतने के बाद भी विद्यालय सहायक पंचायत शिक्षकों का नियमितिकरण शुरू नहीं किया गया। जबकि अन्य विभागों की एसओपी जारी कर दी गई है। पिछले 4 नवंबर से बिकानेर निदेशालय के सामने आज तक धरना अनवरत जारी है फिर भी राज्य सरकार के कानों तक जूं तक नहीं रेंग रही है।

इसी से आक्रोशित होकर संपूर्ण राजस्थान के साथ बारां जिलों के 650 कार्मिक जिले के प्रत्येक ब्लॉक से ब्लॉक अध्यक्ष की अगुवाई में शहीद स्मारक जयपुर में प्रदेश स्तरीय आंदोलन में भाग लेकर सरकार के खिलाफ मोर्चा खोलेंगे। जिलाध्यक्ष ने जिलों के सभी कार्मिकों को ज्यादा से ज्यादा संख्या में आंदोलन में भाग लेने की अपील की है।

निक्षय पोषण योंजना में अब टीबी मरीज को प्रतिमाह मिलेंगे 1000 रुपए

सरकार ने दोगुनी की पोषण राशि, नए पंजीकृत मरीजों को मिलेगा लाभ

बूँदी । राष्ट्रीय क्षय उन्मूलन कार्यक्रम (एनटीईपी) के तहत क्षय (टीबी) रोगियों को अब प्रतिमाह 500 रुपए की जगह 1000 रुपए उनके इलाज की अवधि तक दिए जाएंगे। इस संबंध में आवश्यक दिशा निर्देश जारी करने के साथ ही योजना का लाभ एक नवंबर से शुरू कर दिया गया है।

सीएमएचओ ने बताया कि यह राशि टीबी के पंजीकृत मरीजों को उनके बैंक खाते में नगद हस्तांतरण योजना (डीबीटी) के माध्यम से दिए जाएंगे। एक नवंबर 2024 के बाद निक्षय पोर्टल पर पंजीकृत रोगियों को ही यह लाभ मिल पाएगा। उससे पूर्व पंजीकृत और इलाजरत रोगियों को पूर्व की भांति 500 रूपए प्रतिमाह की दर से ही भुगतान होगा। उन्होंने बताया कि इस योजना के लाभ के लिए सभी टीबी रोगियों को अपने नजदीकी अस्पताल

के टीबी विभाग में जाकर अपना पंजीकरण कराना होगा।इसके साथ में अपने इलाज व जांच से संबंधित सभी तरह के कागजात, बैंक पासबुक और आधार कार्ड की छायाप्रति जमा करवानी होगा। इस योजना का लाभ निजी चिकित्सकों के क्लीनिक से इलाज करवा रहे रोगियों के लिए भी सुलभ है। जिला क्षय रोग अधिकारी डॉ कुलदीप मीणा ने कहा की भारत सरकार की मंशा अनुरूप जिले को भी वर्ष 2025 के अंत तक टीबी मुक्त करने के हर संभव प्रयास सीएमएचओ डॉ ओ पी सामर के निर्देशन मै जारी है, जिसमें आमजन का योगदान भी अपेक्षित है।

जिला स्तरीय शिकायत निराकरण समिति की बैठक का आयोजन

हिंदुस्तान एक्सप्रेस

बारां। अतिरिक्त जिला कलक्टर दिवांशु शर्मा की अध्यक्षता में जिला स्तरीय शिकायत निराकरण समिति की बैठक का आयोजन किया गया। उन्होंने बैठक में बैंकर्स को निर्देशित किया गया कि फसल बीमा में त्रुटियों के प्रकरणों का फसल बीमा कम्पनी के साथ मिलकर शीघ्र निस्तारण कराएं तथा खरीफ 2024 के प्रकरण जो किसी कारणवश बैंक में लंबित रह गए उन प्रकरणों को प्राथमिकता देते हुए पूर्ण करें। जिले में अधिसूचित फसल बीमा कम्पनी एग्रीकल्चर इंश्योरेंस कम्पनी ऑफ इन्डिया लिमिटेड के जिला प्रतिनिधि द्वारा आश्वासन दिया गया कि खरीफ 2022 रबी 2022-23 एवं खरीफ 2023 का शेष क्लेम जल्द ही कृषकों को दिलाया जाएगा। इस संबंध में संयुक्त निदेशक कृषि श्री अतीश कुमार शर्मा ने आगामी सप्ताह तक क्लेम की पूर्ण जानकारी प्रस्तुत करने की बात कही। इससे पहले उन्होंने प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना एवं पुनर्गठित मौसम आधारित योजना अन्तर्गत फसल बीमा पॉलिसी सृजन के दौरान बैंकों द्वारा की गई त्रुटियों के प्रकरणों के बारे में जानकारी दी तथा प्रधानमंत्री फसल बीमा क्लेम की वर्तमान वास्तविक स्थिति के बारे में बताया। इस दौरान लीड बैंक आफिसर जनवेद मीणा एवं जिला शाखा से प्रबन्धक एस.बी.आई,सहायक निदेशक धनराज मीणा, सहायक निदेशक शिवराज मीणा, सांख्यिकी अधिकारी ज्ञानचन्द जाटव, एवं बीमा कम्पनी के जिला समन्वयक मुकेश कुमार शर्मा आदि उपस्थित रहे।

बाल विवाह रोकने हेतु प्रशासन सख्त, सरपंच-पंच का भी दायित्व तय, टालमटोल अब सम्भव नहीं- पालीवाल

हिंदुस्तान एक्सप्रेस

बूंदी। ज़िला प्रशासन, बाल अधिकारिता विभाग, एक्शनएड-यूनिसेफ़ व बाल कल्याण समिति बूंदी द्वारा

बाल विवाह की प्रभावी रोकथाम व बाल संरक्षण विषय पर पंचायत की भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु पंचायती राज प्रतिनिधियों, कार्मिकों एवं ब्लॉक स्तरीय बाल संरक्षण समिति सदस्यों की कार्यशाला का आयोजन केशवराय पाटन पंचायत समिति सभागार में किया गया। कार्यशाला में बाल संदर्भ केंद्र, हरिश्चंद्र माथुर राजस्थान राज्य लोक प्रशासन जयपुर से पधारे कार्यक्रम अधिकारी राजकुमार पालीवाल ने बताया कि राजस्थान पंचायती राज नियम 1996 के अंतर्गत बाल विवाह के रोकथाम हेतु जनप्रतिनिधियों वार्ड पंच, सरपंच का भी दायित्व निर्धारित किया गया है। बाल विवाह होने की सूचना मिलने पर पंचायत समिति सदस्य जिला परिषद सदस्य के द्वारा दोनों के अभिभावकों, रिश्तेदारों, समुदाय से बातचीत कर बाल विवाह को रोकने की समझाइश की जाएगी। बाल विवाह प्रतिषेध अधिकारी यह सुनिश्चित करेंगे कि ग्राम सभा या ग्राम पंचायत के किसी भी सदस्य की ओर से बाल विवाह को प्रोत्साहन न दिया जाए। गांवों में इस अधिनियम एवं बाल विवाह के बारे में जागरूकता पैदा करने का कार्य एवं ग्राम सभा की बैठकों में नियमित रूप से इस विषय पर चर्चा की जाये।

कोर्ट ने तय की सरपंच और पंचायत सदस्यों की जिम्मेदारी: पंचायती राज प्रतिनिधियों की भूमिका पर चर्चा करते हुए बताया कि हाईकोर्ट ने कहा कि राजस्थान पंचायती राज नियम 1996 के तहत गांव में बाल विवाह पर रोक लगाना गांव के सरपंच का कर्तव्य है। कोर्ट ने कहा कि बाल विवाह रोकने की जिम्मेदारी सूची में अंकित गांव के सरपंच और पंचायत सदस्य की होगी। अदालत ने राज्य सरकार को निर्देश दिया इन गांवों के सरपंच और पंच को जागरूक किया जाना चाहिए और सूचित किया जाना चाहिए कि यदि वे बाल विवाह को रोकने में विफल रहते हैं तो बाल विवाह निषेध अधिनियम 2006 की धारा 11 के तहत उन्हें जिम्मेदार ठहराया जाएगा।

प्रधान वीरेंद्र सिंह हाडा ने अपने उद्बोधन में कहा कि बाल विवाह मुक्त बूंदी बनाने के लियें आवश्यक है कि सर्वप्रथम गाँवों को और फ़िर पंचायतों को बाल विवाह मुक्त बनाया जाए जिसके लियें सभी हम सभी जनप्रतिनिधि व कार्मिक मिलजुल कर प्रयास करेंगें। बाल कल्याण समिति अध्यक्ष सीमा पोद्दार ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए कहा कि बाल अपराधों की रोकथाम में ग्राम पंचायत स्तर पर जनप्रतिनिधियों की प्रभावी भूमिका होती है। माननीय न्यायालय ने अंतरिम उपाय के तौर पर यह निर्देश दिए है कि बाल विवाह को रोकने के लिए जांच के सम्बन्ध में रिपोर्ट ली जाएगी। एक्शनएड-यूनिसेफ़ जिला समन्वयक ज़हीर आलम ने कार्यशाला के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि बाल विवाह रोकने, बाल श्रम और बाल यौन हिंसा के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाने के लिए जनप्रतिनिधियों को तैयार करने तथा बाल संरक्षण और बाल अधिकारों से जुड़े काम करने वाली ग्राम स्तर की संस्थाओं के सदस्यों को सशक्त करने के उद्देश्य से इन कार्यशालाओं का पंचायत स्तर पर आयोजन किया जा रहा है। सामाजिक कुरीतियों को मिटाने में राजनीतिक इच्छा शक्ति के साथ संवेदनशील प्रशासनिक व्यवस्था तथा सामाजिक संगठनों के सामूहिक प्रयासों की जरूरत पर बल दिया ताकि बच्चों के अधिकारों को सुरक्षित रखते हुए बाल विवाह व बाल श्रम जैसी कुरीतियों को जड़ से समाप्त किया जा सके।

लोकसभा स्पीकर के 62 वे जन्म दिवस पर रक्तदान शिविर आयोजित

आयोजित शिविर में रखा 62 यूनिट रक्त संग्रह का लक्ष्य, रक्तदाताओं ने लिया बढचढ कर हिस्सा

हिंदुस्तान एक्सप्रेस

बूंदी। केशोरायपाटन विधानसभा क्षेत्र की सूंनगर ग्राम पंचायत मुख्यालय पर आज लोकसभा स्पीकर ओम बिरला के जन्मदिवस पर आयोजित रक्तदान शिविर में पुलिस उप अधीक्षक आशीष भार्गव लोकसभा स्पीकर के निजी सचिव हरिनंदन पूर्व जिला प्रमुख राकेश बोयत के साथ उपस्थित रहकर रक्तदाताओं का उत्साह वर्धन किया, ग्रामीणों को रक्तदान का महत्व बताया और आयोजको को इस पुण्य कार्य के लिए धन्यवाद दिया । लोकसभा स्पीकर के 62 वे जन्म दिवस पर आयोजित इस रक्तदान शिविर में 62 यूनिट रक्त संग्रह का लक्ष्य रखा गया । कार्यक्रम में केशोरायपाटन भाजपा अध्यक्ष गौरव मालिक पूर्व मंडल अध्यक्ष बाबू सिंह जादौन नगर पालिका उपाध्यक्ष प्रतिनिधि गणेश गुर्जर भी शामिल हुए, आयोजक एवं ग्राम पंचायत के सरपंच महावीर गुर्जर ने सभी अतिथियों एवं रक्तदाताओं का आभार जताया । ओएसडी लोक सभा स्पीकर राजीव दत्ता ने वर्चुअल कार्यक्रम मैं रक्तदान करने वाले रक्तदाताओं का उत्साह वर्धन किया और उपस्थित ग्रामीणों को संबोधित किया ।

स्काउट गाइड का प्रकृति अध्ययन शिविर का हुआ शुभारंभ

हिंदुस्तान एक्सप्रेस

बारां। राजस्थान राज्य भारत स्काउट गाइड जिला बारा के तत्वावधान में राष्ट्रीय ग्रीन कोर योजना के अंतर्गत प्रकृति अध्ययन शिविर का आज जिला मुख्य आयुक्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी गेंदाराम रेगर जिला शिक्षा अधिकारी पीयूष कुमार शर्मा एवं सर्कल ऑर्गनाइजर बूंदी मधु कुमारी के मुख्य आतिथ्य में शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर स्काउट गाइड को इको किट टी-शर्ट कैप व अन्य सामग्री देकर प्रकृति के बारे में बताते हुए जल संरक्षण ऊर्जा संरक्षण के माध्यम से प्रकृति की रक्षा करने का संकल्प दिलाया। सर्किल ऑर्गनाइजर प्रदीप चित्तौड़ा ने प्रकृति को भगवान से जोड़ते हुए बताया कि भ से भूमि ग़ से गगन वा से वायु न से नीर बताते हुए बताया कि पूरी प्रकृति भगवान की देन है। अतः इसकी रक्षा करने से भगवान प्रसन्न होते हैं और हमें आशीर्वाद प्रदान करते हैं। मुख्य जिला आयुक्त गेंदाराम रेगर ने स्काउट गाइड को संकल्प दिलाया कि वह हमेशा प्रकृति की रक्षा करते हुए जल संरक्षण ऊर्जा संरक्षण भू संरक्षण आदि का कार्य करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। सर्किल ऑर्गनाइजर गाइड सुनीता मीणा ने स्काउट गाइड के पांचवें नियम स्काउट पशु पक्षियों का मित्र एवं प्रकृति प्रेमी होता है उसका विश्लेषण करते हुए पौधे लगाने का संकल्प दिलाया। जिला शिक्षा अधिकारी पीयूष कुमार शर्मा ने स्काउट गाइड द्वारा इको क्लब के माध्यम से पूरे जिले में किए कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि वास्तव में स्काउट गाइड संगठन के माध्यम से बालक बालिकाएं प्रकृति को समझ सकते हैं क्योंकि उनके शिविर हमेशा जंगल एवं वन में ही लगाए जाते हैं और प्रकृति का ज्ञान दिया जाता है। अंत में जिला हेड क्वार्टर कमिश्नर भेरूलाल वर्मा ने सभी को एक पर्यावरण गीत सुनकर धन्यवाद ज्ञापित किया। प्रकृति अध्ययन शिविर का संचालन रोवर लीडर महेश सेन एवं कमलेश मीणा संयुक्त रूप से कर रहे हैं। कमलेश मीणा ने बताया कि शिविर में निबंध प्रतियोगिता पोस्टर प्रतियोगिता एवं प्रकृति के नजदीक जाने के लिए भ्रमण आदि के कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। महेश सेन ने ध्वजारोहण कर शिविर प्रारंभ करते हुए दैनिक कार्यक्रम बताया। शिविर में विकास कुमार जाटव लक्ष्य गोयल आदि सहयोग कर रहे हैं।

दो दिवसीय ओरिएंटेशन प्रशिक्षण कार्यक्रम हुआ शुरू

मानसिक रूप से बीमार एवं बौद्धिक रूप से असक्षम व्यक्तियों को दिया जा रहा प्रशिक्षण

हिंदुस्तान एक्सप्रेस

बूंदी। राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के तत्वावधान में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, 4 व 5 दिसम्बर को नालसा (बच्चों को मैत्रीपूर्ण विधिक सेवाएं) स्कीम 2024 एवं नालसा (मानसिक रूप से बीमार व बौद्धिक रूप से असक्षम व्यक्तियों को विधिक सेवाएं) स्कीम 2024 के तहत जिला न्यायक्षेत्र में गठित इकाई के सदस्य गण के लिए दो दिवसीय ओरिएंटेशन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन जा रहा है।

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सचिव सरिता मीणा ने बताया कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन जिला विधिक सेवा प्राधिकरण (जिला एवं सेशन न्यायाधीश) अध्यक्ष अजय शुक्ला द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया गया। इस अवसर पर बून्दी मुख्यालय के न्यायिक अधिकारीगण उपस्थित रहे।

उन्होने बताया कि जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की और से बच्चों के कल्याण के लिए एवं मानसिक रूप से बीमार व बौद्धिक रूप से असक्षम व्यक्तियों के लिए कार्यरत विभिन्न विभागों एवं संस्थाओं के साथ समन्वय स्थापित करते हुए प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में बच्चों व मानसिक रूप से बीमार व बौद्धिक रूप से अक्षम व्यक्तियों के कल्याण के लिए कार्यरत विभिन्न विभाग के अधिकारीगण द्वारा बताया गया कि विधिक सेवा प्राधिकरण से जुड़कर ऐसे बालक जिन्हें विशेष देखरेख एवं सार-संभाल की आवश्यकता है, साथ ही ऐसे बालक व व्यक्ति जिन्हें विधिक सहायता का कोई ज्ञान नहीं है उनकी मनोस्थिति को समझकर उनके कल्याण के लिए विधिक रूप से विभिन्न कार्यक्रम एवं अन्य गतिविधियां आयोजित की जा रही है।

उन्होने बताया कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सचिव, अतिरिक्त जिला पुलिस अधीक्षक, सहायक निदेशक जिला बाल संरक्षण ईकाई , बाल कल्याण समिति सदस्य, सहायक निदेशक महिला अधिकारिता विभाग, उपखण्ड अधिकारी बून्दी, जे.जे.बी. अधिवक्तागण द्वारा नालसा योजनाओं के सफल क्रियान्वयन के सम्बन्ध में उपस्थित यूनिट के सदस्य गण को प्रशिक्षित किया गया।

स्वतंत्रता के 75 वर्ष बाद भी राजनीतिक उपेक्षा का दंश झेल रहा पेशेवर वाल्मीकि समाज- डांगोरिया

बारां। राजस्थान स्वायत्त शासन विभाग द्वारा जारी सफाई कर्मचारी भर्ती प्रकरण में अनुभव प्रमाण -पत्र संलग्नता पोर्टल को लॉक करने तथा नगर निगम जयपुर ग्रेटर एवं नगर निगम जयपुर हैरिटेज में भर्ती निरस्त कर जयपुर की स्थानीय यूनियन संयुक्त वाल्मीम एवं सफाई श्रमिक संघ से संविदा के आधार पर नियुक्ति के आश्वासन के विरोध में बारां नगर परिषद के वाल्मीकि समाज तथा सफाई कर्मचारियों ने कार्य बहिष्कार की घोषणा की है।

मेहत्तर वाल्मीकि संघर्ष समिति के अध्यक्ष तथा राय सफाई कर्मचारी आयोग के पूर्व सदस्य नारायण डांगोरिया ने बताया कि स्वायत्त शासन विभाग ने सफाई कर्मचारी भर्ती विज्ञापन दिनांक 27.9.2024 को जारी किया था जिसमें आवेदक की पात्रता के नगर निकायों में तैनात सक्षम अधिकारी के प्रमाण पत्र को अनिवार्य किया गया था परन्तु राय सरकार द्वारा बढ़ायी गयी आवेदन की अन्तिम तिथि तक भी निकाय कर्मियों ने शीघ्रतापूर्वक अनुभव प्रमाण पत्र नहीं बनायें। परन्तु स्वायत्त शासन विभाग ने दिनांक 20 नवम्बर को ही संशोधन पोर्टल को लॉक कर दिया यद्यपि निकायों के अनुभव प्रमाण -पत्रों को सम्मलित करने के लिए सरकार को विशेष ऑप्शन रखना चाहिए था किन्तु इस प्रकार पोर्टल को बन्द करना

वाल्मीकि समाज के साथ धोखा है। इसके अतिरिक्त जयपुर की स्थानीय यूनियन को आश्वस्त करते हुए स्वायत्त शासन मंत्री झाबरसिंह खर्रा ने स्थानीय विधायक कालीचरण सर्राफ की अनुशंसा पर जयपुर में संविदा के आधार पर भर्ती का समझौता किया है जो नितान्त अतार्किक,असंगत तथा कानून सम्मत नहीं है इसप्रकार एक राय में 2 कानून नहीं हो सकते।

नारायण डांगोरिया ने बताया कि सभी के अनुभव प्रमाण - पत्र सम्मलित हुए बिना किसी अपात्र नहीं माना जा सकता इसलिए सभी अनुभव पत्र सम्मलित करवाने के बाद पात्रता सूची जारी करें तथा बारां नगर परिषद में 2018 में नियुक्त गैर वाल्मीकि सफाई श्रमिकों को तुरन्त सफाई कार्य पर लगाया जावे और गैर वाल्मीकि अनुभव प्रमाण पत्रों की जांच की जावे अन्यथा यह प्रदर्शन तथा हड़ताल अनिश्चित कालीन जारी रहेगी इसकी जिम्मेदारी प्रशासन की होगी।

6 दिसंबर को पंचायत शिक्षक विद्यालय सहायकों का जयपुर कूच

राजस्थान पंचायत शिक्षक विद्यालय सहायक संघ धरना प्रदर्शन 6 दिसंबर शुक्रवार को जयपुर शहीद स्मारक पर

हिंदुस्तान एक्सप्रेस

बूंदी। जिला अध्यक्ष मनोज खटीक ने बताया कि सरकार ने चुनावी घोषणा पत्र में संविदा कर्मी 24000 पंचायत शिक्षक विद्यालय सहायकों को नियमित करने का वादा किया था परंतु सरकार ने इस और कोई कदम नहीं उठाया सरकार का नियमितीकरण की मां की ओर ध्यान आकर्षण करने के लिए प्रदेश भर के समस्त पंचायत शिक्षक विद्यालय सहायक 6 दिसंबर को जयपुर सहित स्मारक पर एकत्रित होंगे और नियमितीकरण की मांग की ओर सरकार का ध्यान आकर्षित करेंगे राजस्थान पंचायत शिक्षक विद्यालय सहायक संघ बूंदी द्वारा आह्वान किया गया है कि जिले की समाज पंचायत शिक्षक विद्यालय सहायक इस धरना प्रदर्शन में अधिक से अधिक संख्या में भाग लेंगे जिलाध्यक्ष मैं कहां की सरकार पंचायत शिक्षक विद्यालय सहायकों के पूर्व के अनुभव की गणना सही तरीके से नहीं कर रही है जिससे 24 हजार संविदा कर्मी नियमितीकरण की दौड़ में सबसे पीछे है जबकि संविदा सेवा नियम 2022 मे आईएएस पैटर्न के अनुसार 9 वर्ष का अनुभव पूर्ण हो रहा है परंतु फिर भी अधिकारी मनमाने तरीके से पंचायत शिक्षक विद्यालय सहायकों को नियमितीकरण के दौड़ से पीछे धकेल रहे हैं जिसे संघ बर्दाश्त नहीं करेगा जिससे प्रदेश भर के 24000 पंचायत शिक्षक विद्यालय सहायकों में सरकार के प्रति आक्रोश व्याप्त है इसी आक्रोश को लेकर जयपुर सहित स्मारक पर प्रदेश भर के पंचायत शिक्षक विद्यालय सहायक एकत्रित होंगे ।

पंचकर्म चिकित्सा शिविर में 927 रोगी लाभान्वित

बूंदी। बालचंदपाडा स्थित राजकीय जिला आयुर्वेद चिकित्सालय के पंचकर्म विशिष्टता केंद्र में संविधान दिवस 26नवंबर से संचालित 9 दिवसीय पंचकर्म चिकित्सा शिविर का आज समापन हुआ। शिविर प्रभारी पंचकर्म विशेषज्ञ डॉ सुनील कुशवाह ने बताया कि इस शिविर में देश के 4 राज्यों के 13 जिलों के कुल 927 रोगी उपचारित हुए।इस शिविर में मेडिकोट्यूरिज्म के तहत फ्रांस, इटली जर्मनी के रोगी भी उपचार से लाभान्वित हुए।इस शिविर में मुख्य रूप से स्पोंडाइलोसिस, ओस्टियोपोरोसिस, ओस्टियोआर्थराइटिस, न्यूरोमस्कुलर डिजिज, वेरिकोज वैन, अक्षितर्पण, जानुधारा, कटिग्रीवाजानूबस्ति, पीपीएस, षष्ठीशालि पिंड स्वेदन आदि शास्त्रीय उपक्रमों के साथ साथ अत्याधुनिक चिकित्सा उपकरणों से उपचार किया गया।

प्रज्ञा पुराण की कथा का शुभारंभ कलश यात्रा से हुआ

हिंदुस्तान एक्सप्रेस

बूंदी। जोगियों का टपरा सरस्वती खेड़ा में गायत्री परिवार शांतिकुंज हरिद्वार के तत्वाधान में गायत्री शक्ति पीठ बूंदी की प्रेरणा से सात दिवसीय प्रज्ञा पुराण की कथा का शुभारंभ कलश यात्रा से हुआ। कलश यात्रा में मुख्य यजमान कैलाश नाथ जोगी प्रज्ञा पुराण की कथा को सिर पर लिए हुए चल रहे थे एवं उनकी धर्मप%ी बसंती बाई सर पर कलश धारण करते हुए चल रही थी। साथ में कई माताएं बहने सर पर कलश धारण करके एवं जागेगी भाई जागेगी नारी शक्ति जागेगी, गुरुदेव गायत्री माता के जय घोष के नारे लगाते हुए चल रहे थे ।तत्पश्चात कलश यात्रा कथा स्थल पर पहुंची ,वहां पर कलशों की आरती उतारी गई। प्रथम दिन की कथा में पंडित लोकेश नारायण शर्मा ने प्रज्ञा पुराण का परिचय देते हुए कहा कि प्रज्ञा पुराण की रचना परम पूज्य गुरुदेव पं.श्रीराम शर्मा आचार्य ने चार वेद एवं अठारह पुराणों के सारांश के रूप में लिखी है। जिसमें सभी जागृत आत्माओं को अपने जीवन को सुधारने एवं साधने के साथ साथ औरों को भी जगाने के प्रेरक प्रसंग है। कथा के दौरान संगीत भजनों की प्रस्तुति बृज सुंदर शर्मा एवं ओमप्रकाश वैष्णव ने दी ।प्रज्ञा पुराण कथा में कजोड़ तंवर सत्यनारायण भील बाबूलाल दैराण ,राधेश्याम जोगी मुकेश दैराण सहित कई सक्रिय कार्यकर्ताओं का योगदान रहा। गायत्री परिवार की वरिष्ठ महिला कार्यकर्ता अन्नपूर्णा चतुर्वेदी ने सबको धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया आरती एवं प्रसाद वितरण के साथ शांति पाठ से प्रथम दिन की कथा का समापन हुआ।

वर्तमान राज्य सरकार का एक वर्ष पूर्ण होने पर होंगे विभिन्न कार्यक्रम

जिला कलक्टर ने तैयारियों को लेकर अधिकारियों की बैठक ली

बारां। वर्तमान राज्य सरकार का एक वर्ष का कार्यकाल पूर्ण होने के उपलक्ष्य में 12 से 17 दिसम्बर तक विभिन्न कार्यक्रम आयोजित होंगे। इस संबंध में जिला कलक्टर रोहिताश्व सिंह तोमर ने बुधवार को अधिकारियों की बैठक लेते हुए सभी कार्यक्रमों के सुव्यवस्थित आयोजन व अधिक से अधिक जन भागीदारी सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। जिला कलक्टर ने मिनी सचिवालय सभागार में आयोजित बैठक में कहा कि 12 दिसम्बर को सुबह 8 बजे जिला मुख्यालय पर रन फॉर विकसित राजस्थान व 11 बजे युवा सम्मेलन एवं रोजगार उत्सव का आयोजन होगा। अगले दिन 13 दिसम्बर को सूचना केन्द्र में जिला स्तरीय प्रदर्शनी का शुभारंभ तथा प्रभारी मंत्री द्वारा प्रेस वार्ता एवं जिला दर्शन पुस्तिका का विमोचन किया जाएगा। इस दौरान पंच गौरव के तहत एक जिला एक खेल, एक जिला एक प्रजाति, एक जिला एक फल, एक जिला एक डेस्टीनेशन की स्टॉल्स का शुभारंभ किया जाएगा। इसी दिन किसान सम्मेलन का आयोजन होगा। इस दौरान मुख्यमंत्री किसान सम्मान निधि की द्वितीय किश्त जारी करने, किसानों को फव्वारा संयंत्रों की स्थापना के लिए अनुदान राशि का हस्तांतरण, फार्म पॉन्ड, पाइपलाइन, तारबंदी, वर्मी कम्पोस्ट, कृषकों को कृषि यंत्रों एवं जैविक खाद के लिए अनुदान, सौर ऊर्जा पंपों की स्वीकृतियां, गोदाम निर्माण, गोपाल क्रेडिट कार्ड योजना, मुख्यमंत्री मंगला पशु बीमा योजना, पशुपालकों के लिए 5 रुपए प्रति लीटर अनुदान डीबीटी के माध्यम से हस्तांतरण, डेयरी बूथ का आवंटन आदि किए जाएंगे। इसी क्रम में 14 दिसम्बर को महिला सम्मेलन का आयोजन होगा। इस दौरान लखपति दीदी का सम्मान, स्वयं सहायता समूहों को राशि का हस्तांतरण, राज सखी पोर्टल का शुभारंभ, नमो ड्रोन दीदी योजना के तहत अनुदान आंगनवाड़ी केन्द्रों पर दूध के लिए मुख्यमंत्री अमृत आहार की शुरुआत, प्रधानमंत्री मातृ वंदन योजना के तहत राशि का हस्तांतरण, लाड़ो प्रोत्साहन योजना के तहत प्रथम किश्त का हस्तांतरण, बालिकाओं को स्कूटी वितरण आदि कार्य होंगे। जबकि 15 दिसम्बर को अन्त्योदय सेवा शिविर आयोजित कर दिव्यांगों को स्कूटी वितरण, मुख्यमंत्री

जिन्स के दाम ऑनलाइन प्लेटफार्म पर किसानों को उपलब्ध करवाये जायेंगे - सी आर चौधरी

राजस्थान किसान आयोग अध्यक्ष का कृषकों से हुआ संवाद, जैविक खेती को दिया जाये बढावा

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

» धौलपुर ... किसान सम्मेलन में उपस्थित किसान

धौलपुर। राजस्थान किसान आयोग अध्यक्ष सी.आर. चौधरी की अध्यक्षता में बुधवार को कृषि एवं संबद्ध विभाग के अधिकारियों के साथ जिला कलेक्ट्रेट सभागार में समीक्षा बैठक आयोजित की गई एवं सिंघारा पैलेस में जिले के कृषकों के साथ कृषक संवाद कार्यक्रम किया गया। समीक्षा बैठक में कृषि विभाग के संयुक्त निदेषक कृषि (विस्तार) ने कृषि विभाग की योजनाओं की प्रगति के बारे में विस्तार से अवगत कराया। अध्यक्ष द्वारा उद्यानिकी, सहकारिता, पशुपालन, बिजली विभाग से संबंधित विभिन्न गतिविधियों के बारे में चर्चा की एवं सहकारिता विभाग को जिले में अक्रियाशील ग्राम सेवा सहकारी समितियों को क्रियाशील करने की दिशा में कार्य करने एवं सभी विभाग के अधिकारियों को कृषक हित में कार्य करने हेतु निर्देशित किया गया। कृषक संवाद कार्यक्रम में जिले के लगभग 300 कृषकों, स्टेकहोल्डरों, कृषक उत्पादक संघ, मत्स्य पालकों एवं विभिन्न विभागों के अधिकारियों ने भाग लिया। कृषक संवाद में अध्यक्ष द्वारा जिले के 25-30 किसानों से संवाद कर उनसे सुझाव प्राप्त किये गये। कृषक संवाद में अध्यक्ष ने कृषकों को जैविक खेती अपनाने पर जोर देते हुए कृषकों को बताया कि जिले में जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिये गोवर्धन जैविक उर्वरक योजना एवं वर्मी कम्पोस्ट इकाई (स्थाई संरचना) योजनान्तर्गत कृषकों के खेतों पर वर्मी कम्पोस्ट इकाईयों का निर्माण करवाया जा रहा है। राइजिंग राजस्थान समिट के तहत कृषकों को रोजगार उपलब्ध करवाया जायेगा।

वर्षा जल को संग्रहण करने के लिये जोत के आकार पर फार्म पौण्डों के आकार में कमी लाई जायेगी। राजस्थान की सभी कृषि उपज मण्डी को ई-कॉमर्स के माध्यम से जिन्स के दाम ऑनलाइन प्लेटफार्म पर किसानों को उपलब्ध करवाये जायेंगे ताकि किसानों को अपनी जिन्स को अधिकतम मूल्य पर विक्रय करने के अधिक विकल्प मिल सकें। कार्यक्रम में भाजपा जिला अध्यक्ष सत्येंद्र पाराशर, अतिरिक्त जिला कलेक्टर धीरेन्द्र सिंह, अतिरिक्त निदेशक कृषि (तिलहन) भरतपुर देशराज सिंह, संयुक्त निदेशक उद्यान भरतपुर योगेश कुमार शर्मा, संयुक्त निदेशक कृषि (विस्तार) जिला परिषद डा0 हब्बल सिंह, सहित कृषक उपस्थित रहे।

जिले में 15 से लगेंगे मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य शिविर

आमजन को मिलेगी गुणवत्तापूर्ण सुलभ चिकित्सा सुविधा

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

धौलपुर। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग द्वारा जिले में 15 दिसंबर से 31 जनवरी 2025 तक मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य शिविरों का आयोजन किया जाएगा। इस संबंध में निदेशालय स्तर से दिशा-निर्देश प्राप्त हो गए हैं। शिविरों का उद्देश्य राज्य के प्रत्येक नागरिक को सर्वोत्तम, सुलभ और गुणवत्तायुक्त चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराना है। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. जयंती लाल मीणा ने बताया शिविर तीन चरणों में आयोजित होंगे। प्रथम चरण में सभी 48 पीएचसी और सभी सीएचसी पर सप्ताह में तीन दिन शिविर लगेंगे। द्वितीय चरण में सभी 6 पंचायत समिति मुख्यालय पर शिविरों का आयोजन होगा। तीसरे चरण में जिला अस्पताल में एक-एक रेफरल शिविर लगेगा। सप्ताह में प्रत्येक सोमवार और गुरूवार को एमसीएचएन दिवस होने और शनिवार-रविवार अवकाश होने के कारण शिविरों का आयोजन नहीं होगा। प्रत्येक शिविर में दो चिकित्सकों के अलावा एक दंत रोग चिकित्सक, एक दंत तकनीशियन, नेत्र रोग विशेषज्ञ, नेत्र सहायक और आयुष चिकित्सक मौजूद रहेंगे। इनके साथ नर्सिंगकर्मी, लैब टैक्नीशियन, लैब सहायक, एलएचवी, एसटीएस, एसटीएलएस, फार्मासिस्ट, एएनएम, सीएचओ, बीपीएम भी मौजूद रहेंगे। इसके अलावा आशा सहयोगिनियों और डोमेस्टिक ब्रीडिंग चैकर्स की सहायता भी ली जाएगी। शिविर स्थल पर 108 या अन्य एंबुलेंस भी मौजूद रहेगी, ताकि समय पर उसका उपयोग किया जा सके। शिविरों में जिला अस्पताल स्तर तक की दवाएं उपलब्ध रहेंगी। शिविरों में गर्भवती महिलाओं की प्रसव पूर्व जांच, संचारी, गैर संचारी रोगों व अन्य रोगों की जांच और उपचार किया जाएगा। इसके अलावा 30 वर्ष से अधिक आयु के शिविर में आने वाले सभी लोगों की ब्लड शुगर, ब्लड प्रेशर और तीन कॉमन कैंसर जांचें होंगी। मोतियाबिंद के मरीजों की पहचान इन शिविरों में की जाएगी और उनके ऑपरेशन भी कराए जाएंगे। जिसके लिए उन्हें रैफर किया जा सकेगा और जरूरत के अनुसार चश्मों का वितरण भी किया जाएगा।

इसके अलावा शिविर में टीबी मरीजों की स्पूटम फोर एएफबी जांच, जरूरत होने पर एक्स-रे कराना, निक्षय पोषण योजना में वंचित व्यक्तियों का बैंक अकाउंट प्राप्त कर पोर्टल पर अपडेट करना, परिवार कल्याण के साधनों का वितरण, कुपोषित बच्चों की पहचान और उपचार, कुष्ठ रोगियों की जांच और उपचार, नियमित टीकाकरण सहित अन्य बीमारियों की जांच और उपचार किया जाएगा।

भारतीय भाषा उत्सव कार्यक्रम के तहत विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

धौलपुर। भारतीय भाषा उत्सव के सचिव, स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली एवं निदेशक माध्यमिक शिक्षा बीकानेर के आदेश की पालना में 4 दिसंबर से 11 दिसंबर को श्रद्धेय महाकवि सुब्रमण्यम भारती की जयंती के उपलक्ष्य में एक सप्ताह तक चलाये जाने वाले उत्सव के आयोजन हेतु निर्णय लिया गया है। इसी क्रम में राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय धौलपुर में मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी धौलपुर दाऊदयाल शर्मा के निर्देशन एवं प्रधानाचार्य अर्चना मिश्रा एवं उप प्राचार्य बिंदुरानी के सानिध्य में प्रभारी भगवान सिंह मीना द्वारा प्रतियोगिता विषय थीम भाषाओं के माध्यम से एकता निर्धारित की गयी है। प्रतियोगिता प्रभारी मीना ने बताया कि इस उत्सव का उद्देश्य हमारे राष्ट्र के सांस्कृतिक ताने-बाने में अंतर्निहित भाषाई विविधता को बढ़ावा देना और उसका जश्न मनाना है। सप्ताह भर चलने वाले इस उत्सव के अन्तर्गत भाषा थीम,आधारित गतिविधियां ,कार्यशालाएं, संस्कृतिक प्रदर्शन के माध्यम से हम अपनी भाषाओं की सुन्दरता और महत्व को प्रदर्शित कर सकेंगे, जो ह्श्वक्क2020 के सिद्धान्तों (मातृभाषा आधारित शिक्षा और बहुभाषावाद) के अनुरूप है, जिसमें युवापीढ़ी को अपनी भाषाई जड़ों को अपनाने के लिए प्रोरित किया गया है।

4 दिसंबर से 11 दिसंबर तक अलग अलग थीम पर आधारित जिनमें विषय भाषा और प्रकृति में सामंजस्य, भाषाओं और प्रौद्योगिकी का सम्मिश्रणः डिजिटल युग में शब्दों की शक्ति, भाषा और साहित्यः अंतर्संबंध, भाषा मेला अभिव्यक्ति की वाक्पटुता वक्तृत्व कौशल गतिविधियां, भाषा और समुदाय एवं भाषा, संस्कृति और हमः एक क्षेत्रीय उत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। प्रभारी व्याख्याता भगवान सिंह मीना ने बताया कि सप्ताह के प्रथम दिन भाषा और प्रकृति में सामंजस्य थीम पर आधारित गीत, निबंध, भाषण, पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन हुआ।

एसपी सुमित मेहरडा ने संस्थाओं को दिये 2 दिन में रजिस्ट्रेशन के निर्देश

नहीं तो होगी कानूनी कार्रवाई

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

धौलपुर। पुलिस अधीक्षक सुमित मेहरडा ने निर्देश दिए है कि जिले के समस्त होटल, रेस्टोरेंट, गेस्ट हाउस व स्वयं सेवी संस्थाओं के मालिकों को आवश्यक रूप से सूचित किया जाता है कि जिन संस्थानों का रजिस्ट्रेशन (सी-फार्म) जिला पुलिस अधीक्षक धौलपुर के अन्तर्गत नहीं करवाया गया है, उन सभी संस्थानों के मालिक अपने जीएसटी सर्टिफिकेट, एफएसएसआई रजिस्ट्रेशन, उद्योग सर्टिफिकेट लेकर 02 दिवस में अपना रजिस्ट्रेशन करवाया जाना सुनिश्चित करें। अन्यथा रजिस्ट्रेशन नहीं कराने पर कानूनी कार्रवाई अमल में लाई जावेगी।

अभिभाषक संघ के वार्षिक चुनाव 13 को

धौलपुर। अभिभाषक संघ धौलपुर का वार्षिक चुनाव कार्यकाल 2024-25 के लिए उच्च न्यायालय के आदेशानुसर 13 दिसंबर 2024 को सम्पन्न कराना है। उक्त चुनाव की प्रक्रिया में महेन्द्र सिंह गुर्जर एडवोकेट को मुख्य निर्वाचन अधिकारी एवं सहायक चुनाव अधिकारी कुसुमाकर गर्ग, जयसिंह परमार, बृजराज सिंह को वर्ष 2024-25 के चुनाव सम्पन्न कराने हेतु नियुक्त अभिभाषक संघ की कार्यकारिणी द्वारा किया जाता है। नामांकन पत्र जमा कराने की तिथि 5 दिसंबर समय सुबह 11 बजे से 7 दिसंबर तक दोपहर 2 बजे तक है। नामांकन पत्रों कीह जांच 7 दिसंबर दोपहर 3 बजे से 4 बजे तक है।, वैद्य नामांकन पत्रों की सूची 7 दिसंबर को समय सायं 4:30 बजे से 5 बजे तक है। अंतिम सूची उम्मीदवार 9 दिसंबर को सायं 4 बजे तक है। मतदान 13 दिसंबर को प्रातः 8 बजे से दोपहर 3:30 बजे होगा। मतगणना 13 दिसंबर को ही सायं 4 बजे से होगी। नामांकन पत्र 5 दिसंबर को सुबह 11 बजे से सायं 4 बजे तक तथा 7 दिसंबर को प्रातः 11 बजे से दोपहर 2 बजे तक प्राप्त किये जा सकते है।

» जयपुर ... राज्य स्तरीय कार्यक्रम में मधु गर्ग को सम्मानित करते मंत्री अविनाश गहलोत, साथ में हैं नेहा गर्ग

मयूरी विद्यालय की निदेशक मधु गर्ग राज्य स्तरीय पुरस्कार में सम्मानित

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। अतर्राष्ट्रीय दिव्यांग दिवस पर मयूरी विद्यालय की निदेशक मधु गर्ग को राज्य स्तर पर आयोजित कार्यक्रम में सम्मानित किया गया है। मधु गर्ग द्वारा दिव्यांग शिक्षा के प्रति उल्लेखनीय कार्य किया गया है। सेठ निनुआराम चेरिटेबल पब्लिक वेलफेयर सोसायटी के अन्तर्गत दिव्यांगों के लिये चल रहे मयूरी विद्यालय में अब तक 200 से अधिक विशेष बच्चे उत्तीर्ण हो चुके हैं। मधु गर्ग को जयपुर के भगवत सिंह मेहता सभागार ओटीएस जयपुर में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री अविनाश गहलोत द्वारा सम्मानित किया गया। इस दौरान उनके साथ पुत्रवधु नेहा गर्ग उपस्थित रहीं।

पीएचसी तसीमो एवं सीएचसी सैंपऊ का किया निरीक्षण

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

धौलपुर। आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग उप निदेशक राजेश कुमार के द्वारा बुधवार को पीएचसी तसीमो एवं सीएचसी सैंपऊ का निरीक्षण किया गया। पीएचसी तसीमां में निरीक्षण के दौरान जन्म-मृत्यु का रजिस्टर सही तरीके से संधारित नही मिला, आमजन के आवेदन प्रपत्र भी नहीं भरवाये जा रहे थे, जन्म प्रमाण पत्र के प्राप्तकर्ता से हस्ताक्षर भी कम पाये गये, डिस्चार्ज टिकट सही तरीके से संधारित नहीं थे तथा उप रजिस्ट्रार व प्रमाण कर्ता के हस्ताक्षर की कमी व प्रमाणित नहीं पाये गये। सीएचसी सैंपऊ में निरीक्षण के दौरान पहचान पोर्टल के प्रचार-प्रसार की कमी व बोर्ड व होर्डिंग का अभाव पाया गया। कार्यालय में जन्म-मृत्यु का रजिस्टर, डिस्चार्ज टिकट एवं फाइलों एवं पत्रावलों का सही तरीके से संधारण नहीं किया जा रहा था। जारी जन्म प्रमाण पत्रों पर आवदेनकर्त्ता के प्राप्ति पर भी हस्ताक्षर का संधारण नही किया जा रहा था एवं जन्म-मृत्यु के आवेदन फॉर्म भी आवेदक से नहीं भरवाये जा रहे थे। उप रजिस्ट्रार के निरीक्षण का अभाव पाया गया। उप निदेशक द्वारा कार्यालय परिसर में प्रचार-प्रसार, पम्पलैट व बोर्ड/होर्डिंग इत्यादि लगाये जाने, समय पर आमजन को प्रमाण पत्र जारी होकर प्राप्त हो इसके लिये ई-साईन के लिये डोंगल की व्यवस्था करने के निर्देश दिये तथा भविष्य में जन्म-मृत्यु के रजिस्ट्रर सही तरीके से संधारित करने, जारी जन्म एवं मृत्यु प्रमाण पत्रों की प्राप्ति पर हस्ताक्षर करवाये जाने एवं डिस्चार्ज के दिनांक ही प्रमाण पत्रों को जारी करने तथा जन्म-मृत्यु के प्रचार-प्रसार इत्यादि करने के निर्देश प्रदान किये गये।

» बाड़ी ... अन्नकूट में प्रसादी ग्रहण करते भक्तजन

सीता-राम विवाह पंचमी पर अन्नकूट का आयोजन

हनुमान मंदिर में सैकड़ो लोगो ने पाई प्रसादी, बसंत पंचमी तक होंगे आयोजन

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

बाड़ी। शहर और ग्रामीण क्षेत्र में दीपावली की गोवर्धन पूजा से शुरू हुए अन्नकूट महोत्सवों का दौर लगातार जारी है। ऐसे में बुधवार को अगहन मास शुक्ल पक्ष सीता-राम विवाह पंचमी पर शहर के होद हनुमान मंदिर पर अन्नकूट महोत्सव का आयोजन किया गया।

जिसमें सबसे चूणामणि लिए बजरंगी हनुमान की प्रतिमा की श्रद्धालुओं द्वारा महाआरती की गई। इसके बाद भोग प्रसादी लगाई गई और अन्नकूट का प्रसाद वितरण शुरू हुआ। जो ग्यारह बजे से लेकर शाम चार बजे तक जारी रहा। मंदिर पर करीब दो हजार लोगों की प्रसादी बनाई गई है। जिसमें मंदिर के भजन मंडल से जुड़ी महिलाओं द्वारा महिलाओं के प्रसादी की वितरण व्यवस्था संभाली है। वहीं पुरुष श्रद्धालुओं द्वारा नागरिकों के लिए अलग से व्यवस्था की है। अन्नकूट महोत्सव को लेकर होद हनुमान मंदिर के पुजारी रामेश्वर दयाल शर्मा ने बताया कि हर वर्ष शरद ऋतु में मंदिर पर श्रद्धालु और भक्तों द्वारा अन्नकूट महोत्सव का आयोजन किया जाता है। इस बार यह आयोजन सीता-राम विवाह पंचमी पर आज हुआ है। जिसमें सबसे पहले हनुमान जी को प्रसादी लगाई है साथ में मंदिर की अन्य देवी देवताओं पर भी प्रसादी चढ़ाई गई। इसके बाद प्रसादी वितरण शुरू हुआ है। जिसमे अब तक सैकड़ो श्रद्धालु अन्नकूट की प्रसादी ग्रहण कर चुके हैं। छोटे बच्चों से लेकर बड़े बुजुर्ग और दूर-दूर से लोग अन्नकूट की प्रसादी पाने मंदिर पहुंच रहे है। अन्नकूट आयोजन को लेकर हालांकि मंदिर से जुड़े सभी भक्तों का सहयोग रहा है लेकिन इसमें विशेष सहयोग सुभाष गोयल, महावीर वैश्य, अतुल, मनोज, राहुल डेयरी एवं वार्ड पार्षद संगीत शर्मा के साथ हरिशंकर मंगल का रहा है।

बृज क्षेत्र में अन्नकूट का विशेष महत्व

धौलपुर जिला भगवान कृष्ण के बृज क्षेत्र से जुड़ा हुआ है। ऐसे में यहां भगवान कृष्ण से जुड़े हर त्योहार और पर्व का विशेष महत्व रहता है। इसीलिए गोवर्धन पूजा से शुरू हुए अन्नकूट महोत्सव लगातार तीन महीनो तक चलते है। इस दौरान विभिन्न मंदिर,संत आश्रम,बगीचियों और धार्मिक स्थलों पर यह आयोजन देखने को मिलते हैं। जिसमें अन्नकूट की प्रसादी पाने के लिए लोग बिन बुलाए आते है।

पुलिस ने पकड़े अवैध खनन करते दो आरोपी, जेसीबी मशीन को किया जप्त

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

बाड़ी। उपखंड की सदर थाना पुलिस ने डीएसटी टीम के सहयोग से कार्रवाई करते हुए अवैध खनन में लिप्त दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है साथ में आरोपियों के पास से जेसीबी मशीन को जप्त किया गया है। पुलिस की यह कार्रवाही भरतपुर आईजी द्वारा चलाए गए विशेष अरावली अभियान के तहत की गई है। जिसमें वन संरक्षण अधिनियम की विभिन्न धाराओं में कार्रवाई की जा रही है। सदर थाना अधिकारी विनोद कुमार ने बताया कि भरतपुर आईजी राहुल प्रकाश द्वारा वन्यजीवो के संरक्षण को लेकर विशेष अरावली अभियान चलाया हुआ है। जिसमें धौलपुर पुलिस अधीक्षक सुमित मेहरड़ा के निर्देशन और बाड़ी एडिशनल एसपी कमल कुमार जागिड़ एवं बाड़ी सीओ महेंद्र कुमार के सुपरविजन में लगातार वन्य क्षेत्र में हो रहे अवैध खनन को लेकर कार्रवाई की जा रही है। जरिए मुखबिर बुधवार को सुबह सूचना मिली कि थाना क्षेत्र के बिजौली के पास दाढ़े में अवैध खनन हो रहा है। उक्त सूचना पर कार्रवाई की गई। जिसमें बिजौली के पास अवैध खनन के स्थान पर जाकर जब पुलिस ने देखा तो कई आरोपी पुलिस को देखते ही भाग गए। मौके से एक जेसीबी मशीन को जप्त किया है। जेसीबी चालक पुष्पेंद्र पुत्र रामचरण गुर्जर निवासी नयापुरा और हेल्पर राजू पुत्र जगदीश गुर्जर निवासी नयापुरा को गिरफ्त में लिया है। दोनों आरोपियों के खिलाफ वन्यजीव संरक्षण अधिनियम के विभिन्न धाराओं में कार्रवाई की जा रही है।

बजरी के ट्रकों की रैकी करने वाले माफिया को किया गिरफ्तार

धौलपुर। भरतपुर रेंज राहुल प्रकाश द्वारा भरतपुर रेंज मे चलाये गये अवैध खनन के खिलाफ अभियान के तहत एवं जिला पुलिस अधीक्षक सुमित मेहरडा के निर्देशानुसार, एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक मनोज शर्मा के पर्यवेक्षण में वांछित बजरी के ट्रकों की रैकी करने वाला बजरी माफिया सौरव गुर्जर पुत्र रामनाथ जाति गुर्जर उम्र 22 साल निवासी भीमकी थाना राजाखेडा जिला धौलपुर हाल दुर्गा कॉलोनी ओडेला रोड थाना निहालगंज जिला धौलपुर को गिरफ्तार किया गया है एवं रैकी में प्रयुक्त स्कार्पियो गाडी नम्बरी आर जे 11 यू ए 5361 रंग काला को जप्त किया गया है।

परख परीक्षा सम्पन्न, 97 कक्षाओं के छात्रों का किया गया मूल्यांकन

धौलपुर। भारत सरकार एनसीईआरटी नई दिल्ली, आरएससीईआरटी उदयपुर एवं राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद जयपुर के संयुक्त तत्वाधान में परख राष्ट्रीय सर्वेक्षण का आयोजन बुधवार को जिले के 91 विद्यालयों की 97 कक्षाओं में किया गया, जिसमें कक्षा 3 में 31, कक्षा 6 में 30 और कक्षा 9 में 36 कक्षाओं के विद्यार्थियों की परख परीक्षा का आयोजन किया गया। डाइट प्रधानाचार्य महेश कुमार मंगल ने बताया कि प्रत्येक विद्यालय में डाइट द्वारा प्रशिक्षित एक-एक फील्ड इन्वेस्टीगेटर की नियुक्ति परख परीक्षा लेने हेतु की गई तथा सीबीएसई द्वारा प्रत्येक विद्यालय में मॉनीटरिंग हेतु एक-एक पर्यवेक्षक की नियुक्ति की गई। इनके सहयोग से पूरे जिले में परख परीक्षा शान्तिपूर्वक सम्पन्न हुई। जिला प्रभारी परख महेश कुमार गोयल ने बताया कि कक्षा 3 के 910 विद्यार्थियों में से सैम्पलिंग में चयनित 689 विद्यार्थियों में से 689 विद्यार्थियों द्वारा परीक्षा दी गई। कक्षा 6 में 1092 विद्यार्थियों में से सैम्पलिंग में चयनित 787 विद्यार्थियों में से 787 विद्यार्थियों द्वारा परीक्षा दी गई। इसी प्रकार कक्षा 9 में 2018 विद्यार्थियों में से सैम्पलिंग में चयनित 1015 विद्यार्थियों में से 1015 विद्यार्थियों द्वारा परीक्षा दी गई।

बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार के विरोध में हिन्दू समाज आज करेगा प्रदर्शन

धौलपुर। बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार के विरोध में देशभर में विरोध प्रदर्शन किए जा रहे हैं। राजस्थान में भी अलग-अलग स्थानों पर विरोध प्रदर्शन किए जा रहे हैं। इसी क्रम में धौलपुर में भी बांग्लादेश में हिंदू सम्माज के ऊपर हो रहे अत्याचार के खिलाफ मानव अधिकार संरक्षण मंच के आह्वान पर हिन्दू समाज गुरुवार 5 दिसम्बर को दोपहर 3 बजे (आज) जिला कलेक्ट्रेट पर प्रदर्शन कर ज्ञापन दिया जाएगा। मानव अधिकार संरक्षण मंच सहित अन्य हिन्दू संगठनों ने इसमें ज्यादा से ज्यादा लोगों के पहुंचने का आह्वान किया है। देश भर में जगह-जगह प्रदर्शन कर रहे हिंदू समाज के लोगों ने सरकार से पड़ौसी देश में प्रताड़ित हो रहे हिंदुओं को बचाने की अपील की है।

विमुक्त, घुमन्तु एवं अर्द्धघुमन्तु सहायता शिविर हरजूपुरा और ढोढी का पुरा खेरली में होगी आयोजित

धौलपुर। जिला परिवीक्षा एवं समाज कल्याण अधिकारी देवेन्द्र सिंह जांगल ने बताया कि जिला कलक्टर के निर्देषानुसार जिले में घुमन्तु समुदाय विमुक्त, घुमन्तु एवं अर्द्ध घुमन्तु के विकास हेतु आवष्यक दस्तावेज जारी करने हेतु सहायता षिविर जिले में आयोजित किये जा रहे हैं। गुरुवार राजीव गांधी सेवा केन्द्र हरजूपुरा बसेड़ी एवं ढोढी का पुरा खेरली में समय प्रातः 10 बजे से सायं 5 बजे तक आयोजित किया जायेगा।

विमुक्त, घुमन्तु एवं अर्द्धघुमन्तु सहायता शिविर में सम्बन्धित समुदाय के व्यक्तियों के आवष्यक दस्तावेज जैसे वोटर आईडी, आधार कार्ड, जनाधार कार्ड, राशनकार्ड, जाति प्रमाण-पत्र, घुमन्तु पहचान प्रमाण पत्र, मूल निवास प्रमाण पत्र एवं योजनाओं का लाभ जैसे आवासहीन व्यक्तियों को निशुल्क भूमि आवंटन, प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत आवंटित भूमि, आवास की व्यवस्था, पालनहार योजना, सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना, निशुल्क दवाई वितरण किट का लाभ प्रदान किया जायेगा। क्षेत्र के समस्त घुमन्तु समुदाय विमुक्त, घुमन्तु एवं अर्द्धघुमन्तु के लोग कैम्पों में उपस्थित होकर आवष्यक दस्तावेज एवं योजनाओं के लाभ से लाभान्वित हो सकते हैं।

स्वामित्वधिकारी प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक **चन्द्रप्रकाश शिवहरे** के लिए मै. गुरूकृपा प्रकाशन प्रेस टीआईटी कॉम्पलैक्स मुरैना से मुद्रित एवं साई स्मार्ट सिटी,नगर परिषद ऑफिस के निकट,मचकुण्ड रोड,धौलपुर(राज.) से प्रकाशित आर.एन.आई. नं. **RAJHIN/2009/27740 संपादक चन्द्रप्रकाश शिवहरे, प्रबंध संपादक जितेन्द्र सिंह रजौरिया।**
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र धौलपुर न्यायालय होगा। फोनः 05642-224444, 224666, 224777 फैक्सः 223324 पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए स्थानीय संपादक जिम्मेवार